फोनः-4103333, 2362400 फैक्सः-0141-2373513 वर्षः 74 संख्याः 358 प्रभात जयपुर, सोमवार 29 जुलाई, 2024 डाक पं.सं. जयपुर सिटी/001/2021-23 पृष्ठ 8 मूल्य 2.75 रु.

जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

Metro

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

ARBIT

From The Eyes Of Marianne

"Few persons can leave Bombay without regret," Marianne wrote. "It's lovely scenery, hospitable society, and its civilized condition cannot but charm..."

Protein That Can Slow MS Damage

Your brain wants you to be curious, not anxious

भारतीय निशानेबाज मनु भाकर ने रविवार को पैरिस ओलंपिक 2024 में इतिहास रचते हुए महिला 10 मीटर एयर पिस्टल स्पर्धा में तीसरे पायदान पर रहते हुये भारत को पहला पदक दिलाया। ओलिंपिक के इतिहास में निशानेबाजी में पदक जीतने वाली मनु पहली भारतीय महिला हैं। उन्होंने फाइनल में मुकाबले में वियतनाम, तुर्की, कोरिया, चीन, और हंगरी के खिलाड़ियों से स्पर्धा करते हुए 221.7 अंक के साथ कांस्य पदक जीता। कोरिया की जिन ने ओलंपिक रिकॉर्ड बनाते हुए 243.2 अंक के साथ स्वर्ण पदक जीता। मनु भाकर ने बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए महिलाओं की 10 मीटर एयर पिस्टल स्पर्धा के फाइनल के लिए क्वालीफाई किया था। वे 580 अंकों के साथ तीसरे स्थान पर रहीं। भाकर ने पहली सीरीज में 97, दूसरी में 97, तीसरी में 98, चौथी में 96, 5वीं में 96 और छठी में 96 अंक हासिल किए थे। इसके अलावा भारतीय निशानेबाज रमिता जिंदल ने शानदार प्रदर्शन करते हुए महिलाओं की 10 मीटर एयर राइफल निशानेबाजी स्पर्धा में फाइनल में जगह बना ली है। मनु भाकर की इस ऐतिहासिक उपलब्धि पर उन्हें देश भर से बधाई और शुभकामना संदेश मिल रहे हैं।

प्र.मंत्री मोदी ने फोन करके मनु भाकर को ब्रॉन्ज़ मैडल जीत की बधाई दी

प्र.मंत्री ने उस दिन का भी जिक्र किया जब पिछले टोक्यो ओलम्पिक में मनु भाकर को ऐन मौके पर राइफल खराब हो जाने के कारण प्रतियोगिता छोड़नी पड़ी थी

- **प्रधानमंत्री मोदी ने शूटर मनु भाकर से आगे कहा, टोक्यो ओलंपिक में राइफल ने तुम्हारे साथ दगा कर दिया था, लेकिन इस बार तुमने सारी कमियों को पूरा कर दिया। इस पर मनु ने कहा कि अभी आगे और मैच भी हैं, उम्मीद रहेगी कि उसमें और अच्छा करूंगी।**
- **राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पैरिस ओलंपिक में महिला 10 मीटर एयर पिस्टल में कांस्य पदक जीतने वाली निशानेबाज मनु भाकर को बधाई देते हुए कहा कि यह और भी खास है क्योंकि वह निशानेबाजी में पदक जीतने वाली देश की पहली महिला है।**

नई दिल्ली, 28 जुलाई। पैरिस ओलम्पिक में स्टार निशानेबाज मनु भाकर ने 10 मीटर एयर पिस्टल इवेंट में ब्रॉन्ज मेडल जीतकर इतिहास रच दिया। इसके बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मनु से फोन पर बात करते हुए उन्हें बधाई दी। साथ ही, पिछले टोक्यो ओलंपिक का भी जिक्र किया, जहां राइफल में खराबी आने की वजह से मनु भाकर को निराश होना पड़ा था। पीएम मोदी ने मनु भाकर से फोन पर बधाई देते हुए कहा, 0.1 से सिल्वर आपका रह गया, लेकिन इसके बाद भी आपने देश का नाम रोशन किया। आपको दो प्रकार की क्रेडिट मिल रहा है। एक तो कांस्य पद मिला और दूसरा आप पहली महिला हैं जो शूटिंग में मेडल लेकर आई हैं। मेरी तरफ से बहुत-बहुत बधाई।

प्रधानमंत्री मोदी ने शूटर मनु भाकर से आगे कहा, टोक्यो ओलंपिक में राइफल ने तुम्हारे साथ दगा कर दिया था, लेकिन इस बार तुमने सारी कमियों को पूरा कर दिया। इस पर मनु ने कहा कि अभी आगे और मैच भी हैं, उम्मीद रहेगी कि उसमें अच्छा करूंगी। इस पर पीएम मोदी ने कहा कि मुझे पूरा विश्वास है कि आप अच्छा करोगी। प्रधानमंत्री ने ओलंपिक पदक विजेता से बातचीत में यह भी पूछा कि बाकी सब साथी प्रसन्न हैं? जिस पर मनु ने कहा कि सब बहुत ठीक हैं और नमस्ते कह रहे हैं आपको। पीएम ने कहा कि हमने कोशिश की है कि वहां खिलाड़ियों को सुविधाएं, कम्फर्ट मिले। इस पर मनु ने कहा कि अभी तो सबकुछ है हमारे पास। सारे प्रयास सफल रहे हैं।

फोन पर हुई बातचीत में प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि आप लोगों की मेहनत रंग लाने वाली है। यह भी पूछा कि क्या घर पर बात की है, जिसपर मनु ने जवाब दिया कि शाम को जब रूम पर जाऊंगी तब करूंगी। पीएम ने कहा कि आपके पिता को काफी खुशी होगी, क्योंकि उन्होंने आपको बहुत प्रोत्साहित किया है। इस पर मनु ने कहा कि हां बिल्कुल मां, पिता और भाई सभी को खुशी होगी।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पेरिस ओलंपिक में महिला 10 मीटर एयर पिस्टल में कांस्य पदक जीतने वाली निशानेबाज मनु भाकर को बधाई देते हुए कहा कि यह और भी खास है क्योंकि वह निशानेबाजी में पदक जीतने वाली देश की पहली महिला है। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने कहा कि उनकी उपलब्धि कई खिलाड़ियों को प्रेरित करेगी। उन्होंने कहा, पेरिस ओलंपिक में 10 मीटर एयर पिस्टल निशानेबाजी स्पर्धा में कांस्य पदक से भारत का पदक तालिका में खाता खोलने के लिए मनु भाकर को हार्दिक बधाई। उन्होंने कहा, वह निशानेबाजी प्रतियोगिता में ओलंपिक पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला हैं। भारत को मनु भाकर पर गर्व है। उनकी उपलब्धि कई खिलाड़ियों और विशेषकर महिलाओं को प्रेरित करेगी।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

हरिभाऊ किसनराव राजस्थान के नये राज्यपाल होंगे

राष्ट्रपति ने नौ राज्यों में नये राज्यपाल नियुक्त किये

हरिभाऊ किसनराव

गुलाब चन्द कटारिया

- **हरिभाऊ का जन्म औरंगाबाद (महाराष्ट्र) के एक मराठा परिवार में हुआ था, वे 1985 में औरंगाबाद (पूर्व) सीट से पहली बार विधायक चुने गये थे।**
- **पूर्व केन्द्रीय मंत्री संतोष कुमार गंगवार को झारखण्ड व रमन डेका को छत्तीसगढ़ का राज्यपाल बनाया गया है।**
- **इसके अलावा मेघालय, तेलंगाना, महाराष्ट्र, असम और मणिपुर में भी नये राज्यपाल नियुक्त किये गये हैं।**

जयपुर/ नई दिल्ली, 28 जुलाई (का.सं.)। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने राजस्थान, तेलंगाना और झारखण्ड सहित 9 राज्यों में राज्यपालों की नियुक्ति की है। हरिभाऊ किसनराव राजस्थान के नए राज्यपाल होंगे।

बता दें कि राजस्थान के राज्यपाल कलराज मिश्र का कार्यकाल पूरा हो गया था। ऐसे में उनकी जगह हरिभाऊ किसनराव को राजस्थान का राज्यपाल नियुक्त किया गया है। हरिभाऊ का जन्म 17 अगस्त 1945 को औरंगाबाद के चित्तेपिम्पलगांव में मराठा परिवार में हुआ था। वह पहली बार 1985 में औरंगाबाद पूर्व सीट से महाराष्ट्र विधानसभा के लिए चुने गए थे। उन्होंने 2014 में फुलंबरी निर्वाचन क्षेत्र से कांग्रेस के कल्याण काले के खिलाफ विधायक चुनाव जीता और उसी निर्वाचन क्षेत्र से 2019 का विधानसभा चुनाव भी जीता। जब भाजपा ने 2014 में महाराष्ट्र में अपनी पहली सरकार बनाई तो उन्हें महाराष्ट्र विधानसभा का अध्यक्ष नियुक्त किया गया। वे महाराष्ट्र सरकार में पूर्व कैबिनेट मंत्री भी रहे हैं। वे महाराष्ट्र सरकार में रोजगार और खाद्य नागरिक आपूर्ति मंत्री भी रह चुके हैं। हरिभाऊ को नाना नाम से भी जाना जाता है। वे 13 साल की उम्र में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक बने। वे गरीब परिवार से आते हैं। आजीविका चलाने के लिए कई सालों तक औरंगाबाद के फुलंबरी में अखबार भी बेचा। अखबार बेचते-बेचते उन्होंने लोगों से जनसंपर्क बनाया। उनकी लोकप्रियता को देख भाजपा ने उन्हें 1985 में पहली बार विधानसभा का टिकट दिया और वह पहली बार विधायक बने। उन्होंने आपातकाल के दौरान भूमिगत नेताओं की भी मदद की थी और इस दौरान वे उन तक अहम सूचनाएं और जानकारियां पहुंचाते थे। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने भाजपा के वरिष्ठ नेता एवं पूर्व केंद्रीय मंत्री संतोष कुमार गंगवार और रमन डेका को राज्यपाल नियुक्त किया है।

राष्ट्रपति भवन की ओर से शनिवार रात को राज्यपालों की नियुक्ति के बारे में जानकारी सार्वजनिक की गई। राष्ट्रपति भवन की ओर से जारी हुई विज्ञप्ति के अनुसार गंगवार को झारखंड का राज्यपाल नियुक्त किया गया है। जिष्णु देव वर्मा को तेलंगाना का राज्यपाल नियुक्त किया गया है। विज्ञप्ति के अनुसार राष्ट्रपति ने रमन डेका को छत्तीसगढ़ का राज्यपाल और सी. एच. विजयशंकर को मेघालय का राज्यपाल नियुक्त किया है।

इसके अलावा तेलंगाना के अतिरिक्त प्रभार के साथ झारखंड के राज्यपाल सी.पी. राधाकृष्णन को महाराष्ट्र का राज्यपाल नियुक्त किया गया है। असम के राज्यपाल गुलाब चंद कटारिया को पंजाब का राज्यपाल नियुक्त किया गया है। कटारिया के पास

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

तमिलनाडू में भाजपा नेता की पीट-पीटकर हत्या

- **राज्य भाजपा प्रमुख के. अन्नामलाई ने इस हत्या को लेकर राज्य में कानून-व्यवस्था पर सवाल उठाए हैं।**

चेन्नई, 28 जुलाई। तमिलनाडू के शिवगंगा में भाजपा नेता की शनिवार रात हत्या कर दी गई। स्टेट बीजेपी चीफ अन्नामलाई ने इसे लेकर राज्य में कानून-व्यवस्था पर सवाल उठाए हैं। साथ ही, इसके लिए सत्तारूढ़ द्रमुक सरकार को जिम्मेदार ठहराया। हालांकि, शिवगंगा के सांसद कार्ति चिदंबरम का कहना है कि इस हत्याकांड को राजनीति से जोड़ना सही नहीं है। बता दें कि सेल्वाकुमार शिवगंगा के भाजपा जिला सचिव थे। उन पर उस समय हमला किया गया जब वह अपने ईंट भट्ठे से बाइक पर घर लौट रहे थे। इसी दौरान कुछ लोगों ने उन्हे घेर लिया और पीट-पीटकर मार डाला।

रिपोर्ट के मुताबिक, भाजपा नेता की हत्या करने के बाद हमलावर उन्हें सड़क किनारे छोड़कर चले गए। राहगीरों ने सेल्वाकुमार को खून से लथपथ देखा। उन्होंने इसकी सूचना पुलिस को दी। इसके बाद अधिकारी

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

वरिष्ठ भाजपा नेता ओमप्रकाश माथुर को सिक्किम का राज्यपाल बनाया गया

राज्यपाल गुलाबचंद कटारिया को पंजाब का राज्यपाल और चंडीगढ़ के प्रशासक की जिम्मेदारी दी गई

ओम प्रकाश माथुर

- **संघ पृष्ठभूमि से जुड़े माथुर प्र.मंत्री मोदी के सबसे करीबी नेताओं में से एक हैं। जब मोदी गुजरात के मुख्यमंत्री थे तो उस समय ओम माथुर को गुजरात का प्रभारी बनाया गया था।**
- **माथुर मूल रूप से पाली जिले के झालना कस्बे के रहने वाले हैं। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा पाली में ही हुई तथा वे उच्च शिक्षा के लिए जयपुर आ गये थे।**

जयपुर, 28 जुलाई (का.सं.)। भाजपा के वरिष्ठ नेता ओमप्रकाश माथुर को भाजपा केंद्रीय नेतृत्व ने अब उन्हें उनकी 36 साल की सक्रिय राजनीति है। इसके साथ ही राजस्थान सरकार के पूर्व गृह मंत्री और भाजपा के दिग्गज नेता गुलाबचंद कटारिया को पंजाब का राज्यपाल बनाया गया है। कटारिया चंडीगढ़ के प्रशासक का पद भी संभालेंगे। इससे पहले उन्हें पिछले साल फरवरी 2023 में असम का राज्यपाल नियुक्त किया गया था।

संघ पृष्ठभूमि से जुड़े माथुर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के करीबी नेताओं में से एक हैं। जब मोदी गुजरात के मुख्यमंत्री थे। उस समय माथुर गुजरात के प्रभारी बनाए गए थे। सियासी जानकारों की मने तो सक्रिय राजनीति से सम्मान के साथ विदाई है। सक्रिय राजनीति के तौर पर उनका अंतिम संगठन का काम विधानसभा चुनावों में छत्तीसगढ़ राज्य के प्रभारी के तौर पर था। छत्तीसगढ़ में भाजपा ने बड़ी जीत दर्ज की थी। इसका श्रेय माथुर को भी

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

कश्मीर में गर्मी का 35 वर्षों का रिकॉर्ड टूटा

- **जम्मू- कश्मीर की राजधानी श्रीनगर में शनिवार रात मौसम का सबसे अधिक न्यूनतम तापमान 24.6 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया।**

श्रीनगर, 28 जुलाई। जम्मू-कश्मीर की राजधानी श्रीनगर में शनिवार रात मौसम का सबसे अधिक न्यूनतम तापमान 24.6 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। मौसम विज्ञान केंद्र के अनुसार, आज का न्यूनतम तापमान सामान्य से 5.8 डिग्री सेल्सियस अधिक था, जो जम्मू-कश्मीर की ग्रीष्मकालीन राजधानी में पिछले 132 वर्षों में तीसरा सबसे अधिक है। यहां 26 जुलाई, 2021 को दूसरा सबसे अधिक न्यूनतम तापमान 24.8 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया था।

कश्मीर में इतना ज्यादा तापमान

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'भाजपा शासित राज्य केन्द्र के साथ समन्वय बनाकर विकास योजनाओं में जन भागीदारी बढ़ाने के लिए काम करें'

प्रधानमंत्री मोदी ने भाजपा मुख्यालय में भाजपाई मुख्यमंत्रियों एवं उप मुख्यमंत्रियों को संबोधित किया

- **भाजपा मुख्यालय में पार्टी अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, गृह मंत्री अमित शाह आदि राष्ट्रीय नेताओं की उपस्थिति में सम्पन्न इस 'मुख्यमंत्री-परिषद' में भाजपा के सभी 13 मुख्यमंत्री और सभी 15 उप-मुख्यमंत्री सम्मिलित हुये।**

नयी दिल्ली, 28 जुलाई (वार्ता) प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भाजपा शासित राज्यों के मुख्यमंत्रियों और उप मुख्यमंत्रियों को नसीहत दी है कि वे केन्द्र के साथ समन्वय बनाकर विकास योजनाओं में जन भागीदारी बढ़ाने के लिए काम करें।

भाजपा के मुख्यमंत्रियों - उप मुख्यमंत्रियों के दो दिन के सम्मेलन के बारे में पार्टी के वरिष्ठ नेता विनय सहस्त्रबुद्धे ने रविवार को संवाददाताओं को बताया, प्रधानमंत्री ने विश्वास जताया है कि केंद्र और राज्य सरकारें अधिक मज़बूती से लोक कल्याण के समन्वित प्रयासों में लगती हैं तो विकसित भारत का लक्ष्य हम निश्चित हासिल कर पायेंगे। विरासत का विकास और विकास की विरासत का निर्माण, इन दोनों का हमारी विकसित भारत की संकल्पना में विशेष महत्व है। इस का भी ध्यान हम सभी को निरंतर रखना चाहिए।

उन्होंने कहा कि मोदी आज भाजपा मुख्यालय में आयोजित भाजपा के सभी मुख्यमंत्री - उपमुख्यमंत्रियों की दो दिवसीय 'मुख्यमंत्री-परिषद' के समापन सत्र में को संबोधित कर रहे थे। पार्टी अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, गृह मंत्री अमित शाह आदि राष्ट्रीय नेताओं की उपस्थिति में सम्पन्न इस 'मुख्यमंत्री-परिषद' में भाजपा के सभी 13 मुख्यमंत्री और सभी 15 उप-मुख्यमंत्री सहभागी हुए।

उन्होंने कहा कि भाजपा के सु-शासन के एजेंडे के तहत इस तरह की मुख्यमंत्री परिषद का आयोजन समय-समय पर होता आया है। वर्तमान वर्ष 2024 का यह दूसरा आयोजन था।

सहस्त्रबुद्धे ने कहा कि प्रधानमंत्री ने देश की अर्थव्यवस्था को पांच ट्रिलियन डॉलर तक पहुँचाने से लेकर विकास कार्यक्रमों में जन-भागीदारी पर और अधिक बल देने की दृष्टि से अन्यान्य प्रयासों की आवश्यकता तथा सोशल मीडिया के विभिन्न प्लेटफॉर्म्स का उपयोग करते हुए लोगों तक सरकारी योजनाओं की पहुँच बढ़ाने के उपायों की भी विस्तार से चर्चा की।

उन्होंने बताया कि कल शाम अपने प्रारंभिक उद्बोधन में नड्डा ने कहा, इन बैठकों के माध्यम से हम सभी तीन विशिष्ट उपलब्धियाँ पाते हैं। सबसे पहले तो हम सभी को प्रधानमंत्री के सुदीर्घ अनुभव का लाभ मिलता है तथा अन्य वरिष्ठ नेताओं का भी मार्गदर्शन प्राप्त होता है।

दूसरा यह कि हम अपने अनुभवों का आदान -प्रदान कर पाते हैं और कुछ नई जानकारी या नया आकलन भी पाते हैं। तीसरी उपलब्धि होती है कि कुछ और अधिक अच्छा करने की हमारी भावना बलवती होती है।

उन्होंने कहा कि इस बैठक में शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने नयी शिक्षा नीति के क्रियान्वयन में राज्य सरकारों की भूमिका की चर्चा की और राज्य सरकारों से जो अपेक्षायें हैं, उनका भी विवरण प्रस्तुत किया, जिस पर विस्तार से चर्चा हुई।

सहस्त्रबुद्धे ने कहा कि इस परिषद के प्रारंभ में कुछ भाजपा शासित राज्यों के द्वारा अपनाये गये नवाचार प्रेरित और सु-शासन केंद्रित प्रयासों के संदर्भ में कुछ चयनित प्रयासों की चर्चा करने वाले प्रस्तुतीकरण भी हुये।

उत्तर प्रदेश की ग्रामीण सचिवालय योजना, असम सरकार का सरकारी रिक्त स्थानों की शीघ्र भर्ती के लिए विशेष अभियान, गुजरात के सौर ऊर्जा निर्माण को गति देने के प्रयास, त्रिपुरा का 'अमार सरकार' कार्यक्रम और बिहार सरकार के अवैध खनन रोकथाम के लिए किए गए प्रयास इत्यादि विशेष उल्लेखनीय प्रस्तुतीकरण इस परिषद में हुए। इस चर्चा के दौरान महाराष्ट्र और हरियाणा के कुछ विशिष्ट प्रकल्पों की भी चर्चा हुई।

'70 प्रतिशत बाघ भारत में

- **प्र.मंत्री मोदी ने कहा कि देश में बाघों की संख्या हर वर्ष बढ़ रही है।**

नयी दिल्ली, 28 जुलाई (वार्ता) प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने विश्व बाघ दिवस की पूर्व संध्या पर कहा है कि भारत में बाघों के संरक्षण के लिए इस समय अभूतपूर्व प्रयास चल रहे हैं और देश में प्रति वर्ष इस वन्य प्राणी की संख्या बढ़ रही है।

मोदी ने रविवार को अपने मासिक रेडियो संबोधन- मन की बात में कहा कि विश्व में 70 प्रतिशत बाघ भारत में पाए जाते हैं और और यह प्राणी भारतीय संस्कृति का अभिन्न हिस्सा रहा है और देश में वनों के आस पास के गावों में लोगों को पता रहता है कि बाघों के साथ ताल मेल बिठा कर कैसे रहना है। उन्होंने इस संदर्भ में रणथम्भौर (राजस्थान), महाराष्ट्र का तादोबा-अंधेरीबाघ अभयारण्य,आंध्र प्रदेश में नल्लामलाई की पहाड़ियों पर रहने वाली 'चेन्चू' जनजाति और पीलीभीत में चल रहे

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विचार बिन्दु

सबसे उत्तम दान यह है कि आदमी को इतना योग्य बना दो कि वह बिना दान के काम चला सके। –तालमुद

साहित्य और राजनीति : यह रिश्ता क्या कहलाता है?

साहित्य और राजनीति के अंत: संबंधों पर प्राय: बात होती है और लगता है कि लोग सीधे-सीधे दो खेमों में बंटे हुए हैं। एक खेमा उनका है जो मानते हैं कि साहित्य को राजनीति से पर्याप्त दूरी बरतनी चाहिए, जबकि दूसरा खेमा उन लोगों का है जो मानते हैं कि साहित्य को (और साहित्यकार को भी) राजनीति में दिलचस्पी रखनी चाहिए। इन दोनों खेमों के अनेक उपभेद भी हो सकते हैं। जो लोग ऐसा मानते हैं कि साहित्य को राजनीति से दूर रहना चाहिए उनमें से अधिकांश राजनीति को बहुत बुरा मानते हैं और इसलिए वे चाहते हैं कि साहित्य जैसी पवित्र चीज़ राजनीति जैसी अपवित्र चीज़ से दूर ही रहे। ऐसा सोचने और चाहने वालों में कुछ लोग बहुत भोले हैं। उन्होंने जो बात कभी सुन ली थी, उसी को वे दुहराए जाते हैं, उस पर विचार करने की, उसे तर्क की कसौटी पर कसने की ज़हमत वे नहीं उठाते हैं। अगर उन्होंने कभी कहीं यह पढ़ या सुन लिया था कि राजनीति धूर्तों का खेल है, तो इस बात को अपने दिल-ओ-दिमाग़ पर खुदवा लिया है। साहित्य कर्म उनके लिए बहुत महान और पवित्र है, जबकि राजनीति बहुत बुरी और गंदी है। कहना अनावश्यक है कि यह अति सामान्यीकरण है।

दूसरी तरफ़ वे लोग हैं जो मानते हैं कि राजनीति हमारे जीवन का एक अनिवार्य अंग है, वह हमारे जीवन के हर पहलू को प्रभावित करती है, अत: साहित्य और साहित्यकार को उससे तनिक भी दूरी बरतने की ज़रूरत नहीं है। इस सोच वाले लोगों में वे आदर्शवादी भी शामिल हैं जो प्रेमचंद के इस कथन को याद करते हैं कि साहित्य राजनीति के आगे चलने वाली मशाल है। प्रेमचंद का पूरा कथन यह है:– ''वह (अर्थात साहित्य) देशभक्ति और राजनीति के पीछे चलने वाली सच्चाई भी नहीं, बल्कि उनके आगे मशाल दिखाती हुई चलने वाली सच्चाई है। पढ़ने-सुनने में यह बात चाहे कितनी भी अच्छी क्यों न लगे, ज़मीनी हक़ीक़त इससे बहुत भिन्न है। लेकिन यह तो मानना ही होगा कि आप भले ही राजनीति से दूरी बरतें, राजनीति आपके जीवन को कभी नहीं छोड़ती है। और इसलिए साहित्य और साहित्यकार का राजनीति से दूरी बरतना तर्क संगत नहीं है।''

अब यहीं एक बात यह आती है कि राजनीति से क्या आशय है, और साहित्य का राजनीति से रिश्ता किस तरह का हो। कहा जा सकता है कि राजनीति दो शब्दों का एक समूह है राज नीति जिसमें राज का मतलब शासन और नीति का मतलब उचित समय और उचित स्थान पर उचित कार्य करने की कला अर्थात् नीति विशेष के द्वारा शासन करना या विशेष उद्देश्य को प्राप्त करना राजनीति है। इसे यों भी कह सकते हैं कि जनता के सामाजिक और आर्थिक स्तर का प्रबंध करना राजनीति है। इस बात को अधिक सरल बनाकर कहें तो शासन में पद प्राप्त करना तथा सरकारी पद का उपयोग करना राजनीति है। सिद्धांतत: राजनीति और सत्ता को अलग करके देखा जाना चाहिए लेकिन व्यवहार में ये एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। व्यावहारिक रूप से राजनीति दलगत भी हो सकती है और निर्दलीय भी। जहां तक साहित्य और राजनीति के अंत: संबंध की बात है साहित्य किसी राजनीतिक विचारधारा या दल या नेता का समर्थन या विरोध करके राजनीति से अपने जुड़ाव का परिचय दे सकता है। अधिक व्यापक रूप से देखें तो किसी विचारधारा विशेष को पसंद कर और अपने साहित्य में उसे रूपायित करके साहित्य राजनीति से अपनी निकटता बताता है। भारत सहित दुनिया भर के साहित्य में मार्क्सवाद से संलग्नता इस बात का बेहतरीन उदाहरण है। हिंदी का प्रगतिशील आंदोलन इसी का भारतीय रूप है। बाद में हिंदी साहित्य की दुनिया में प्रगतिशील लेखक संघ और जनवादी लेखक संघ सीधे-सीधे दो अलग-अलग राजनीतिक दलों से संबद्ध रहे और संबद्ध हैं। इसी तरह अन्य दलों और विचारधाराओं से भी साहित्य का नज़दीकी रिश्ता रहा है। बहुत सारे लेखकों ने ख़ुद चुनाव भी लड़े हैं या कम से कम चुनाव लड़ने वालों का खुलकर समर्थन (या विरोध) किया है। राजनीति से जुड़ाव समर्थन के रूप में ही नहीं, विरोध के रूप में भी देखा जा सकता है। साहित्य की दुनिया में बहुत सारे लोग मार्क्सवाद का विरोध करके भी अपने राजनीतिक होने का परिचय देते हैं।

भारत सहित दुनिया भर के साहित्य में मार्क्सवाद से संलग्नता इस बात का बेहतरीन उदाहरण है। हिंदी का प्रगतिशील आंदोलन इसी का भारतीय रूप है। बाद में हिंदी साहित्य की दुनिया में प्रगतिशील लेखक संघ और जनवादी लेखक संघ सीधे-सीधे दो अलग-अलग राजनीतिक दलों से संबद्ध रहे और संबद्ध हैं। इसी तरह अन्य दलों और विचारधाराओं से भी साहित्य का नज़दीकी रिश्ता रहा है।

समय-समय पर साहित्यकारों ने राजनीतिक घटनाक्रम पर अपनी-अपनी तरह से प्रतिक्रियाएं दी हैं। कभी वे प्रतिक्रियाएं प्रत्यक्ष रही हैं तो कभी उनके साहित्य के माध्यम से सामने आई हैं। हमारे बहुत सारे साहित्यकारों ने समय-समय पर सरकारी सम्मानों को लौटाकर अगर अपनी सीधी प्रतिक्रियाएं दी हैं तो याद कीजिए भारतेंदु हरिश्चंद्र, निराला, नागार्जुन, भगवती चरण वर्मा, रांगेय राघव, भीष्म साहनी जैसे अनगिनत रचनाकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से राजनीतिक घटनाक्रम पर अपनी बात कही है। इधर अशोक वाजपेयी जिस तरह खुलकर राजनीति पर टिप्पणियां कर रहे हैं वह साहित्य और राजनीति की नज़दीकी का एक उम्दा उदाहरण है। और यह सब केवल आधुनिक काल में ही नहीं हुआ है। भक्ति काल या रीति काल में भी आपको ऐसे अनेक उदाहरण मिल जाएंगे। मीरा के काव्य में तुलसी के काव्य में, बिहारी के काव्य में – सब जगह आप राजनीतिक चेतना भी पाते हैं।

यहीं एक बात और कहना ज़रूरी है। बहुत सारे लोग साहित्य और राजनीति की निकटता को अच्छा नहीं मानते हैं। वे साहित्य की स्वायत्तता की बात करते हैं। मुझे लगता है कि यह भी एक नज़रिया है और इसका भी सम्मान किया जाना चाहिए। जिन्हें जगत गति नहीं व्यापती है, उन्हें न व्यापे। लेकिन जैसे वे अपनी सोच के लिए स्वतंत्र हैं वैसे ही उनसे भिन्न सोच वालों का भी सम्मान किया जाना चाहिए। लेकिन यहीं एक और प्रजाति सामने आती है। यह प्रजाति भोली नहीं, चालाक है। जब आप जीवन में या साहित्य में राजनीति पर कोई टिप्पणी करते हैं तो यह प्रजाति उछल कर सामने आती है और आपसे कहती है कि आप तो बहुत महान हैं, पवित्र हैं आप कहां राजनीति के इस दलदल में, कीचड़ में पांव धर रहे हैं। लेकिन यह इस प्रजाति की आपके प्रति सद्भावना नहीं होती है। यह एक बड़ी चालाकी होती है, आपकी आवाज़ को दबाने की। जब आप उनकी चहेती राजनीति की आलोचना करते हैं तभी उनकी ह तथाकथित सद्भावना जागती है। अगर आप भी कीर्तन करें, जैसा वे दिन-रात करते रहते हैं, तब राजनीति कीचड नहीं रह जाती है। तब वह पवित्र हो जाती है। तो इस कौशल से वे आपके प्रतिरोध की आवाज़ को दबाते हैं। पिछले कुछ बरसों में यह काम बहुत संगठित और योजनाबद्ध तरीके से हुआ है। एक राजनीतिक दल विशेष के आईटी सेल और उसके वेतनभोगी कर्मचारियों ने यही नहीं और भी अनेक धत्कर्म किए हैं। इधर एक बदलाव यह आया है कि पहले जो विचारधारा और दल उनके निशाने पर थे, अब वे भी पलटकर उनकी शैली में जवाब देने लगे हैं। इससे वातावरण खराब हुआ है।

निष्कर्ष रूप में, मेरा यह मानना है कि साहित्यकार को अपने परिवेश के प्रति पूरी तरह सजग होना चाहिए और उसे चीज़ों को गहराई में जाकर समझना चाहिए। ऐसा करने के लिए बहुत पढ़ना ज़रूरी होता है। दुर्भाग्य से इधर यह प्रवृत्ति कम होती जा रही है। पढ़ने के नाम पर वॉट्सएप पर आईटी सेल द्वारा उत्पादित और फिर इधर से उधर ठेली गई सामग्री ही बची रह गई है। केवल उसी को पढ़कर जब कोई साहित्य की बात करता है, साहित्यकार होने का दावा करता है तो उस पर गुस्सा भी आता है और दया भी आती है। आज एक पूरी पीढ़ी ऐसी आ गई है जिसे अपने समकालीन यथार्थ से, अपने अतीत से, अपनी परम्पराओं से – किसी भी अर्थपूर्ण बात से कोई लेना-देना नहीं है। उसे जितना रटाया गया है वह उसी का जाप करती रहती है और यह मुगालता पालती है कि वह साहित्य की सेवा कर रही है। बीस-पच्चीस हज़ार रुपये खर्च कर किताब छपवा लेने और सोशल मीडिया पर उसे ख़ुद प्रचारित करने के मौकों ने इस प्रवृत्ति को खूब बढ़ावा दिया है। लेकिन इस तरह किए गए काम को और कुछ भी कहा जाए, साहित्य नहीं कहा जा सकता, और न ऐसा करने वालों को साहित्यकार कहा जा सकता है। साहित्य को अपने समय के प्रति न केवल पूरी तरह से सजग रहना चाहिए, उसमें उसे सार्थक हस्तक्षेप भी करना चाहिए। इतना ज़रूर है कि जब वह हस्तक्षेप साहित्य के माध्यम से हो तो साहित्य की शर्तों के अनुरूप हो, अन्यथा वह लेखन नारा बन कर रह जाता है। हिंदी साहित्य में और अन्य भाषाओं के साहित्य में भी इस बात के उदाहरणों की भी कमी नहीं है।

–अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

८०० किलोमीटर की साइकिल यात्रा पर निकली उदयपुर की डिम्पल भावसार

डिम्पल एक गृहिणी होते हुए भी पशु प्रेम का संदेश लेकर साइकिल से सफर तय करेगी

गौ माता को राष्ट्र माता का दर्जा दिलाने की अनोखी मुहिम को लेकर उदयपुर की डिंपल भावसार ८०० किलोमीटर की साइकिल यात्रा पर रवाना हुई।

उदयपुर,(कासं)। गौ माता को राष्ट्र माता का दर्जा दिलाने की अनोखी मुहिम का शुभारंभ रविवार को उदयपुर से हुआ। इस मुहिम के तहत उदयपुर एनिमल फीड (हैप्पी एंड चॉइस वेलफेयर सोसाइटी) की ओर से यूएएफ संस्थापक डिंपल भावसार उदयपुर से दिल्ली तक की ८०० किलोमीटर की साइकिल यात्रा कर रही है।

यात्रा का शुभारंभ रविवार को आरके सर्कल से मुख्य अतिथि समाजसेवी प्रदीप कुमावत, अर्थ डायग्नोस्टिक के अर्पित, संदीप राठौड़, शिक्षाविद् प्रीति सोगानी, डॉ. कमलेश शर्मा, रिमझिम बख्शी, सोनाली कुमार, पशुप्रेमी सत्यजीत, एडवोकेट निर्मल पंडित, शौर्या जैन, वेणुगोपाल सर की मौजूदगी में हुआ। अतिथियों ने डिंपल को श्रीफल भेंट कर और साइकिल यात्रा को हरी झंडी दिखाकर यात्रा का शुभारंभ किया।

■ डिंपल भावसार की यह यात्रा देश के विभिन्न 20 शहरों से होती हुई दिल्ली तक जाएगी

संस्था के रवि भावसार ने बताया कि यह यात्रा यूएएफ की संस्थापक डिंपल भावसार के द्वारा निकाली जा रही है जो एक गृहिणी होते हुए भी पशु प्रेम का संदेश लेकर साइकिल से ८०० किलोमीटर का सफर तय करेगी ताकि पशुओं पर हो रही क्रुरता को रोका जा सके। यह यात्रा देश के विभिन्न २० शहरों से होती हुई दिल्ली तक जाएगी। डिंपल ने बताया कि यात्रा का उद्देश्य पशुओं और पर्यावरण के प्रति जागरूकता पैदा करना है। इसके तहत मार्ग में आने वाली ५० विद्यालयों के २५ हजार छात्रों को पशु प्रेम के प्रति जागरूकता का संदेश दिया जाएगा। मिराज ग्रुप वह हैप्पी एंड चॉइस वेलफेयर सोसाइटी मिलकर इस मार्ग में दस हजार वृक्षारोपण भी करेंगे। इस मौके पर हैप्पी एंड चॉइस वेलफेयर सोसायटी के संस्थापक रवि भावसार ने बताया कि संस्था द्वारा अन्य कई प्रोजेक्ट जैसे रेबीज मुक्त भारत, मिशन जीरो हंगर, गोपाल वाहिनी, प्रोजेक्ट प्यास, प्रोजेक्ट सुरक्षा, प्रोजेक्ट जीव वाणी, प्रोजेक्ट शिक्षा, प्रोजेक्ट वृक्षारोपण आदि भी चला रही है। इस अवसर पर सोशल मीडिया से लकी, चेष्टा खत्री, भावेश सालवी ने भी इस कार्य की सराहना की और संस्थापक डिंपल भावसार व यूएएफ के पेडल से परिवर्तन यात्रा के सदस्यों का तिलक लगाकर स्वागत किया।

'राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान ने देश दुनिया में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है'

केन्द्रीय वस्त्र मंत्री गिरिराज सिंह ने निफ्ट में नवीन छात्रावासों का उद्घाटन किया

जोधपुर, (कासं)। राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान (निफ्ट) के जोधपुर परिसर में नवीन छात्रावासों का उद्घाटन रविवार को केंद्रीय वस्त्र मंत्री गिरिराज सिंह ने किया। इस दौरान परिसर में नवनिर्मित अटल छात्रावास, सावित्रीबाई फुले छात्रावास और रानी पद्मावती छात्रावास का भी उद्घाटन किया गया।

उद्घाटन समारोह के आयोजित कार्यक्रम में केन्द्रीय वस्त्र मंत्री गिरिराज सिंह ने कहा कि निफ्ट ने आज देश-दुनिया में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है, यहां के विद्यार्थियों ने फैशन की दुनिया में एक अलग छाप छोड़ी है। आगे इंडस्ट्री से जुड़कर निफ्ट को अपने ब्रांड बनाने चाहिए, जिससे पूरे विश्व में भारत का कपड़ा जाना जाये। आज विश्व में भारत की अनोखी पहचान है, पिछले दस सालों में केन्द्र सरकार के कार्यों से भारत विश्व में 5वीं अर्थव्यवस्था बना है, साथ ही हर वर्ग के लिए सरकार की ओर से प्रयास किये गए है। केन्द्रीय वस्त्र मंत्री गिरिराज सिंह ने कहा कि आज इंडस्ट्री और संस्थानों को जुड़कर कार्य करने की जरूरत है। इससे युवाओं को मौके मिलेंगे। उन्होंने कहा प्रदेश में सेल्फ हेल्प ग्रुप के सहयोग से हमारे शिल्पकारों और बुनकरों को जोड़ना चाहिए जिससे हुनरमंद लोगों के प्रयास से देश की तरक्की हो। आज लोगों के खरीदने की क्षमता में इजाफा हुआ है, जिससे लोग देश के उत्पादों को भी खरीदने लगे है, इसमें प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मन की बात कार्यक्रम का बड़ा योगदान है। केन्द्रीय वस्त्र मंत्री गिरिराज सिंह ने कहा कि हम सबको क्लाईमेट चेंज में अपना महत्वपूर्ण योगदान देना चाहिए। केन्द्रीय वस्त्र मंत्री गिरिराज सिंह ने कहा कि युवा दर्जी के लिए रोजगारोन्मुखी पाठ्यक्रम शुरू करना चाहिए, इसमें निफ्ट के विद्यार्थी भी युवाओं से जुड़कर उन्हें प्रशिक्षित करें, जिससे उन्हें आधुनिक तकनीकियों की जानकारी मिल सकें।

■ मंत्री गिरिराज सिंह ने निफ्ट में एक पेड़ मां के नाम अभियान के अंतर्गत पौधरोपण किया

इस मौके पर राज्यसभा सांसद राजेन्द्र गहलोत ने कहा कि भारत सरकार के इस संस्थान ने आज जोधपुर का नाम नेशनल और इंटरनेशनल लेवल पर ला दिया है। साथ ही मुझे जानकारी है कि इस संस्थान के माध्यम से हमारे शिल्पकारों को समय-समय पर प्रशिक्षण दिया जाता रहता है, वो कदम भी सराहनीय है। इसी तरह आगे भी संस्थान प्रदेश के शिल्पकारों, बुनकरों के लिए नवाचार करता रहे।

महानिदेशक आईएएस तनु कश्यप ने बताया कि इन छात्रावासों में 500 से अधिक विद्यार्थियों के रूकने की व्यवस्था होगी। निफ्ट निदेशक प्रो. जीएचएस प्रसाद ने बताया कि सभी कमरों में पूरी तरह से वातानुकूलित सिस्टम, इंटरनेट की सुविधा, इंडोर-आउटडोर खेल सुविधाएं, लिफ्ट सेवा, योग एवं ध्यान कक्ष भी बनाए गए हैं। छात्रावासों में फायर हाइड्रेंट सिस्टम, फायर अलार्म और स्मोक डिटेक्टर प्रत्येक मंजिल पर रखे गए हैं।

केन्द्रीय वस्त्र मंत्री गिरिराज सिंह ने रविवार को निफ्ट जोधपुर में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मन की बात कार्यक्रम का लाइव प्रसारण सुना। इस दौरान निफ्ट के सभी शिक्षक और कर्मचारी मौजूद रहे। इस मौके पर केन्द्रीय वस्त्र मंत्री श्री गिरिराज सिंह ने कहा कि मन की बात कार्यक्रम आज देश के उत्पादों के प्रचार में अहम योगदान दे रहा है। केन्द्रीय वस्त्र मंत्री गिरिराज सिंह ने राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान (निफ्ट) में एक पेड़ मां के नाम अभियान के अंतर्गत पौधरोपण किया और कहा कि आज पौधारोपण करना देशहित में सबसे बड़ा योगदान है। इसे सभी को जिम्मेदारीपूर्वक करना होगा।

सिंचाई विभाग की अनदेखी के चलते एलकेडी माइनर टूटा, खेत जलमग्न हुये

खेत जलमग्न होने से खेतों में खड़ी फसलें, डिग्गियों व बोरवैल नष्ट, लाखों का नुकसान

लूणकरनसर, (निसं)। सिंचाई विभाग की अनदेखी के चलते कंवरसेन लिफ्ट नहर का एलकेडी माइनर चक तीन एलकेडी के पास टूट गया। माइनर टूटने से खेत जलमग्न हो गए। इससे खेतों में खड़ी फसलें, डिग्गियों व बोरवैल नष्ट होने से लाखों का नुकसान हुआ है।

गौरतलब है कि गत 3 जून को चक तीन एलकेडी में माइनर टूट गया था। माइनर में टूटी जगह पर नहर विभाग की ओर से मिट्टी से खानापूर्ति कर बांधा गया तथा प्लास्टिक लगाकर पानी का रोका गया था। विभाग की लापरवाही के चलते शुक्रवार आधी रात के बाद दुबारा उसी जगह से माइनर फिर से टूट गया। माइनर टूटने से खेतों में पानी भरने से चक तीन एलकेडी के काश्तकार प्रभुराम, रामचन्द्र, हेतराम, बलराम, राजेन्द्र, किसनलाल, रूकमा देवी, मघी देवी, गोगा देवी आदि के खेत में बनी सिंचाई की दो डिग्गियों, दो बोरवैल के साथ खेत में खड़ी मूंगफली, ग्वार, बाजरा, जोई, हरा चारा समेत अन्य फसलें नष्ट हो गई। खेत में मिट्टी भरने से जमीन ऊबड़-खाबड़ होने से लाखों का नुकसान हुआ।

■ गत 3 जून को चक तीन एलकेडी में माइनर टूट गया था, नहर विभाग की ओर से मिट्टी से खानापूर्ति कर बांधा गया था तथा प्लास्टिक लगाकर पानी का रोका गया था

माइनर टूटने के बाद सुबह अगले दिन 4 चार बजे किसानों का पता चला। किसान नहर विभाग के सहायक अभियंता व कनिष्ठ अभियंता को फोन करते रहे, लेकिन विभागीय अधिकारी चार-पांच घण्टे बाद मौके पर पहुंचे। इस दौरान किसानों ने उपखण्ड अधिकारी राजेन्द्र कुमार को फोन करने पर टूटे माइनर का पानी बंद करवाया गया। माइनर टूटने की सूचना मिलने के बाद राजस्व तहसीलदार बाबूलाल ने हल्का पटवारी भरत रोझ को मौके पर भेजा। हल्का पटवारी भरत रोझ ने माइनर टूटने से किसानों की डिग्गियों, बोरवैल, फसलों व मिट्टी भरने से हुए नुकसान की रिपोर्ट तहसीलदार को सुपुर्द की है।

माइनर टूटने से खेतों में पानी भरने से हुए नुकसान को लेकर पीड़ित किसान शनिवार को उपखण्ड अधिकारी राजेन्द्र कुमार से मिले और मुआवजा दिलाने की मांग उठाई। किसानों ने बताया कि नहर विभाग की ओर से पटड़ों की मिट्टी हटाने व नहर की मरम्मत में खामी रखने से गत 3 जून को माइनर टूट गया था।

इसके बाद दुबारा नहर को बालू रेत व प्लास्टिक से बंधाई करने से रात को फिर से टूट गया। माइनर से खेत जलमग्न होने से फसलें नष्ट हो गई है तथा पानी की डिग्गियों व बोरवैल नष्ट हो गए। उपखण्ड अधिकारी ने नहर की मरम्मत को लेकर विभागीय अधिकारियों को निर्देश दिए तथा खेतों में हुए नुकसान का आंकलन करवाकर किसानों को मुआवजे का आश्वासन दिया।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 29 जुलाई, 2024

सावन मास, कृष्ण पक्ष, नवमी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2081, भरणी नक्षत्र दिन 10:55 तक, गंड योग सायं 5:55 तक, तैतिल करण प्रात: 6:42 तक, चन्द्रमा आज सायं 4:45 से वृष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कर्क, चन्द्रमा-मेष, मंगल-वृष, बुध-सिंह, गुरू-वृष, शुक्र-कर्क, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज दूसरा सावन वन सोमवार है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 7:33 तक, शुभ 9:13 से 10:53 तक, चर 2:13 से 3:53 तक, लाभ-अमृत 3:53 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 5:53, सूर्यास्त 7:13

मेष
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी।

वृष
घर-गृहस्थी के खर्चों पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है।

मिथुन
आर्थिक/वित्तिय मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी।

कर्क
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

सिंह
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा में परेशानी हो सकती है।

तुला
व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। कारोबारी अनुबंध प्राप्त हो सकते हैं। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा।

वृश्चिक
स्वास्थ्य से संबंधित चिन्ता दूर होगी। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

धनु
घर-परिवार में स्वास्थ्य से संबंधित परेशानी हो सकती है। परिवार में आपसी वाद-विवाद बढ़ सकते हैं। आवश्यक कार्यों के संबंध में दुविधा बनी रहेगी।

मकर
घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ
घर-परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

मीन
आर्थिक/वित्तिय मामलों में संतुलन बना रहेगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा है। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी।

कांग्रेस ने देश को धर्म और जाति के नाम पर बांटने का काम किया : मनोहर लाल खट्टर

केंद्रीय बजट 2024-25 की नीतियों को आमजन तक पहुंचाने के उद्देश्य से रविवार को जयपुर के एक निजी होटल में केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल खट्टर ने पत्रकारवार्ता को संबोधित किया। इस दौरान राज्य के उद्योग मंत्री राज्यवर्धन सिंह राठौड़ और ऊर्जा मंत्री हीरालाल नागर सहित अन्य पदाधिकारी मौजूद थे।

- ‘पीएम मोदी के नेतृत्व में वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने गांव, गरीब, किसान और महिलाओं के विकास को केंद्रित करते हुए तैयार किया बजट’
- ‘केंद्रीय बजट में राजस्थान के विकास के साथ विरासत के विकास पर किया गया फोकस, पर्यटन के क्षेत्र में पूरे भारत में राजस्थान का विशेष दर्जा’

जयपुर। केंद्रीय बजट 2024-25 की जनकल्याणकारी नीतियों को आमजन तक पहुंचाने के उद्देश्य से आज राजधानी जयपुर के एक निजी होटल में केंद्रीय ऊर्जा एवं आवासन और शहरी कार्य मंत्री मनोहर लाल खट्टर ने पत्रकारवार्ता को संबोधित किया। केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल खट्टर ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने गांव, गरीब, किसान और महिलाओं के विकास को केंद्रित करते हुए बजट पेश किया। एक ओर कांग्रेस पार्टी है जिसने देश को जाति और धर्म के नाम पर बांटने का काम किया है, चुनावों में संविधान में आरक्षण समाप्त करने की अफवाह फैलाई, वहीं दूसरी ओर भाजपा है जहां विकास करने के लिए 4 जातियां बांटी गई है। इनमें गांव, गरीब, किसान और महिला को शामिल किया गया है। केंद्र के बजट में गांवों के विकास के साथ गरीब और जरूरतमंद को रोजगार, किसान की आय में बढ़ोतरी के साथ देश की महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने की रूपरेखा तैयार की गई है।

खट्टर ने कहा कि केंद्रीय बजट में इन्फ्राटेक्चर, टूरिज्म, शहरी विकास, उद्योग और ऊर्जा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य की भी रूपरेखा बनाई गई है। इसमें केंद्र सरकार के साथ प्रत्येक राज्य, जिला और गांव की भी भूमिका होगी। केंद्र सरकार का यह बजट देश हित के साथ प्रदेश के हित में और आम लोगों के हित में तो है ही, इसके साथ देश को आत्मनिर्भर बनाने वाला है। बजट में वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विकसित भारत 2047 के विजन का भी ध्यान रखा है। देश की 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था में से राजस्थान की 350 बिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था अगले पांच सालों में होनी है। केंद्र ने राजस्थान में विशेष रूप से इन्फ्राटेक्चर, उद्योग, ऊर्जा और पर्यटन के विकास पर फोकस किया है।

खट्टर ने कहा कि केंद्रीय बजट राजस्थान में विकास के साथ विरासत के विकास का भी ध्यान रखा गया है। राजस्थान पर्यटन के क्षेत्र में पूरे भारत में विशेष स्थान रखता है। पर्यटन के क्षेत्र में पूरे देश की जीडीपी का 5 फीसदी राजस्थान कवर करता है। केंद्रीय बजट में उद्योग पर निवेश को ध्यान में रखते हुए 12 नए औद्योगिक पार्क डवलप करने की घोषणा की है, इनमें से 1 राजस्थान के जोधपुर-पाली मारवाड पार्क भी है। इसके डवलपमेंट से प्रदेश में रोजगार का सजृन होगा। केंद्र सरकार ने बजट में कई योजनाएं शुरू की है जिनसे प्रत्येक परिवार को रोजगार मिल सकें। युवाओं को कौशल प्रशिक्षण, शिल्पकारों, कारीगरों और गरीब लोगों को पीएम रोजगार योजना, गरीब कल्याण अन्न योजना और पीएम सूर्यघर मुफ्त बिजली योजना जैसी कई योजनाएं चलाई जा रही है। बजट में रेलवे के लिए 9 हजार करोड़ से अधिक का ग्रांट जारी किया गया।

प्रेसवार्ता के दौरान मंच पर राजस्थान के उद्योग मंत्री कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौड़, ऊर्जा मंत्री हीरालाल नागर, जयपुर सांसद मंजु शर्मा, भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष मुकेश दाधीच और भाजपा प्रदेश मीडिया संयोजक प्रमोद वशिष्ठ उपस्थित रहें।

शिवमय हुई छोटी काशी : सावन के पहले रविवार को शिव भक्त गलता तीर्थ से कावड़ में जल भर कर अपने यहाँ स्थित शिवालयों में अभिषेक करने के लिए रवाना हुए। बम बम भोले के जयकारों के साथ कावड़ यात्री गलता से डमरू, ढ़ोल और ताशे बजाते हुए निकले। फ़ोटो : दिनेश भारद्वाज

केंद्रीय बजट को लेकर विपक्ष भ्रम फैलाने का कार्य कर रहा है : खट्टर

जयपुर। केंद्रीय ऊर्जा और आवासन एंव शहरी कार्य मंत्री मनोहर लाल खट्टर के नेतृत्व में आज भाजपा प्रदेश कार्यालय में केंद्रीय बजट पर परिचर्चा आयोजित की गई। बजट पर परिचर्चा के दौरान केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल खट्टर ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी देश को विकसित राष्ट्र बनाने के लिए प्रयासरत है। इसके लिए पीएम मोदी ने देश की आजादी के 75 साल के बाद के 25 साल को अमृत काल बताते हुए देश की उन्नित और विकास के लिए कार्य शुरू कर दिया है। विकसित भारत के सपने को पूरा करने के लिए महिला, युवा, किसान और गरीब के विकास के लिए इस बार बजट में नई पहल की गई है। भाजपा की नीति भी अन्तोदय की है। समाज और देश का विकास करना है तो अंतिम पंक्ति का उदय करना है। फिर चाहे वो अन्तोदय परिवार का हो, समाज का हो, जिले का हो या फिर देश का हो। हमें सब का साथ और सब का विकास की नीति पर कार्य करना होगा।

खट्टर ने कहा कि केंद्रीय बजट को लेकर विपक्ष भ्रम फैलाने का कार्य कर रहा है। जनता के बीच कांग्रेसी नेताओं द्वारा सिर्फ झूठ और भ्रम फैलाया जा रहा है यह राजनैतिक बेईमानी है। कांग्रेस के झूठ का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि कांग्रेस ने 40 करोड लोगों को सालाना 1 लाख रूपए देने का वादा किया। इस हिसाब से कुल 40 लाख करोड़ रुपए बांटे जाते जबकि देश का बजट ही 48 लाख करोड़ रूपए का है तो यह संभव ही नहीं हो सकता था। यह कांग्रेस का आंकड़ों का झूठ है जो फैलाया गया। ऐसे में भाजपा के प्रत्येक कार्यकर्ता को कांग्रेस के झूठ को उजागर करते हुए केंद्र सरकार की नीति और रीति को जन जन तक पहुंचाना चाहिए।

बजट पर परिचर्चा के दौरान कैबिनेट मंत्री राज्यवर्धन सिंह राठौड़ ने बजट को दूरगामी सोच वाला बताते हुए कहा कि केंद्र सरकार का बजट विकसित भारत 2047 के सपने को पूरा करने वाला है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने पहले कार्यकाल में सिस्टम को सही किया, दूसरे कार्यकाल में विरासत और विकास पर कार्य हुआ और तीसरे कार्यकाल में स्पीड और स्केल पर कार्य किया जाएगा।

बजट पर परिचर्चा कार्यक्रम में जयपुर सांसद मंजु शर्मा ने केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल खट्टर का आभार व्यक्त किया। इस दौरान ऊर्जा मंत्री हीरालाल नागर, प्रदेश उपाध्यक्ष नारायण पंचारिया, मुकेश दाधीच, राजस्थान धरोहर प्राधिकरण के अध्यक्ष ओंकार सिंह लखावत, मेयर सौम्या गुर्जर, भाजपा प्रदेश मंत्री भूपेंद्र सैनी, भाजपा के प्रदेश मीडिया संयोजक प्रमोद वशिष्ठ, भाजपा प्रदेश कार्यालय प्रभारी मुकेश पारीक सहित भाजपा पदाधिकारी एंव समाज के विभिन्न वर्गों से आए प्रबुद्धजन मौजूद रहे।

‘कांग्रेस ओ.पी.एस. व संविधान पर राजनीति कर रही है’

जयपुर। देश के ऊर्जा एवं शहरी विकास मंत्री मनोहर लाल खट्टर का कहना है कि वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने जो बजट पेश किया है, उसका राजस्थान को भी फायदा मिलेगा। उन्होंने कांग्रेस पर पुरानी पेंशन स्कीम (ओपीएस) और संविधान के नाम पर राजनीति करने का आरोप लगाया है। साथ ही कहा कि राजस्थान और हरियाणा के बीच हुए यमुना जल समझौते के तहत राजस्थान को अतिरिक्त पानी मिलेगा। दरअसल, हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री और मोदी सरकार के मंत्री मनोहर लाल खट्टर रविवार को जयपुर पहुंचे।

पत्रकारों से बातचीत में खट्टर ने कहा कि बजट में हार राज्य और सभी वर्गों को तवज्जो दी गई है। खट्टर ने कहा कि हरियाणा में आगामी दिनों में होने वाले चुनाव में भाजपा सरकार बनाएगी। यमुना जल समझौते के सवाल पर उन्होंने कहा कि 24 हजार क्यूसेक पानी के अलावा जो अतिरिक्त पानी होगा। वह पानी अन्य राज्यों को सप्लाई किया जाएगा। बारिश में जो अतिरिक्त पानी आता है, उसे राजस्थान में स्टोर करके यहां काम में लिया जा सकेगा। साथ ही एक सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि पुरानी पेंशन स्कीम (ओपीएस) को लेकर कांग्रेस राजनीति कर रही है। उन्होंने संविधान को लेकर भी कांग्रेस पर भ्रम फैलाने का आरोप लगाया और कहा कि जब देश में आपातकाल लागू किया गया था, तो क्या वह संविधान के अनुरूप था।

लाल खट्टर ने कहा कि हरियाणा में भले ही भाजपा की सीटें कम हुई हैं, लेकिन वोट प्रतिशत कम होने के बजाए बढ़े ही हैं। वे बोले, 2014 में भाजपा का वोट शेयर 34 फीसदी था, तब 47 सीटें आई थी, जबकि 2019 में वोट शेयर बढ़कर 37 फीसदी हुआ, लेकिन सीट 40 ही रह गई। एक सवाल के जवाब में उन्होंने यह भी कहा कि मुख्यमंत्री के तौर पर नए व्यक्ति को मौका देने के लिए उन्होंने ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से आग्रह किया था।

वंशावली लेखकों की बढ़ती दूरियों को कम करने का प्रयास करना होगा : अरूणकांत

पाथेय कण के सभागार में आयोजित अखिल भारतीय वंशावली संरक्षण एवं संवर्द्धन संस्थान के स्थापना दिवस समारोह में वंशावली लेखकों को सम्मानित किया गया।

- वंशावली एकेडमी राजस्थान में फिर से होगी शुरू : सराफ

जयपुर। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक एवं अखिल भारतीय धर्म जागरण सह प्रमुख अरूणकांत ने कहा कि पुराने काल से ही वंशावली की परम्परा हमारे देश में चली आ रही है लेकिन आज वंशावली लेखकों में दूरियां बढ़ती जा रही हैं, जिसको हम सब मिलकर कम करने का प्रयास करेंगे।

वे रविवार को पाथेय कण के सभागार में आयोजित अखिल भारतीय वंशावली संरक्षण एवं संवर्द्धन संस्थान के स्थापना दिवस समारोह को मुख्य वक्ता के रूप में संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि संस्थान के कार्यकर्ताओं को जमीनी स्तर पर जुड़कर वंशावली को बेहतर करने का काम करना होगा, जिससे कि सभी लोगों को अपने वंश के बारे में विस्तार से जानकारी मिल सके, अभी इस समय पूरे देश में 4200 वंशावली लिखने वाले वंशलेखकों के नामों की वंशावली दिग्दर्शिका संस्थान के पास है, जिसमें राजस्थान से सबसे अधिक 2500 वंशलेखकों का डाटा कलेक्शन है, लेकिन अभी पूरे देश के वंशलेखकों का डाटा संस्थान के पास नहीं है, जिसको एकत्रित करने का काम तेजी से किया जा रहा है, जल्द ही सभी वंशलेखकों का डाटा संस्थान के पास उपलब्ध होगा।

अरूणकांत ने कहा कि संस्थान अब दो समारोह के माध्यम से देशभर के वंशलेखकों को एक साथ जोड़ने का काम करने जा रहा है, जिससे वंशलेखकों का तथ्यात्मक डेटा एक जगह एकत्रित हो जायेगा, उन्होंने कहा कि संस्थान का स्थापना दिवस समारोह आगामी दिनों से जिले स्तर पर आयोजित होगा, इसके साथ ही सरस्वती पूजन कार्यक्रम बसन्त पंचमी पर किया जायेगा, इन दोनों समारोह में वंशलेखकों को जोड़ने का काम होगा।

समारोह के मुख्य अतिथि पूर्व केबिनेट मंत्री एवं विधायक कालीचरण सराफ ने कहा कि वंशावली लेखन का काम सतयुग, द्वापरयुग के बाद आज कलयुग में भी हो रहा है और आज इसको डीजिटल माध्यम से जोड़ते हुए प्रभावी बनाये जाने की जरूरत है।

समारोह के विशिष्ट अतिथि पूर्व सांसद रामचरण बोहरा ने कहा कि आज का युग डीजिटल का है, जिसका उपयोग वंशावलियों को संरक्षित करने के लिए किया जाना चाहिए।

अखिल भारतीय वंशावली संरक्षण एवं संवर्द्धन संस्थान के राष्ट्रीय अध्यक्ष परमेश्वर ब्रह्मभट्ट ने संस्थान के बारे में प्रस्तावना प्रस्तुत करते हुए कहा कि वंशावली के माध्यम से हिन्दू समाज को टूटने से बचाया जा सकता है और यह काम संस्थान बखुबी निभा रहा है, जिसके माध्यम से लोगों को एक-दूसरे से ओर अपनो से अपने को जोड़ने का काम किया जा रहा है।

समारोह में अतिथियों ने वंशावली लेखन करने वाले सत्यनारायण जागा, नवरंग लाल जागा, महावीर सिंह, रूप सिंह राव सहित युवा वंशावली लेखकों का का सम्मान किया गया।

इस मौके पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक माणक चन्द और जन कल्याण संस्थान के अध्यक्ष बाबुलाल शर्मा का विशिष्ट सम्मान किया गया। कार्यक्रम में गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय के गांधीवादी विचारक एवं शांति अध्ययन विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. जनक सिंह मीणा ने अतिथियों को भारत के स्वातन्त्र समर के जनजातीय नायकों की वीरगाथा नामक पुस्तक भेंट की।

युवा कांग्रेस को पदाधिकारियों के लिये 700 नए आवेदन मिले

जयपुर, (का.प्र.)। राजस्थान युवा कांग्रेस में बड़े बदलाव के तहत 700 नए आवेदनकर्ताओं में से प्रदेश महासचिव, प्रदेश सचिव और विधानसभा अध्यक्षों का चयन किया जाएगा। पिछले दिनों पूरे प्रदेश में निष्क्रिय पदाधिकारी को पदों से हटा दिया गया था। अब उन पदों के लिए नए आवेदन लिए गए हैं।

इस प्रक्रिया को आगे बढ़ाने के लिए राजस्थान युवा कांग्रेस ने इंदिरा गांधी भवन में मंथन बैठक का आयोजन किया। बैठक में प्रदेश महासचिव, प्रदेश सचिव, प्रदेश समन्वयक, विधानसभा अध्यक्ष, विधानसभा कार्यकारी अध्यक्ष पद के लिए प्रदेशअध्यक्ष विधायक अभिमन्यु पूनिया और कार्यकारी अध्यक्ष सुधीन्द्र मूंड तथा यशवीर सूरा की उपस्थिति में आवेदन लिए गए। इन सभी पदों के लिए करीब 700 आवेदन आए हैं। इन आवेदनों पर प्रदेशअध्यक्ष और कार्यकारी अध्यक्ष मंथन करेंगे और मेरिट के आधार पर रिपोर्ट तैयार कर राष्ट्रीय प्रभारी मोहम्मद शाहिद और सह प्रभारी अरुणा महाजन को सौंपेंगे। इसके बाद प्रदेश से लेकर विधानसभा स्तर तक एक नए लोगों को युवा कांग्रेस में जिम्मेदारी मिलेगी।

नए आवेदनों में से 79 नए विधानसभा अध्यक्ष, 66 कार्यकारी विधानसभा अध्यक्ष समेत बाकी को प्रदेश कार्यकारिणी में शामिल किया जाएगा। इसके साथ ही आज इस बैठक में युवा कांग्रेस की ओर से आने वाले दिनों में राजस्थान सरकार को किस तरह घेरा जाएगा। इस बारे में विचार किया गया।

राजस्थान से प्रतिनिधित्व के लिये केन्द्र का आभार जताया

जयपुर। राजस्थान के दो नेता गुलाब चंद कटारिया को पंजाब का राज्यपाल व चंडीगढ़ केन्द्रशासित का प्रशासक तथा ओम प्रकाश माथुर को सिक्किम के राज्यपाल बनाये जाने की घोषणा पर भाजपा व्यवसायिक प्रकोष्ठ के प्रदेश संयोजक राजू मंगोड़ीवाला ने हर्ष व्यक्त करते हुये राष्ट्रपति का आभार जताया है। प्रदेश संयोजक राजू मंगोड़ीवाला ने कहा कि पूर्व में भी उपराष्ट्रपति जगदीप धनकड़ व लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला जैसे महत्वपूर्ण पद व केन्द्र सरकार में चार केन्द्रीय मंत्री केंद्रीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री भूपेन्द्र यादव, संस्कृति व पर्यटन मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत,,कानून व न्याय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल व केन्द्रीय किसान कल्याण राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी की भागीदारी से राजस्थान को मज़बूती प्रदान की है।

मनु भाकर को कांस्य पदक जीतने पर बधाई दी

जयपुर। राज्यपाल कलराज मिश्र, मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा और विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने पेरिस ओलंपिक में मनु भाकर को 10 मीटर महिला एयर पिस्टल शूटिंग में कांस्य पदक जीतने पर बधाई दी है।

उन्होंने कहा कि भाकर का शानदार प्रदर्शन के जरिए कांस्य पदक जीतना पूरे देश के लिए ऐतिहासिक पल है। साथ ही, निशानेबाजी में ओलंपिक पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला का गौरव हासिल करना भी उनकी सफलता को विशिष्ट बनाता है। इससे देश की नारी शक्ति को खेलों में अपनी प्रतिभा दिखाने की प्रेरणा मिलेगी।

प्रेस क्लब गोठ का आयोजन

जयपुर। पिंकसिटी प्रेस क्लब की पारिवारिक गोठ का रविवार को आयोजन हुआ। प्राकृतिक सौन्दर्य के बीच सुशोभित श्री निवास के बालाजी पवित्र स्थल पर रविवार को क्लब परिवार के साथ मालवीय नगर विधायक कालीचरण सराफ एवं हवा महल विधायक बाल मुकुन्द आचार्य ने गोठ में भाग लिया।

दो दिन बिना सोए डॉक्टर्स की मेहनत रंग लाई

- बाड़मेर निवासी मरीज के हार्ट ट्रांसप्लांट कर नया जीवन दिया

जयपुर। प्रदेश के सबसे बड़े एसएमएस अस्पताल ने एक बार फिर चिकित्सा के क्षेत्र में नया इतिहास रच दिया है। डॉक्टरों ने दो दिन बिना सोए कड़ी मेहनत के बाद बाड़मेर निवासी पूजा सैन का सफल हार्ट ट्रांसप्लांट कर नया जीवनदान दिया। उनके हार्ट ट्रांसप्लांट की जटिल प्रक्रिया ने पूरे राज्य में चिकित्सा सेवाओं के उच्चतम स्तर का उदाहरण पेश किया है।

प्रदेश के चिकित्सकों ने बाड़मेर निवासी पूजा सैन को नया जीवनदान दिया है। पूजा सैन की सफल हार्ट सर्जरी एसएमएस अस्पताल में की गई। परिजनों से मिली जानकारी के अनुसार पूजा सैन का हार्ट पूरी तरह डैमेज हो चुका था, जिसके बाद चिकित्सकों ने परिजनों को हार्ट ट्रांसप्लाट करने की सलाह दी थी। ऐसे में डॉक्टर्स की सलाह पर परिजनों ने पूजा के हार्ट ट्रांसप्लाट के लिए अनुमति दी।

परिजनों की अनुमति के बाद एसएमएस कॉलेज के प्राचार्य दीपक माहेश्वरी ने कागजी कार्रवाई पूरी कर जयपुर की टीम सुबह जोधपुर के लिए रवाना हुई। जिसके बाद हार्ट को जोधपुर से जयपुर एयरपोर्ट लाया गया और फिर पुलिस की मदद से जयपुर एयरपोर्ट से ग्रीन कॉरिडोर बनाकर एसएमएस अस्पताल तक लाया गया।

डॉ. राजकुमार यादव की टीम ने बांगड़ परिसर में इस जटिल सर्जरी को सफल बनाया। सर्जरी के सफल होने के बाद पूजा की हालत स्थिर बताई जा रही है और फिलहाल डॉक्टर्स की देखरेख में मरीज को वेंटिलेटर पर रखा गया है। डॉ राजकुमार यादव का कहना है कि ये उपलब्धि पूरे अस्पताल की है और राज्य के लिए ये गर्व की बात है। वहीं, मरीज पूजा की सफल हार्ट सर्जरी के बाद एसएमएस मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य डॉ दीपक माहेश्वरी भी बांगड़ परिसर पहुंचे, जहां उन्होंने हार्ट प्रत्यारोपण वार्ड में जाकर मरीज की स्थिति जानी और सर्जरी की सफलता पर डॉक्टर्स की टीम को बधाई भी दी।

गौवंश पर तेजाब फेंका, मामला दर्ज

जयपुर। बस्सी थाना इलाके में गौवंश पर तेजाब फेंक कर जलाने का मामला सामने आया है। तेजाब से जली गायों का हिंगोनिया गौशाला में उपचार किया जा रहा है। इस मामले में पुलिस ने कुछ संदिग्ध युवकों को पकड़कर उनसे पूछताछ कर रही है। घटना के सम्बंध में पूर्व मुख्यमंत्री जगन्नाथ पहाड़िया की बहू ने मामला दर्ज करवाया है। घटना दौलतपुरा गांव की है। घटना के बाद से ग्रामीणों में आक्रोश व्याप्त है।

पुलिस के अनुसार पूर्व मुख्यमंत्री जगन्नाथ पहाड़िया की बहू आभा पहाड़िया ग्राम दौलतपुरा में अपनी जमीन की देखरेख के लिए गई थी। वहां पर खेत में जली हुई गायों को देख पुलिस और नगर निगम को सूचना दी। इसके बाद एनजीओ की मदद से गायों को हिंगोनिया गौशाल में शिफ्ट कराया गया। आभा पहाड़िया ने बताया कि वह अपने पुत्र वरुण पहाड़िया और वैभव पहाड़िया के साथ खुद की जमीन को देखने के लिए गांव आई हुई थी। गांव में हमने देखा एक गाय की चमड़ी जली हुई थी। चमड़ी पर कीड़े पड़े हुए थे। तब हमने अपने गार्ड कमलेश से मालुम किया तो उसने बताया कि बहुत सारी गायों पर गांव वालों ने तेजाब फेंक दिया है। इससे उनके घाव हो गए हैं। मामले की सूचना पर हैरिटेज मेयर मुनेश गुर्जर ने एम्बुलेंस उपलब्ध करवाई। गांव वालों से पूछताछ करने पर पता चला कि हनुमान मीणा व उसके साथियों ने गाय पर तेजाब फेंका है। इस पर बस्सी थाने में नामजद रिपोर्ट दर्ज कराई गई है।

उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी और प्रेमचंद बैरवा ने भाजपा के नवनियुक्त प्रदेश अध्यक्ष व राज्यसभा सांसद मदन राठौड़ से मुलाकात कर उनको शुभकामनाएं दी।

नम्बर मिलाइए
9587884433
सिर्फ एक फोन कॉल पर विज्ञापन घर बैठे बुक करायें।

नाम परिवर्तन

मैं अपना नाम नेहा खरे शर्मा से बदलकर नेहा शर्मा पत्नी श्री नरेन्द्र दत्त शर्मा, निवासी 79/17, शिप्रा पथ, मानसरोवर, जयपुर, राजस्थान रख रही हूँ भविष्य में मुझे मेरे उक्त नये नाम से ही जाना पहचाना जावे।

मेरा क्रमांक 16020412L रैंक L/NK नाम रणजीत सिंह निवासी- ग्राम- कुरैठा पोस्ट- कुरैठा, तहसील- पोरसा, जिला- मुरैना म.प्र. 476115 आर्मी सर्विस रिकॉर्ड में मेरी पत्नी का नाम अनुपम कुश्वाह गलत दर्ज है सही नाम अनुपम है। Vide Affidavit BM-990165 Date- 21.06.2024

आम-सूचना हर आम व खास को सूचित किया जाता है कि मेरे अभिभाष्य श्री ओम प्रकाश जैन पुत्र स्वर्गीय श्री मनोहर लाल जैन के निर्देशानुसार प्लाट नं0-161, राजीव नगर, विद्याधर नगर, जयपुर के सम्बन्ध में मुख्तयारनामा आम वसीयत नाम व अन्य खाली कागजात पर मेरे अभिभाष्य के हस्ताक्षर श्री प्रशान्त व्यास पुत्र भानुकुमार व्यास नि0-ताड़केश्वर मन्दिर, चौड़ा रास्ता, जयपुर द्वारा बरगलाकर करवा लिये थे, जिनका उक्त प्रशान्त व्यास दुरूपयोग कर सकता है, उक्त प्लाट के मूल कागजात मेरे अभिभाष्य को काफी तलाश करने के बाद भी नहीं मिले हैं, उक्त आम सूचना द्वारा मेरे अभिभाष्य द्वारा श्री प्रशान्त व्यास के हित में किये सभी दस्तावेज निरस्त समझे जावे, एवं मेरे अभिभाष्य द्वारा उक्त प्लाट का विक्रय पत्र शम्भु प्रसाद डोकानिया के हित में पंजीबद्ध करा दिया है। सूचित रहें।
दलजेन्द्र सिंह राठौड़, एडवोकेट, मो.7976240076

आम सूचना मैं, मेरे अभिभाष्यगण दीनदयाल शर्मा पुत्र स्व. श्री मदनलाल शर्मा एवं गुड्डी देवी शर्मा पत्नी श्री दीनदयाल शर्मा, निवासी ए-14, झोटवाडा रोड, मीरा मार्ग, जयपुर के निर्देशानुसार सर्वसाधारण को सूचित करता हूँ कि मेरे अभिभाष्यगण का पुत्र राहुल शर्मा एवं उसकी पत्नी तनु उर्फ करिश्मा मेरे अभिभाष्यगण के कहने में नहीं है, मेरे अभिभाष्यगण से अमर्यादित व्यवहार करते हैं, जो असहनीय हो गया है। उनकी हरकतों एवं दुर्व्यवहार से परेशान होकर मेरे अभिभाष्यगण ने अपने पुत्र राहुल व पुत्रवधू तनु से सभी संबंध समाप्त करते हुए उनको अपनी समस्त चल-अचल सम्पत्ति से बेदखल कर दिया है। आज के पश्चात मेरे अभिभाष्यगण का उक्त पुत्र-पुत्रवधू से कोई लेना-देना एवं सरोकार नहीं रह गया है। उनके द्वारा किये गये किसी भी कृत्य के लिए मेरे अभिभाष्यगण जिम्मेदार नहीं होंगे, कोई भी व्यक्ति इनसे संव्यवहार करता है, तो वह अपनी रिस्क पर करेगा, सूचित रहें। दि.: 23.07.2024
भवदीय (अनुज शर्मा) एडवोकेट मो.: 8118819892

OFFICE THE GRAM PANCHAYAT SIMARLA JAGEER PS-SRIMADHOPUR(NEEM KA THANA)

No. Eproc/2024-25/26 Date:- 28/07/2024

E-Tender Notice No. 01/2024-25

Bids for open tender of procurement Of Construction Material for Work in MGNREGA And Other Scheme in Gram Panchayat SIMARLA JAGEER Panchayat Samiti Srimadhopur (NEEM KA THANA) are invited from Firms/Supplier's Registered Under the GST act 2017, 6.00 PM of 07-08-2024. Other particulars of the bid may be visited on the procurement Portal http://sppp.raj.nic.in and http;//eproc.rajasthan.gov.in) of the state and at Gram Panchayat SIMARLA JAGEER Office in all working days.

UBN:- SMD2425GLRC00024

SARPANCH GRAM PANCHAYAT SIMARLA JAGEER PANCHAYAT SAMITI SRIMADHOPUR

VILLAGE DEVELOPMENT OFFICER GRAM PANCHAYAT SIMARLA JAGEER PANCHAYAT SAMITI SRIMADHOPUR

पौधारोपण टारगेट पूरा करने पर टीचर को ट्रांसफर मेरिट में पांच अंक मिलेंगे : शिक्षामंत्री

'जो विद्यार्थी अपना पौधारोपण का लक्ष्य पूरा करता है उसे पर्यावरण विषय में पांच अंक ज्यादा मिलेंगे'

सीकर, (निसं)। शिक्षा एवं पंचायतीराज विभाग मंत्री मदन दिलावर ने रविवार को मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा द्वारा शुरू किए गए "हरियालो राजस्थान पौधारोपण अभियान" के तहत पलसाना सीएचसी परिसर में 551 पौधे लगाए। पृथ्वी के बढ़ते तापमान पर शिक्षा मंत्री मदन दिलावर ने कहा कि हम भट्टी के मुहाने पर बैठे हैं, कभी भी भस्म हो सकते हैं।

शिक्षा मंत्री मदन दिलावर ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि विश्व के सबसे ज्यादा तापमान वाले15 शहरों में राजस्थान के सात शहर शामिल हैं। हम भट्टी के मुहाने पर बैठे हुए हैं, कभी भी जलकर भस्म हो सकते हैं। विदेशों में जहां प्रति व्यक्ति हजारों पेड़ लगे हुए हैं, वहीं राजस्थान में प्रति व्यक्ति केवल 20 पेड़ हैं, जबकि प्रति व्यक्ति 472 पेड़ होने चाहिए। उन्होंने कहा कि राजस्थान में पेड़ों को बचाने के लिए जोधपुर के खेजड़ली में अमृता देवी के नेतृत्व में 363 लोगों ने जान दे दी थी, लेकिन पेड़ों को नहीं काटने दिया।

शिक्षा एवं पंचायतीराज विभाग मंत्री मदन दिलावर ने "हरियालो राजस्थान पौधारोपण अभियान" के तहत पलसाना सीएचसी परिसर में पौधे लगाए।

ऐसे में हम सभी को संकल्प लेना चाहिए कि एक बार फिर उसी तरह राजस्थान में पौधारोपण के अभियान को बढ़ावा दिया जाए, जिससे की धरती का तापमान कम हो सके। शिक्षा मंत्री दिलावर ने कहा कि सात अगस्त को हरियाली तीज पर हमें ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाने हैं ताकि दुनिया देखे कि भारत माता को प्यार करने वाले राजस्थान में कितने लोग हैं और भारत माता की कितने लोगों को चिंता है। इसे रिकॉर्ड बनाने के लिए आप सभी का सहयोग जरूरी है। उन्होंने कहा कि इस दिन प्रदेश की सात करोड़ से ज्यादा जनता पौधारोपण करें।

शिक्षा मंत्री ने कहा कि जो स्कूल या फिर स्कूल का अध्यापक अपने पौधारोपण का लक्ष्य पूरा करेगा, उस अध्यापक को ट्रांसफर मेरिट में पांच अंक एक्स्ट्रा मिलेंगे। उन्होंने कहा कि जो विद्यार्थी अपना पौधारोपण का लक्ष्य पूरा करता है उसे पर्यावरण विषय में पांच अंक ज्यादा मिलेंगे। उन्होंने कहा कि जो ग्राम पंचायत कम से कम 50 हजार पौधे लगाएगी, उसको सरकार की ओर से 10 लाख रुपए विकास निर्माण कार्य के लिए अतिरिक्त दिये जाएंगे। राजस्थान में पौधारोपण के मामले में जो पंचायत समिति प्रथम आएगी, जिसने 3 लाख से ज्यादा पौधे लगाए हैं, उन्हें 20 लाख का फंड जिला परिषद के द्वारा अलग से दिया जाएगा। उन्होंने सभी लोगों का आव्हान किया कि वे अपने क्षेत्र के विकास के लिए पीछे नहीं रहें।

- **शिक्षा एवं पंचायतीराज विभाग मंत्री मदन दिलावर ने पलसाना सीएचसी परिसर में 551 पौधे लगाये**
- **पृथ्वी के बढ़ते तापमान पर शिक्षा मंत्री मदन दिलावर ने कहा कि हम भट्टी के मुहाने पर बैठे हैं, कभी भी भस्म हो सकते हैं**

कार्यक्रम के दौरान शिक्षा मंत्री मदन दिलावर ने जिले के शिक्षा विभाग को 11 लाख पौधे लगाने का लक्ष्य दिया। शिक्षा मंत्री दिलावर ने कहा कि पौधारोपण अभियान को सफल बनाने के लिए सभी अधिकारी-कार्मिक पूरी लगन से कार्य करें तथा इस संबंध में लापरवाही करने वाले कार्मिकों के खिलाफ सख्त कार्यवाही की जाएगी। उन्होंने विभागीय अधिकारियों एवं कार्मिकों की चार अगस्त से सभी छुट्टियां रद्द करने की बात कही।

कार्यक्रम में दांतारामगढ़ भाजपा प्रत्याशी गजानन्द कुमावत, मोटलावास सरपंच प्रभु सिंह गोगावास, गोपालजी मंदिर पलसाना के महन्त मनोहर शरण शास्त्री, पलसाना सरपंच रूप सिंह शेखावत, पलसाना प्रधान सुनिता वर्मा, सहायक निदेशक एवं विशेषाधिकारी प्रमोद शर्मा, बीसीएमओ डॉ. नितेश, अधीशाषी अभियन्ता मनरेगा रमजान अली, विनोद दाधीच, जिला शिक्षा अधिकारी प्रारंभिक लालचंद नहलिया, माध्यमिक शीशराम कुल्हरी, राजपाल बिजारणियां, सांवरमल जांगिड़, मनोज जांगिड़ सहित ग्रामीण जन बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

नेपाली महिला की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत

होटल पर अपने लिव-इन पार्टनर के साथ रहते हुए खाना बनाने का काम करती थी महिला

मकराना, (निसं)। क्षेत्र के मनाना गांव में शनिवार को एक होटल पर खाना बनाने का काम करने वाली नेपाली महिला की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। महिला मनाना रोड पर स्थित एक होटल पर अपने लिव-इन पार्टनर के साथ रहते हुए खाना बनाने का काम करती थी। उसके पार्टनर ने बताया कि वो बीमार रहती थी और डिप्रेशन की दवाई ले रही थी।

जानकारी के अनुसार लिव-इन पार्टनर ललित के साथ मनाना रोड स्थित कृष्णा होटल में खाना बनाने का काम करती थी। शुक्रवार रात करीब 9 बजे तबीयत खराब होने पर वह कमरे में जाकर सो गई। रात 12 बजे ललित उसके कमरे पर गया। सुबह करीब 7 बजे जब ललित ने उसे उठाने की कोशिश की तो राधा नहीं उठी। इसके बाद होटल संचालक और ललित ने उसे मनाना के अस्पताल ले गए, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। मकराना सरकारी अस्पताल में पुलिस ने पोस्टमार्टम करवाया और शव को मृतका के परिजनों को सौंप दिया गया। मकराना थाना के ड्यूटी ऑफिसर जितेंद्र सिंह ने अस्पताल में पहुंचकर शव को मोर्चरी में रखवाया। मृतका के भाई सुरेश व अन्य परिजनों के आने पर पोस्टमार्टम करवाया गया और शव का मकराना में अंतिम संस्कार किया गया। मृतका के भाई सुरेश पुत्र खड़के बहादुर ने पुलिस को मृग की रिपोर्ट दी है।

- **महिला के पार्टनर ने बताया कि वो बीमार रहती थी और डिप्रेशन की दवाई ले रही थी**

पिछले दो वर्षों से अपने लिव-इन पार्टनर ललित के साथ रह रही थी। ललित ने बताया कि करीब एक वर्ष पूर्व राधा के पति ने उसे छोड़ दिया था और उसकी स्वयं की पत्नी ने भी उसे छोड़ दिया था। इसके बाद दोनों की पहचान हुई और वे साथ रहने लगे। ललित ने बताया कि राधा बीमार रहती थी और डिप्रेशन की दवाई ले रही थी। मृतका का भाई सुरेश मकराना में होटलों में खाना बनाने का काम करता है। उसके कहने पर राधा और ललित करीब एक महीने पहले ही मकराना के मनाना रोड स्थित होटल में काम करने आए थे। राधा के अपने पूर्व पति से एक पुत्री और एक पुत्र हैं, जबकि ललित भी शादीशुदा है। थानाधिकारी राजेश कुमार ने बताया कि पुलिस ने रिपोर्ट के आधार पर जांच शुरू कर दी है। फिलहाल, पोस्टमार्टम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया गया है।

बलात्कार का आरोपी गिरफ्तार

बीकानेर, (निसं)। नाबालिग के साथ बलात्कार करने के मामले में फरार चल रहे आरोपी को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। गिरफ्तार आरोपी निहालचन्द विश्नोई है। जानकारी के अनुसार इस आशय का मामला 29 जून को नोखा पुलिस थाने में दर्ज किया गया था। मामले में नाबालिग के परिजनों ने आरोपी निहालचन्द पर उसके साथ बलात्कार करने का आरोप लगाते हुए उसके खिलाफ थाने में मामला दर्ज करवाया था। उसके बाद से आरोपी निहालचन्द फरार चल रहा था। लगभग एक माह के अंतराल के बाद आखिरकार आरोपी को पुलिस ने धरदबोचा।

तस्कर ने पिकअप दौड़ाते हुये पुलिस की नाकाबंदी तोड़ी

भीलवाड़ा, (निसं)। जिले की मांडल थाना क्षेत्र में एक तस्कर ने पिकअप को दौड़ाते हुये हाइवे पर की गई पुलिस की नाकाबंदी तोड़ दी और आगे जाकर पिकअप को छोड़कर खेतों में फरार हो गया। पुलिस ने पिकअप से 363 किलो डोडा-चूरा बरामद कर केस दर्ज किया है।

- **पुलिस ने पिकअप से 363 किलो डोडा-चूरा बरामद किया**

थाना प्रभारी संजय गुर्जर ने बताया कि एरिया डोमिनेशन अभियान के चलते जाप्ता बुलाया गया था। हाइवे पर पुलिस जाप्ते को देखकर बीती देर रात एक चालक पिकअप को तेजी से भगा ले गया। शंका होने पर नानकपुरा चौकी पर नाकाबंदी करवाई गई। तस्कर ने बैरियर तोड़ दिया और पिकअप को वहां से भी भगा ले गया। इसके बाद चौकी से करीब एक किलोमीटर आगे यह तस्कर पिकअप को खड़ी कर खेतों में भाग गया। उधर, थाना प्रभारी गुर्जर भी जाब्ता के साथ पीछा करते हुये वहां पहुंच गये। पुलिस ने तस्कर की तलाश की, लेकिन वह नहीं मिला। पिकअप की तलाशी लेने पर उसमें डोडा-चूरा मिला, जिसका वजन 363 किलो पाया गया, जिसे पिकअप सहित जब्त कर केस दर्ज कर लिया गया।

कोचिंग छात्रा के साथ निकाह

बीकानेर, (निसं)। एक कोचिंग छात्रा को डरा-धमकाकर उसके साथ निकाह करने, दुष्कर्म करने तथा गर्भ गिराने का मामला सामने आया है। इस की रिपोर्ट पीड़िता ने सदर पुलिस थाने में दी है। रिपोर्ट में पीड़िता ने बताया कि वह एक कोचिंग क्लासेज में जाती थी। आरोप है कि इस दौरान समीर दावर उसकी रैकी करता था। आरोप है कि 14 मई को आरोपी ने इस कोचिंग छात्रा को रोककर अपनी अपराधिक हिस्ट्री बताई। आरोप है कि आरोपी ने उसको डरा-धमकाकर जबरन फर्जी तरीके से उसके साथ निकाह कर लिया। आरोप है कि उसको घर ले जाकर उसके साथ दुष्कर्म किया। आरोप है कि आरोपी ने उसके साथ मारपीट की जिससे उसका गर्भ गिर गया।

लाखों की ड्रग सहित तस्कर गिरफ्तार

स्लीपर बस में झालावाड़ से जोधपुर तस्करी की जा रही थी ड्रग

ब्यावर/जयपुर। एंटी गैंगस्टर टास्क फोर्स पुलिस मुख्यालय की सूचना पर ब्यावर जिले की बर थाना पुलिस ने झाला चौकी के पास नाकाबंदी में रविवार सुबह एक स्लीपर कोच बस में सवार तस्कर भंवरलाल बिश्नोई पुत्र खमुराम (40) निवासी कंवरजी की खेजड़ी थाना ओसियां जिला जोधपुर को गिरफ्तार कर 200 ग्राम एमडीएमए ड्रग सहित एक आईफोन जब्त किया है। जब्त की गई ड्रग की अंतरराष्ट्रीय बाजार में कीमत लाखों रुपए बताई गई है।

- **तस्कर से 200 ग्राम एमडीएमए ड्रग व एक आईफोन जब्त**

अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस एंटी गैंगस्टर टास्क फोर्स एवं अपराध दिनेश एमएन ने बताया कि उपम् हानिरीक्षक पुलिस योगेश यादव एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक एजीटीएफ विद्याप्रकाश के सुपरविजन एवं पुलिस निरीक्षक सुभाष सिंह तंवर के नेतृत्व में इनामी, वांछित अपराधियों, गैंगस्टर इत्यादि के बारे में आसूचना के संकलन के लिए हैड कांस्टेबल महेश कुमार, नरेंद्र सिंह, रविंद्र सिंह, महावीर शेखावत व कांस्टेबल नरेश कुमार व सुरेश कुमार की एक टीम पूर्वी राजस्थान की ओर रवाना की गई। इसी दौरान टीम के सदस्य हैड कांस्टेबल महेश कुमार एवं महावीर सिंह शेखावत को सूचना मिली कि एक व्यक्ति झालावाड़ से एमडी ड्रग तस्करी कर प्रतापगढ़, चित्तौड़गढ़ होते हुए जोधपुर में सप्लाई करने ले जाता है। इस सूचना को टीम द्वारा तकनीकी संसाधनों द्वारा

एंटी गैंगस्टर टास्क फोर्स की सूचना पर ब्यावर जिले में बर पुलिस ने तस्कर को गिरफ्तार किया।

विकसित कर शनिवार रात बस का पीछा किया गया, लेकिन टीम और बस में काफी दूरी होने और माल खुर्द होने की आशंका पर ब्यावर जिले की बर थाना पुलिस को सूचना दी गई कि जोधपुर नंबर की एक स्लीपर बस ब्यावर से झाला चौकी की तरफ आ रही है, जिसकी सीट नंबर सात पर बैठे व्यक्ति के पास काफी मात्रा में ड्रग है।

सूचना पर रविवार सुबह बर थाना पुलिस की टीम ने झाला चौकी पर नाकाबंदी कर बताए गए नंबर की स्लीपर बस को रुकवाया और सीट पर बैठे हुए आरोपी भंवरलाल बिश्नोई की तलाशी ली गई तो उसकी जेब में रखी प्लास्टिक की थैली से 200 ग्राम एमडीएम ड्रग जप्त की गई। प्रारंभिक पूछताछ में आरोपी ने झालावाड़ के डग थाना क्षेत्र में शेखपुर निवासी श्याम सिंह राजपूत से उक्त एमडीएमए ड्रग खरीद कर बेचने के लिए जोधपुर ले जाना बताया है। मामले का अग्रिम अनुसंधान थाना सेन्दड़ा पुलिस द्वारा किया जा रहा है। संपूर्ण कार्रवाई में हैड कांस्टेबल महेश कुमार, रविंद्र सिंह एवं महावीर सिंह शेखावत की विशेष भूमिका, हैड कांस्टेबल कमल सिंह व कांस्टेबल सोहन सिंह की तकनीकी भूमिका एवं हैड कांस्टेबल नरेंद्र सिंह, राकेश जाखड़ व कांस्टेबल नरेश कुमार व चालक सुरेश कुमार का सहयोग रहा। आरोपी की गिरफ्तारी में बर एसएचओ रूडाराम मय जाब्ता शामिल थे।

रिफाइनरी एरिया में चोरी करने वाली गैंग पकड़ी, लाखों का माल बरामद

बालोतरा, (निसं)। पचपदरा पुलिस ने रविवार को रिफाइनरी एरिया में चोरी करने वाली गैंग का पर्दाफाश कर चोरी में लिप्त गैंग के चार आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से लोहे का स्क्रेप, तांबे व एलुमिनियम की केबल कुल वजनी 10 क्विंटल मय चोरी की वारदात में प्रयुक्त वाहन बोलेरो कैंपर जिनकी कुल कीमत दस लाख रुपये है, बरामद किए हैं।

- **लोहे का स्क्रेप, तांबे व एलुमिनियम की केबल, वारदात में प्रयुक्त बोलेरो कैंपर बरामद**

बालोतरा पुलिस अधीक्षक कुंदन कंवरिया ने बताया कि अमराराम निपु थानाधिकारी पचपदरा के नेतृत्व में गठित पुलिस टीम ने रिफाइनरी एरिया से चोरी करने में लिप्त गैंग का पर्दाफाश कर गैंग के चार सदस्यों राहुल, भोमाराम, प्रेमसुख व श्यामप्रताप को गिरफ्तार कर इनके कब्जे से लोहे का स्क्रेप, तांबे व एलुमिनियम की केबल कुल वजनी 10 क्विंटल मय चोरी की वारदात में प्रयुक्त वाहन बोलेरो कैम्पर जब्त की है।

जानकारी के अनुसार पुलिस कसे मुखबिर सूचना मिली कि रिफाइनरी एरिया से चोरी कर चोरी का माल वाहन कैंपर में भरकर लेकर जा रहे हैं। ईत्तला की तस्दीक करने व अग्रीम कार्यवाही करने के लिए दुर्गाराम उनि. पुलिस थाना पचपदरा मय जाब्ता के सरहद सांभरा में नेशनल हाईवे पर नाकाबंदी की। नाकाबंदी में वाहन कैंपर को चैक करने पर वाहन में सवार चोरी करने की गैंग के सदस्यों द्वारा रिफाइनरी एरिया से चोरी कर माल वाहन में भरकर परिवहन करने पर आरोपियों द्वारा संगठित रूप से एक गिरोह बनाकर रिफाइनरी में लगातार चोरियां करने पर पुलिस ने लगातार निगरानी रखी जा रही थी। गिरफ्तार आरोपियों के विरूद्ध प्रकरण पंजिबद्ध कर अन्य मुलजिमानों के संबंध में पूछताछ जारी है। गिरफ्तार आरोपियों में राहुल चौधरी पुत्र सोहन लाल जाट निवासी मानपुरा रामसर पुलिस थाना रामसर, भोमाराम पुत्र डुगरराम जाट निवासी आडेल पुलिस थाना आरजीटी बाडमेर, प्रेमसुख पुत्र बाबुलाल जाटनिवासी रामसर पुलिस थाना रामसर जिला बाडमेर, श्यामप्रताप पुत्र रामाराम जाट निवासी किशने का तला बाटाडु पुलिस थाना नागाणा है।

स्कॉर्पियो की टक्कर से जीजा-साली की मौत

दो बच्चे घायल, राहगीरों ने चिकित्सालय पहुंचाया

सूरतगढ़, (निसं)। सूरतगढ़-हनुमानगढ़ फोरलेन स्थित रामपुरा रंगमहल के पास सुबह करीब साढ़े दस बजे स्कॉर्पियो गाड़ी की टक्कर से मोटरसाइकिल सवार जीजा-साली की मौत हो गई, जबकि दो बच्चे घायल हो गए। हादसा इतना भीषण था कि स्कॉर्पियो गाड़ी से टकराने के बाद बाइक करीब एक सौ फीट दूरी तक चली गई। हादसे के बाद वहां राहगीरों व ग्रामीणों की भीड़ जुट गई। हादसे की सूचना मिलने पर डीएसपी प्रतीक मील, सिटी थानाधिकारी दलीप सिंह, हैड कांस्टेबल सुनील कुमार बाबल आदि मौके पर पहुंचे और घटना स्थल का निरीक्षण कर ग्रामीणों को शांत करवाया।

- **हादसा इतना भीषण था कि स्कॉर्पियो गाड़ी से टकराने के बाद बाइक सौ फीट दूरी तक चली गई**

राहगीरों की मदद से घायल एक बच्ची को ट्रोमा सेंटर व एक बच्चे को निजी चिकित्सालय लाया गया। ट्रोमा सेंटर में चिकित्सकों ने घायल बच्च्चे का प्राथमिक उपचार किया तथा हालत गंभीर होने पर उसे श्रीगंगानगर रेफर कर दिया गया। वहीं दूसरे बच्चे को निजी चिकित्सालय की आईसीयू इकाई में भर्ती किया गया है। पुलिस ने मृतक के साले की रिपोर्ट पर स्कॉर्पियो गाड़ी चालक के खिलाफ वाहन को तेज व लापरवाही से चलाने के आरोप में मुकदमा दर्ज किया। दोपहर बाद पुलिस ने शवों का पोस्टमार्टम करवाकर परिजनों को सौंप दिया।

सिटी थानाधिकारी दलीप सिंह ने बताया कि सुबह करीब साढ़े दस बजे सिरामसर पीलीबंगा निवासी राजू पुत्र लक्ष्मी साहनी, अपनी साली रजनी पत्नी अनिल, रजनी के पुत्र कर्ण व अर्जुन को मोटरसाइकिल से सूरतगढ़-हनुमानगढ़ फोरलेन मार्ग से सूरतगढ़ की तरफ लेकर आ रहा था। इस दौरान चक एक आरपीएम रामपुरा रंगमहल के पास पीछे से आ रही स्कॉर्पियो गाड़ी ने टक्कर मार दी। हादसा इतना जबरदस्त था कि स्कॉर्पियो गाड़ी से टकराने के बाद बाइक को घसीटकर ले गई। वही स्कॉर्पियो गाड़ी अनियंत्रित होकर डिवाइडर पर चढ़कर नीचे उतर गई। हादसे में दोनों वाहन क्षतिग्रस्त हो गए। वहीं बाइक चालक राजू व उसकी साली रजनी की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि रजनी के दोनों पुत्र कर्ण व अर्जुन घायल हो गए।

तीन साल बालक में चांदीपुरा वायरस की पुष्टि हुई

डूंगरपुर, (निसं)। गत 15 जुलाई को ग्रामीण क्षेत्रों के दो बच्चों में बुखार, उल्टी-दस्त तथा टूटन के लक्षण के बाद जिला चिकित्सालय में भर्ती कराया गया था। साथ ही शिशु रोग चिकित्सकों द्वारा उन बच्चों में वर्तमान में चल रहे चांदीपुरा वायरस के लक्षण का अंदेशा होने पर 18 जुलाई को उनका रीढ़ की हड्डी से पानी का सैंपल लेकर जांच के लिये उदयपुर और वहां से पुणे के लिये भेजा गया था, जहां से 27 जुलाई को एक तीन साल बालक में चांदीपुरा वायरस की पुष्टि हुई जबकि उस बालक को जांच रिपोर्ट आने से पूर्व ही स्वस्थ होने का प्रमाण देकर वार्ड से छुट्टी कर दी गई। वायरस को लेकर राज्य सरकार ने गाईडलान जारी कर दि थी कि वायरस को लेकर विद्यालयो में जागरूकता फैलाई जाये कि, बुखार, उल्टी-दस्त, शरीर में टूटन, ऐंठन होने के लक्षण पर तत्काल इसकी जांच कराई जायें लेकिन चिकित्सा विभाग ने किसी प्रकार की जागरूकता नहीं दिखाई और न ही प्रशासन ने कोई वायरस के प्रति अपनी गंभीरता दिखाई।

- **भर्ती मरीज दो दिन पूर्व ही चिकित्सालय से डिस्चार्ज हुआ**
- **विद्यालयों के लिये न कोई गाइड लाइन और न ही कोई जागरूकता**

पुलिस पार्टी पर जानलेवा हमला करने का ईनामी आरोपी गिरफ्तार

चम्बल नदी से प्रतिबंधित बजरी का दोहन एवं परिवहन करने वाला माफिया भी है आरोपी

धौलपुर, (निसं)। धौलपुर शहर की सदर थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए 10 हजार रुपये के ईनामी आरोपी को गिरफ्तार किया है, जो एक बजरी माफिया है। एसपी धौलपुर की ओर से इसकी गिरफ्तारी पर 10 हजार रुपये का ईनाम घोषित किया गया था।

थाना प्रभारी रामनरेश मीणा ने बताया कि पुलिस टीम पर जानलेवा हमला करने वाले आरोपी रामकेश पुत्र रामगोपाल उर्फ गोपाल गुर्जरनिवासी मानपुर थाना सदर धौलपुर को गिरफ्तार किया है, जिसकी गिरफ्तारी पर पुलिस अधीक्षक धौलपुर की ओर से 10 हजार का ईनाम घोषित किया गया था। आरोपी गोपाल गुर्जर चम्बल नदी से प्रतिबंधित रेता/बजरी का दोहन एवं परिवहन करने वाला माफिया भी है। उसी रेता के प्रकरण में आठ आरोपियों को पूर्व में गिरफ्तार किया जा चुका है।

थाना प्रभारी रामनरेश मीणा ने बताया कि 19 मार्च को तीन ट्रैक्टर जिनमें अवैध चंबल रेता/बजरी भरी हुई थी। जाटौली की तरफ से आ रहे थे। उच्चाधिकारियों के निर्देशन में तीनों ट्रैक्टर-ट्रॉलियों का राजाखेड़ा

धौलपुर शहर की सदर थाना पुलिस ने ईनामी आरोपी को गिरफ्तार किया।

बाईपास से पीछा किया गया, जो ओंडेला रोड होते हुए गांव ठकुरी का पुरा, ओदी का पुरा, मानपुरियों का पुरा में पहुंच गये, जहां रेता माफियाओं ने पुलिस की घेराबंदी की और पुलिस पर पत्थर फैंकने के साथ जान से मारने की नीयत से ट्रैक्टर-ट्रॉली चढ़ाने की कोशिश की। रेता माफियाओं ने राजकार्य में बाधा पहुंचाई और ट्रैक्टर-ट्रॉलियों को लेकर फरार हो गए। तब इनके खिलाफ वन्य जीव सरंक्षण अधिनियम, फॉरेस्ट एक्ट सहित विभिन्न धाराओं में मुकदमा दर्ज हुआ था। उसी मामले में कार्रवाई करते हुए ईनामी आरोपी गोपाल गुर्जर को गिरफ्तार किया है, जिससे मामले में पूछताछ की जा रही है। इस दौरान पुलिस की कार्रवाई टीम में थाना प्रभारी रामनरेश मीणा के साथ एएसआई यादराम, कांस्टेबल गणेश कुमार, अरूण कुमार, जीतेन्द्र सिंह, विजय सिंह और क्यूआरटी टीम के कांस्टेबल गजेन्द्र सिंह, हजारीलाल, रूपेन्द्र सिंह शामिल रहे।

- **आरोपी ने मानपुरियों के पुरा में पुलिस पार्टी पर जानलेवा हमला किया था**
- **एसपी धौलपुर की ओर से गिरफ्तारी पर 10 हजार का ईनाम घोषित था**

ठेकेदारों के "पूल" वाले 6.25 करोड़ के टैंडर ऊंची दर आने के कारण 25 जुलाई को ही निरस्त कर दिए थे : जेडीए आयुक्त

सूत्रों का कहना है कि यू.डी.एच. मंत्री झाबर सिंह खर्रा ने जे.डी.ए. आयुक्त से प्राप्त रिपोर्ट पर असंतुष्टि व संदेह जताया है कि, इस प्रकरण पर मैंने 26 जुलाई को संज्ञान लिया था, इसके बाद बैकडेट में 25 जुलाई की तारीख पर टैंडर निरस्त करने के आदेश निकाले गए हैं।"

जयपुर (कासं)। जयपुर विकास प्राधिकरण की उद्यान शाखा में ठेकेदारों और अफसरों की सांठगांठ से करोड़ों रु. का घोटाला करने की कोशिश का भंडाफोड़ हो गया है। "वन टाइम ट्री प्लांटेशन" के 6.25 करोड़ रु. के जिन 4 टैंडरों को ठेकेदारों ने "पूल" बनाकर 15 से 20 फीसदी ऊंची दरों पर उठाने की कोशिश की थी, वह जे.डी.ए. प्रशासन ने रद्द कर दिए हैं। क्योंकि गत वर्ष पौधारोपण के यही कार्य 51.55 प्रतिशत कम रेट पर ठेकेदार को दिए थे। ऐसे में इस बार दरें करीब 2.5 गुणा ज्यादा थी।

'राष्ट्रदूत' में प्रकाशित इस गड़बड़झाले की खबर पर संज्ञान लेते हुए नगरीय विकास मंत्री झाबर सिंह खर्रा ने गत 26 जुलाई को जे.डी.ए. प्रशासन को आदेश दिए थे कि इस प्रकरण में ठेकेदारों की दर संबंधी बोलियों पर एल.ओ.आई. अथवा एल.ओ.ए.सम्बन्धित कोई भी कार्यवाही बिना अनुमति नहीं करें। साथ ही इस प्रकरण की तथ्यात्मक जांच करके 3 दिन में रिपोर्ट भी पेश करने को कहा था। यूडीएच मंत्री के आदेश के तुरंत बाद जे.डी.ए. प्रशासन ने इन टैंडरों को निरस्त कर दिया।

सूत्रों की मानें तो जे.डी.ए. आयुक्त मंजू राजपाल ने नगरीय विकास मंत्री झाबर सिंह खर्रा को जो रिपोर्ट भेजी है, उसमें लिखा है कि "ठेकेदारों से नेगोसिएशन में प्राप्त दरें अधिक होने के कारण निविदा 25 जुलाई को निरस्त कर दी गयी है।" जेडीए कमिश्नर के इस जवाब पर मंत्री खर्रा असंतुष्ट हैं। उन्होंने संदेह जताया है कि जैसे ही 26 जुलाई को मैंने इस प्रकरण में संज्ञान लिया, उसके बाद निविदा निरस्तीकरण की कार्यवाही तत्काल करके उस पर 25 जुलाई की तारीख अंकित की गई है। खर्रा का कहना है कि, ठेकेदारों से टैंडर की दरों के नेगोसिएशन में दर अधिक होने पर इस नियम में आर.टी.पी.पी.आर-69 (6) में बतौर अग्रिम कार्यवाही प्रति प्रस्ताव की ओर बढ़ने की आवश्यकता होती हैं, परंतु उपापन प्राधिकारी ने कदाचित संवेदकों के "कार्टेलाइजेशन" (गुटबंदी) की खबर एक्सपोज़ होने के भय से निविदा के चलते प्रवाह "अर्बोटिव" तरीके से निरस्त कर दी। इससे जाहिर होता है कि निविदा में 'गुटबंदी' का जो संदेह था, वह सही था।

यू.डी.एच. मंत्री खर्रा ने कहा कि, "राष्ट्रदूत" समाचार पत्र की खबर पर तुरंत संज्ञान लेने के कारण जयपुर विकास प्राधिकरण के हित में सटीक कार्यवाही संभव हुई है। अगर नेगोसिएशन की दरों की तुलना गत वर्ष और वर्तमान मार्केट विश्लेषण से की जाए तो कम से कम 3 करोड़ रु. का घोटाला जे.डी.ए. की उद्यान विंग में होने वाला था, जिसे रोक दिया गया है। मंत्री खर्रा का कहना है कि, इस मामले का दूसरा महत्वपूर्ण पक्ष यह भी है कि जयपुर विकास प्राधिकरण के ठेकेदारों व अफसरों के इस गड़बड़झाले की भेंट मानसून का जुलाई माह चढ़ गया है। "पूल" के दृष्टिगत निविदा खोलने की दिनांक 1 जुलाई को ही दुबारा निविदा का निर्णय लिया जा सकता था, जेडीए प्रशासन परन्तु घोटाले को मैनेज करते रहे। आखिर नगरीय विकास मंत्री के दखल के बाद यह सब करना पड़ा। खर्रा का कहना है कि जुलाई माह बीतने के करीब आ गया, अब नई निविदा कब पूरी होगी, कोई नहीं बता सकता। पौधारोपण की पीक सीजन निकल चुकी है, इसका उत्तरदायित्व किसका होगा। जो भी इस घोटाले की कोशिश में थे, उनके खिलाफ जल्द ही बड़ी कार्रवाई की जायेगी।

- **'राष्ट्रदूत' में प्रकाशित खबर को सही मानते हुए, नगरीय विकास मंत्री ने भी माना कि, 6.25 करोड़ के पौधारोपण के ठेके देने की आड़ में करीब 3 करोड़ रु. का घोटाला होता, लेकिन तुरंत संज्ञान लेने के कारण अफसरों को यह निविदाएं निरस्त करनी पड़ी**
- **सूत्रों का कहना है कि, जे.डी.ए. की उद्यान विंग में गड़बड़ी का यह मामला उजागर होने के बाद जल्द ही नगरीय विकास मंत्री जिम्मेदार अधिकारी-कर्मचारियों पर कार्रवाई कर सकते हैं।**

बंधन बैंक का कारोबार 22 प्रतिशत बढ़ा

जयपुर । बंधन बैंक ने वित्त वर्ष 2024-25 की पहली तिमाही के लिए अपने वित्तीय परिणामों की घोषणा की। बैंक का कुल कारोबार 22 प्रतिशत बढ़कर 2.59 लाख करोड़ रुपए पर पहुँच गया। कुल जमा में अब बैंक की खुदरा हिस्सेदारी लगभग 69 प्रतिशत है। पिछली तिमाही में देखी गई उत्साहजनक बढ़त वितरण, व्यावसायिक दक्षता और अनुकूल परिचालन वातावरण में इसके विस्तार से प्रेरित है। बैंक के एमडी और सीईओ रतन कुमार केश ने बताया कि बंधन बैंक अब भारत में 6300 बैंकिंग आउटलेट के माध्यम से 3.44 करोड़ से अधिक ग्राहकों को सेवाएं प्रदान करता है। बैंक में कार्यरत कर्मचारियों की कुल संख्या लगभग 77 हजार 500 है। उन्होंने बताया कि वित्त वर्ष 2025 की पहली तिमाही के दौरान बैंक की जमाराशि में पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में 23 प्रतिशत की बढ़त हुई। कुल जमाराशि अब 1.33 लाख करोड़ रुपए हो गई है, जबकि कुल एडवांस 1.26 लाख करोड़ रुपए हैं।

"सुरंगो सावण" कार्यक्रम में लहरिया पहनकर झूमी महिलाएं

जयपुर । गणगौर महिला ग्रुप की ओर से आयोजित "सुरंगो सावण" कार्यक्रम में महिलाओं ने सावण के लोकगीत और लोकधुनों पर जमकर नृत्य किया।

ग्रुप की फाऊन्डर और डायरेक्टर सुशीला भारती ने बताया की सभी महिलाएँ पारंपरिक रंग बिरंगे लहरिया पोशाक में नजर आई। सभी महिलाओं ने हाथों में मेहंदी लगाई और विशेष राजस्थानी शृंगार किया। इठलाती हुई महिलाओं ने जब मंच पर नृत्य किया तो राजस्थानी संस्कृति साकार हो उठी। कार्यक्रम के दौरान कई मनोरंजक गतिविधियाँ भी आयोजित की गई। गणगौर महिला ग्रुप समय समय पर राजस्थान के तीज-त्यौहारों पर ऐसे कार्यक्रम करता रहता है ताकि घरेलू और काम-काजी महिलाओं को अपना हुनर दिखाने के लिए मंच मिल सके। इन कार्यक्रमों का उद्देश्य राजस्थानी कला एवं संस्कृति को बढ़ावा देना है, जो हमारे समाज से धीरे धीरे लुप्त होती जा रही है।

छात्रावास अधीक्षक ग्रेड-।। परीक्षा में पहुंचे करीब 75 फीसदी अभ्यर्थी

जयपुर । राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड द्वारा 28 जुलाई 2024 को छात्रावास अधीक्षक ग्रेड-।। (सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग) सीधी भर्ती परीक्षा-2024 का आयोजन हुआ। प्रातः 10 बजे से दोपहर 12 बजे तक जयपुर शहर के 17 केन्द्रों पर हुआ। जिसमें कुल 4 हजार 122 अभ्यर्थी पंजीकृत थे। अतिरिक्त जिला कलक्टर (पूर्व) सुमन पंवार ने बताया कि जयपुर शहर के केन्द्रों पर 75.72 फीसदी से अधिक अभ्यर्थियों ने अपनी मेहनत एवं किस्मत को आजमाया। जयपुर में कुल पंजीकृत 4 हजार 122 अभ्यर्थियों में से 3 हजार 121 अभ्यर्थी परीक्षा में उपस्थित रहे। वहीं, 1 हजार 1 अभ्यर्थी परीक्षा में अनुपस्थित पाए गए। जिला कलक्टर प्रकाश राजपुरोहित ने परीक्षा के सफल एवं शांतिपूर्ण आयोजन के लिये प्रशासनिक अधिकारियों, पुलिस अधिकारियों एवं अन्य संबंधित विभागों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों का आभार जताया है।

सुरीले गीतों से खिल उठा संगीत आश्रम

जयपुर । बॉलीवुड के लीजेंडरी प्लेबैक सिंगर मो.रफी की 44वीं बरसी पर संगीत आश्रम संस्थान की ओर से रविवार को शास्त्रीनगर स्थित संस्थान परिसर में दीवाना हुआ बादल शीर्षक से सांस्कृतिक संध्या संजोई गई। समाजसेवी व वरिष्ठ कलाकार ताराचंद जैन ने मां सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण का कार्यक्रम की शुरुआत की।

गिटार वादक वत्सल अनुपम के निर्देशन में सजे इस कार्यक्रम में करीब तीस से अधिक बाल व युवा कलाकारों ने खुदा के नूर गायक मो.रफी के गाए अनेक सदाबहार गीतों की सलोनी प्रस्तुतियां देकर मौजूद अनेक श्रोताओं को आनंदित कर दिया। कार्यक्रम में पुष्पेन्द्र सिंह ने क्या हुआ तेरा वादा..., विमर्श स्वामी ने आजकल तेरे मेरे प्यार के चर्चे..., जयति कुमारी ने दीवाना हुआ बादल..., रियार्शी गोयल ने इशारों इशारों में..., वनिता हीरानी ने बार बार देखो..., रजनी कुमावत ने तेरे मेरे सपने..., गर्विता मंगल ने मन तड़पत आज..., कशिश कंवर ने आजा तेरी याद..., जगदीश जीनगर ने मेरे दुश्मन तू..., मिन्टु मंडल ने आने से उसके आए..., जीनस कंवर ने झिलमिल सितारों का..., अंजली शर्मा ने जो वादा किया वो..., आदित्रि मुखर्जी ने लिखे जो खत..., भूमिका राठौर ने अच्छा जी...जैसे गीतों की सुरमयी प्रस्तुति दी। इसी प्रकार राजीव मित्तल, तनविका दीक्षित, आशीष सोनी, गीत शर्मा,पीडी शर्मा, प्रीति प्रधान, ममता शर्मा, मुस्कान कुमावत, मंत्र चैतन्य वशिष्ठ, राशिका कंवर, भूमि कोठारी, गुलाम हाशिम, प्रियंका सिंह, विशाल, निहाल, खुशबू, शुभम, आकिब और ताराचंद जैन ने मो.रफी के गाए गीतों की मिठास भरी प्रस्तुति दी।

अर्कोडियन पर सुलेमान खान, आक्टोपेड पर गर्वित, हारमोनियम पर हरीश नागौरी, गिटार पर वत्सल अनुपम और तबले पर वरुण जांगिड़ ने प्रभावी संगत की। संचालन वीना अनुपम ने किया। संस्थान सचिव अमित अनुपम ने बताया कि समारोह के दूसरे दिन 29 जुलाई, सोमवार को कथक संध्या होगी। इसमें जयपुर घराने का पारंपरिक कथक प्रस्तुत किया जाएगा।

सार-समाचार

वैवाहिक सम्मेलन के लिए समिति गठित

जयपुर । ब्राह्मण समाज राजस्थान की ओर से राजधानी के विद्याधर नगर में आगामी 4 अगस्त को होने वाले युवक युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन की तैयारियां जोर-शोर से चल रही है। इसको लेकर सीकर रोड स्थित प्रधान कार्यालय पर रविवार को प्रदेश कोर कमेटी की बैठक संपन्न हुई। बैठक में सम्मेलन के लिए 15 समितियों का गठन कर पदाधिकारियों को उसकी जिम्मेदारी सौंपी गई, वहीं इस सम्मेलन में ब्राह्मण समाज के युवाओं के 150 जोडे तय करने का लक्ष्य भी निर्धारित किया गया। बैठक में ब्राह्मण समाज राजस्थान के प्रदेशाध्यक्ष अंबिका प्रकाश पाठक ने कहा कि आयोजन के लिए इस बार प्रदेशभर के समाज के युवाओं में भारी उत्साह है। इस प्रकार के आयोजन सामाजिक कुरीतियों पर कडा प्रहार है और समाज के युवा इन कुरीतियों को दूर करने के लिए आगे आ रहे है। ऐसे में आयोजन को सफल बनाने के लिए 20 पदाधिकारियों की आयोजन समिति का गठन किया गया है। इसके साथ ही 15 अलग अलग अन्य कमेटियां भी बनाई गई है। ये कमेटियां सम्मेलन के लिए विभिन्न कार्यक्रमों की जिम्मेदारी संभालेगी। बैठक में प्रदेश महामंत्री दामोदर प्रसाद शर्मा, प्रदेश महिला मोर्चा की अध्यक्ष डॉ. शारदा शर्मा, प्रदेश अध्यक्ष महिला प्रकोष्ठ किरण पुरोहित, कोषाध्यक्ष गोवर्धनलाल शर्मा, प्रचार प्रसार मंत्री बनवारी दीक्षित, सतन कुमार गौतम, निरंजन शर्मा, मनमोहन शर्मा, बीरबल शर्मा, सूरज शर्मा, मुन्ना लाल शर्मा, हरी मोहन थानेदार, सरोज शर्मा, सुमन शर्मा, सोनिया शर्मा, हरीशचन्द्र शर्मा सहित अन्य पदाधिकारी उपस्थित रहे।

डॉक्टर्स के बीच सुरों की जंग जारी

जयपुर । एसबीआई डॉक्टर्स म्यूजिक प्रीमियम लीग सीजन 3 में सुरों की जंग जारी है। फाइनल प्रतियोगिता 28 जुलाई को होगी। राजस्थान इंटरनेशनल सेंटर जयपुर में डॉक्टर्स की तीन दिवसीय गायन प्रतियोगिता एसबीआई डीएमपीएल सीजन 3 का 27 जुलाई को दूसरा दिन था। लीग चेयरमैन डॉ. संजीव गुप्ता ने बताया कि आज प्रतियोगिता के लीग व प्रीमियर मैच खेले गए। लीग आयोजन सचिव डॉ अनिल यादव ने बताया कि 28 जुलाई को होने वाले फाइनल मुकाबलों के लिए चार टीमों आँगन मेडिनोवा, निविक, रोहिन रोकर्स व टीम सीतादेवी ने क्वालीफाई किया। लीग संयोजक डॉ. संदीप निझावन ने बताया कि 55 वर्ष से अधिक आयु वर्ग के एकल मुकाबलों में डॉ.अतुल पुरोहित प्रथम, डॉ. महेश कडेल द्वितीय व डॉ. मनीष गुप्ता तृतीय स्थान स्थान पर रहे। लीग चीफ कोर्डिनेटर डॉ. हरीश भारद्वाज ने बताया कि 45 वर्ष से अधिक आयु वर्ग के युगल मुकाबलों में डॉ. महेश कडेल-डॉ. माया बागड़ी की जोड़ी ने प्रथम, डॉ. मनीष शर्मा-डॉ. ज्योत्सना भार्गव की जोड़ी ने द्वितीय व डॉ. रोहिन भाटिया-डॉ. मोनिका भाटिया की जोड़ी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। चीफ कोर्डिनेटर डॉ. रवींद्र सिसोदिया ने बताया कि 45 वर्ष से कम के युगल मुकाबलों में डॉ. क्षितिज-डॉ. अंजलि की जोड़ी ने प्रथम, स्थान पाया वहीं द्वितीय स्थान के लिए डॉ. भरत कडेल-डॉ. शिवि व डॉ. तन्मय-डॉ. सिमी की जोड़ी का मैच टाई रहा। कॉर्डिनेटर डॉ. हर्षुल टांक ने बताया कि आज डॉ. संकल्प, डॉ. आशीष, डॉ. मनीष, डॉ. विदिशा, डॉ. सौम्या, डॉ. भाग्यश्री, डॉ. प्रियंका, डॉ. गौरव, डॉ. महेंद्र, डॉ. पार्थ, डॉ. सिमी, डॉ. भूपेंद्र, डॉ. रविराज, डॉ. संदीप, डॉ. अरुण व आदि गायकों ने भी गीतों की उल्लेखनीय प्रस्तुतिया दी।

मेयर डॉ. सौम्या गुर्जर और पद्मश्री डॉ.माया टंडन ने किया पौधारोपण

जयपुर । ग्रेटर महापौर सौम्या गुर्जर और पद्मश्री डॉ. माया टंडन ने तरुचाया नगर में वृक्षारोपण अभियान की शुरुआत की। यह अभियान उस सड़क पर चलाया गया, जिसे हाल ही में माया टंडन के नाम पर रखा गया है। डॉ. माया टंडन ने सड़क दुर्घटनाओं में घायल व्यक्तियों की देखभाल के लिए लोगों को प्रशिक्षित करने में उल्लेखनीय कार्य किया है। कॉलोनी के निवासियों, कल्याण समाज के पदाधिकारियों ने पेड़ों के चारों ओर धागा बांधकर उनकी देखभाल करने का संकल्प लिया। यह अभियान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा प्रारंभ किए गए "एक पेड़ मां के नाम" योजना का हिस्सा है, जिसका उद्देश्य धरती माता को सम्मानित करना है।

कानोता में करंट लगने से नाबालिग मजदूर की मौत

जयपुर । कानोता इलाके में करंट लगने से एक नाबालिग मजदूर की मौत हो गई। छत पर सामान रखते समय लटके बिजली तारों से उसे करंट लगा था। इस पर उसे अस्पताल ले जाया गया, जहां पर उसकी मौत हो गई। पुलिस ने पोस्टमार्टम करवा कर शव परिजनों को सौंप दिया है। मृतक के पिता ने ठेकेदार के खिलाफ मामला दर्ज करवाया है।

पुलिस ने बताया कि हादसे में बासमवास गंगापुर सिटी निवासी पंकज (17) पुत्र मनीष बैरवा की मौत हो गई। उसके पिता मनीष अपने परिवार के साथ शंकर विहार कानोता में किराए से रह रहे है। 26 जुलाई को ठेकेदार जीतू बन्ना मजदूरी के लिए पंकज को पुरानी चुंगी कानोता स्थित एक दुकान पर ले गया। सुबह करीब 9:30 बजे दुकान की छत पर सामान रखने के लिए पंकज को भेजा। छत पर सामान रखते समय बिजली के तारों से पंकज को करंट का तेज झटका लगा। धमाके की आवाज से दूर जाकर गिरे पंकज को गंभीर हालत में तुरंत हॉस्पिटल पहुंचाया। डॉक्टर्स ने पंकज को मृत घोषित कर दिया। मृतक के पिता मनीष ने ठेकेदार जीतू बन्ना के खिलाफ लापरवाही के चलते बेटे पंकज की मौत का मामला दर्ज करवाया है। मृतक के पिता ने बताया कि वह पिछले एक साल से यहां किराए से रहकर मजदूरी कर रहा है। वह अपनी पत्नी व दोनों बेटों के साथ यहां रहने आया था। 26 मई की शाम को उनका 13 साल का बेटा दिपांशु लापता हो गया था।

251 पेड़ लगाए, सुरक्षा भी करेंगे

जयपुर। टीम 39 जहां चाह-वहां राह जन कल्याण ट्रस्ट एवं पानीपेच रोड व्यापार मंडल समिति ने रविवार को इंद्रा कॉलोनी पार्क, माधो कानन पार्क, अजमीढ स्वर्णकार पार्क, डी-पार्क, डेजर्ट कॉलोनी में वृक्षारोपण कार्यक्रम किया गया । टीम ने 251 पेड़-पौधे लगाए और उनकी सुरक्षा का संकल्प भी लिया। मीडिया प्रभारी मनीष केडिया ने बताया कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सुभाष गोयल (ब्रांड एंबेसडर अमृत पर्यावरण महोत्सव राजस्थान सरकार एवं अध्यक्ष जयपुर व्यापार महासंघ), टीम 39 प्रधान ट्रस्टी व व्यापार मंडल अध्यक्ष विष्णु बियानी, (टीम 39 अध्यक्ष) राम प्रकाश शर्मा, (टीम 39 महासचिव हंसराज चौधरी व्यापार मंडल महासचिव) मुकेश अग्रवाल, मनीष अग्रवाल मौजूद थे।

गोविंददेवजी के चरणों में लगाई छात्रसंघ चुनाव करवाने की अर्जी

जयपुर । छात्रसंघ चुनाव करवाने के लिए अब छात्रों ने जयपुर के आराध्य गोविंद देव जी के चरणों में अर्जी लगाई है। रविवार को राजस्थान विश्वविद्यालय के छात्र नेता गोविंद देव जी मंदिर पहुंचे और यहां छात्र शक्ति की ओर से भगवान से प्रार्थना की कि प्रदेश के मुख्यमंत्री उनकी पुकार सुनें और छात्रसंघ चुनाव की घोषणा करें।

गोविंद देव जी महाराज आप इस प्रदेश के ही नहीं बल्कि पूरी सृष्टि के राजा हैं। आपकी अनुमति के बिना एक पत्ता भी इधर से उधर नहीं होता। भगवान आपके चरण कमल में हृदय की गहराइयों से प्रार्थना है कि वर्तमान में आपकी कृपा से जो सरकार सत्ता में है, वो लाखों प्रदेश के युवाओं की भावना को आहत करने का काम कर रही है। आप उन्हें सद्बुद्धि दें, ताकि वो छात्रसंघ चुनाव बहाल करें। इस तरह की एक अर्जी लेकर राजस्थान विश्वविद्यालय की छात्र शक्ति रविवार को जयपुर के आराध्य गोविंद देव जी मंदिर पहुंचे और ठाकुर जी के समक्ष अर्जी लगाई।

राजस्थान विश्वविद्यालय के छात्र नेता विजयपाल कुड़ी और नीरज कीचड़ ने भगवान से मन्नत मांगते हुए कहा कि विश्वविद्यालय के छात्रों ने छात्रसंघ चुनाव कराने की मांग को लेकर आंदोलन किया, पुलिस की लाठियां भी खाई, उन्हें हिरासत में भी लिया गया, किसी का हाथ टूटा, किसी का पैर टूटा, खून से सीएम को पत्र भी लिखा, अर्धनग्न प्रदर्शन भी किया और कुछ छात्र अभी आमरण अनशन पर बैठे हैं। राज्य सरकार उनकी गुहार नहीं सुन रही। ऐसे में अब पूरी सृष्टि के राजा भगवान गोविंद देव जी से अरदास की है कि वही सरकार को सद्बुद्धि दें, ताकि छात्रसंघ चुनाव बहाल हो सके।

वी.के.आई.में अगरबत्ती की फैक्ट्री में आग

जयपुर। राजधानी के विश्वकर्मा इलाके में रविवार शाम को एक अगरबत्ती की फैक्ट्री में अचानक भीषण आग लग गई। आग की सूचना पर आस-पास के सभी फायर स्टेशनों से करीब डेढ़ दर्जन दमकल मौके पर पहुंची और करीब तीन घंटे में आग पर काबू पाया। फैक्ट्री एक मंजिला भवन में चल रही थी। आग से किसी के हताहत होने की खबर नहीं है। फैक्ट्री से उठी आग और धुआं करीब दो किलोमीटर से नजर आ रहा था। फैक्ट्री से निकली धुआं के चलते आस-पास के लोगों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ा। एतिहात के तौर पर आग लगने के बाद आस-पास के इलाकों की विद्युत आपूर्ति बंद कर दी गई। पुलिस के अनुसार रविवार शाम करीब साढ़े सात बजे रोड नम्बर 17 पर स्थित एक अगरबत्ती फैक्ट्री में अचानक आग लग गई। आग ने कुछ ही समय में विकराल रुप धारण कर लिया। फैक्ट्री से धुआं उठता देखकर स्थानीय लोगों ने पुलिस को सूचना दी। इस पर आस-पास के सभी फायर स्टेशनों से दमकल मौके पर पहुंची और आग पर काबू पाया।

थानाधिकारी राजेंद्र कुमार ने बताया कि आग से कोई हताहत नहीं हुआ है। रविवार होने के कारण फैक्ट्री बंद थी। आग का प्राथमिक कारण शॉर्ट सर्किट बताया जा रहा है। तीन मंजिला भवन में चल रही फैक्ट्री में आग से काफी नुकसान हुआ है। आग से हुए नुकसान का आंकलन किया जा रहा है।

मकानों में तोड़फोड़ करने वाले दो बदमाश गिरफ्तार

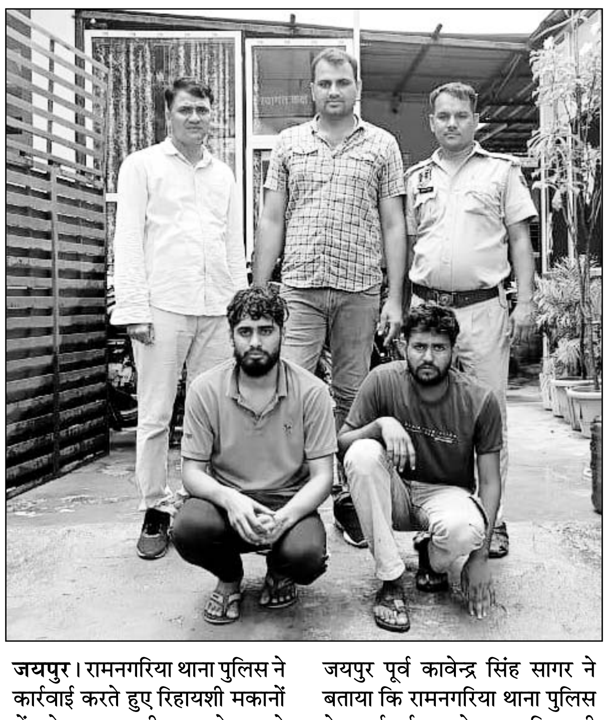

जयपुर । रामनगरिया थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए रिहायशी मकानों में प्रवेश कर मारपीट कर तोड करने वाली गैंग के दो बदमाशों को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार आरोपित नई गैंग बना कर अपना वर्चस्व बढ़ाने के लिए वारदात करते है और इनके खिलाफ पूर्व में मारपीट-लूटपाट के कई मामले दर्ज है। फिलहाल आरोपितों से पूछताछ की जा रही है। पुलिस उपायुक्त जयपुर पूर्व कावेन्द्र सिंह सागर ने बताया कि रामनगरिया थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए रिहायशी मकानों में प्रवेश कर मारपीट कर तोड करने वाली गैंग के बालकृष्ण उर्फ बाली मेंदला और रमन मीना को गिरफ्तार किया है। दोनों ही आरोपित रामनगरिया इलाके के रहने वाले है। पुलिस आरोपितों से पूछताछ कर अन्य आरोपितों के बारे में जानकारी की जा रही है।

सेमीनार में फूड सेफ्टी, हाइजीन व मोटा अनाज को बढ़ावा देने पर चर्चा

जयपुर । खाद्य सुरक्षा आयुक्तालय राजस्थान एवं होटल फेडरेशन ऑफ़ राजस्थान की ओर से फूड सेफ्टी, हाइजीन एवं मिलेट्स (मोटा अनाज) के प्रमोशन के लिए जयपुर में सेमिनार का आयोजन किया गया।

राजस्थान धरोहर प्राधिकरण के अध्यक्ष ओंकार सिंह लखावत ने कहा की होटल फेडरेशन की ओर से स्वास्थ्य विभाग के साथ इस तरह के सेमिनार के आयोजन से खाद्य पदार्थों को लेकर आमजन में जागरूकता बढ़ेगी और मोटे अनाज के उपयोग के लिए लोग प्रेरित होंगे। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की पहल पर प्रदेश में मोटे अनाज को प्रोत्साहन दिया जा रहा है। उन्होंने कहा कि मोटे अनाज के उपयोग से हम अनेक बीमारियों से बच सकते हैं। टूरिज्म सेक्टर से जुड़े सदस्यों के साथ फूड सेफ्टी विभाग द्वारा इस प्रकार की वार्ता से एक अच्छा संदेश पूरे राजस्थान भर में पहुंचेगा।

खाद्य सुरक्षा आयुक्त इकबाल खान ने सेमिनार में शामिल प्रतिनिधियों के सवालों का जवाब दिया और फेडरेशन द्वारा विभाग के साथ मिलकर किए जा रहे प्रयासों के लिए आभार जताया। उन्होंने कहा कि फेडरेशन के सदस्यों की समस्याओं का आगामी दिनों में कैंप लगाकर तुरंत समाधान का प्रयास किया जाएगा।

बदमाशों ने मारपीट कर युवक से कार छीनी

नारायण सिंह सर्किल पर गाड़ी को साइड देने की बात पर हुआ था झगड़ा

जयपुर (कासं)। राजधानी के नारायण सिंह सर्किल पर गाड़ी को साइड देने की बात को लेकर आपस में झगड़ा गया। इसके बाद बदमाश दो युवकों से मारपीट कर कार ले गए। घटना के सम्बंध में पीडित ने गांधी नगर थाने में मामला दर्ज करवाया है। पुलिस के अनुसार आमेर निवासी दिग्विजय सिंह ने मामला दर्ज करवाया कि वह अपने दोस्त योगेश भाट के साथ घर जा रहा था। रात करीब 1 बजे नारायण सिंह सर्किल के पास कुछ युवकों से कहासुनी हो गई। कहासुनी के बाद युवक उसकी कार ले गए। बदमाश उसके दोस्त को आदर्श नगर श्मशान घाट के पास पटक गए। सूचना पर पुलिस ने नाकाबंदी करवाई, लेकिन बदमाशों का कोई सुराग नहीं लगा।

कार में पीडित और उसके दोस्त के मोबाइल के साथ 20 हजार रुपए भी रखे थे। पुलिस ने बताया कि घटना 26 जुलाई की रात करीब एक बजे की है। पीडित का नारायण सिंह सर्किल पर साइड देने की बात को लेकर अन्य कार सवार युवकों से झगड़ा हुआ था।

झगड़े के बाद युवक मारपीट कर उसकी कार ले गए। इस दौरान कार में पीडित का दोस्त योगेश भी बैठा था। बदमाश उसे आदर्श नगर श्मशान घाट के पास उतार गए। बदमाशों को पकड़ने के लिए प्रयास जारी है। जल्द बदमाशों को पकड लिया जाएगा।

वहीं दूसरी ओर अशोक नगर थाना इलाके में बाइक सवार दो बदमाश युवक के हाथ पर झपट्टा मार कर मोबाइल छीनकर ले गए। पुलिस के अनुसार ककराली रामपुरा निवासी मुकेश कुमार ने मामला दर्ज करवाया कि वह किसी काम से जा रहा था पृथ्वीराज रोड सी स्कीम पर पीछे से बाइक सवार दो बदमाश आए और उसके हाथ पर झपट्टा मार कर मोबाइल छीनकर ले गए। इस अप्रत्याशित घटना में पीडित कुछ समझ पाता तब तक बदमाश तेज गति से बाइक चलाकर गलियों में ओझल हो गए। घटना 26 जुलाई की रात 10 बजे की है। पुलिस ने मामला दर्ज कर घटना स्थल और उसके आस-पास के सीसीटीवी फुटेज खंगाल रही है।

- **अशोक नगर इलाके में भी बाइक सवार दो बदमाश युवक के हाथ पर झपट्टा मार कर मोबाइल छीनकर ले गए**

International Tiger Day

Tigers are majestic creatures, who may face extinction, if not helped. *International Tiger Day* has been created so that people around the world can raise awareness for tiger conservation. The aim of the day is to help promote a worldwide system whereby we are dedicated to protecting tigers and their natural habitats. We can also use this day to support tiger conservation issues and to raise awareness. After all, when more people are aware of something, they are going to be more inclined to help, and that is why this day is so important.

#CURIOSITY

Your brain wants you to be curious, not anxious

A new neuroimaging study from Columbia University reveals how brains process curiosity, and points to a better way to approach the unknown.

In a letter that Albert Einstein wrote to his biographer in 1952, the brilliant scientist claimed to possess no special talents other than being 'passionately curious.' False modesty aside, it was only through pursuing his interest in the world's mysteries, during his time on this planet, that Einstein managed to reveal so many hidden secrets about the universe.

Curiosity may be humanity's brightest, most powerful spotlight for illuminating the unknown, whether it's quantum mechanics in the case of Einstein or, gulp, the possibility of AI replacing all our jobs, and a new study appears to back that up. It may even offer a new way to think about anxiety.

A research team from Columbia's Zuckerman Institute recently published a study in the *Journal of Neuroscience* about what happens in the human brain when feelings of curiosity develop. By revealing how certain brain areas tend to process uncertainty as curiosity in visually ambiguous situations, the study's findings show how deeply the two elements are interrelated.

"What distinguishes human curiosity is that it drives us to explore much more broadly than other animals, and often just because we want to find things out, not because we are seeking a material reward or survival benefit," one of the study's authors, Jacqueline Gottlieb stated on the Zuckerman Institute's website. "This leads to a lot of our creativity."

Gottlieb and her team of researchers used a type of MRI scan on 32 volunteers, monitoring changes in blood-oxygen levels within each subject's brain, as they viewed a series of images with varying degrees of distortion. While observing participants' brain activity, the researchers asked them to rate their confidence and curiosity about each image. As uncertainty rose, so did curiosity.

The brain scan data seemed to confirm the subjects' verbal responses, showing high activity in two regions, the *occipitotemporal cortex*, known to be involved in vision and recognizing types of objects, and the *ventromedial prefrontal cortex*, which helps determine a person's perception of value and confidence about a situation. According to Gottlieb, the latter region seemed to pick up on the former region's encoded uncertainty and helped subjects decide whether to be more curious about an image. The scientists were thus able to observe uncertainty driving curiosity in participants' brains. While this study is limited to the visual realm, its implications may extend to how we deal with other forms of uncertainty, perhaps, even the intrusive, existential kind that keeps some of us up at night.

Most people seem to hate uncertainty. It signals a lack of control, along with an unshakable sense of trouble looming over the horizon, difficult to anticipate and even harder to brace for.

Uncertainty is a critical driver of stress. In fact, a scientific study from 2016 concluded that uncertainty is even more stressful than situations with predictable negative outcomes, meaning most people might generally prefer knowing their day will surely end with a slap in the face from a stranger than to instead have only a 50% chance of getting slapped.

But maybe they shouldn't.

Another way people can deal with other forms of uncertainty is to intentionally treat it the way their brains automatically treat the visual kind. It might be as simple as a matter of reframing.

The flipside of "I'm worried about the unknown" is "I'd like to learn more about the unknown." The second option just happens to feel a lot better, and is far more constructive. It doesn't take *an Einstein* to understand that.

From The Eyes Of Marianne

Marianne noticed many Arab mariners in Mandvi. "The Arab sailors, who, coming from Mocha and other ports of the Red Sea, are frequently seen here, are a wild and singularly picturesque looking race, and although wearing the flowing robe, and graceful turban, common in the East, seem strikingly dissimilar to men of other tribes." She wrote of their darker clothes and their pale blue and red turbans, that were less studiously arranged than those of Indians. "Their general bearing is that of men used to peril, but accustomed to defy it," she said admiringly.

A sketch from '*Cutch or Random Sketches Taken During a Residence in one of the Northern Provinces of Western India.*' Credit: Marianne Postans.

Anjali Sharma
Senior Journalist & Wildlife Enthusiast

From time immemorial, India has been an important place for travel. The reasons for travel to India were many, ranging from pilgrimage, trade, and conquest to exploration and diplomacy, etc. The British travelled to India basically for trade. Invigorated by the improvements in travel and expanding British influence, there was a spurt in travel by not only British men but British women as well. These women travellers travelled for many personal and political reasons. Many travel writers came to India from different parts of the world and depicted it in their own ways.

In 1615, the Directors of the East India Company saw only two roles that women might play in India, either they would encumber what the Company was about or they could be spiritual, emotional supports for the men, to whom they were attached. Ultimately, they would play both roles, but also carve out their own. Beginning in the 1650s, hoping to counteract the influence of Catholic, primarily Portuguese, women, the Directors lifted its earlier ban and sent out the first 'fishing fleets,' hoping that the presence of English women would improve morals and provide Protestant progeny in their factories. Besides marriage, women also became partners with their husbands in trade, as well as operating businesses of their own. The period, from 1757 to about 1800, witnessed the arrival of more women, who came out to India to 'fish' for wealthy nabobs, as in the earlier period, women could be engaged in other economic ventures, specifically the managing of taverns, millinery shops, and boarding schools. By the end of the century, however, all three sources of economic independence had disappeared. The fact of empire, however, allowed women in the early nineteenth century to not only take active roles in the area of missionary work, but to explore India far more fully than they had ever been able to, before. Their journals, letters, diaries, and commentaries indicate curiosity and often affection for India, on the one hand, but also, about two decades before the Mutiny, a closing of their minds.

On a pleasant January morning in 1834, a few officers of the 15th Regiment of the Bombay Native Infantry, along with their spouses, set sail from Bombay for Kutch on a *kotiya*, a large wooden trading dhow. Among them was a young couple that was happy to live in Bombay. Thomas Postans, a 26-year old junior officer, had married his wife, Marianne, a year earlier, before taking up a position with the Bombay Army. Marianne, then 23, was passionate about drawing and writing. She began documenting her impressions of life in India almost immediately after leaving Bombay. Her sketches and notes were published in 1839 in the form of a book titled, '*Cutch or Random Sketches Taken During a Residence in one of the Northern Provinces of Western India.*'

"Few persons can leave Bombay without regret," Marianne wrote. "It's lovely scenery, hospitable society, and its civilized condition cannot but charm the English visitor, and when duty commands that he should resign its pleasures, the voyager does so with a sigh, and his boat recedes from the shore, and the gay tents on the esplanade dwindle to mere specks, full many a wistful glance does he cast back to the distant scene of life and enjoyment."

The journey from Bombay was tedious. Marianne wrote about the lack of hygiene on board the kotiya, calling it a scene of 'filth and confusion.' It must have been a relief for the passengers when, a few days later, the dhow arrived at Mandvi, a bustling port that was the summer resort of the rulers of Kutch. Kutch had a sizeable British military presence back then, a result of it coming under British suzerainty in 1819.

Mandvi impressed Marianne immediately. "On approaching the province of Cutch, the coast affords few attractions to the traveller's eye, presenting as it does, a mere sandy outline, slightly diversified by a few patches of stunted vegetation, and straggling palm trees, but on landing at Mandavie, which is the principal sea-port, an appearance of wealth and unusual bustle excites the traveller's attention," she wrote. She also seemed to like the people of the town. "The inhabitants seem a busy, cheerful, and industrious race, and their peculiarly bright and varied costume gives an appearance of gaiety to the place, which is strikingly pleasing and seldom seen in an Indian town of second rate importance."

From the English writer's note, it is clear that the town was a major shipbuilding centre at the time, and the port was busy handling ships from Red Sea ports, Ceylon, eastern Africa and China. While cotton was the main export product at the port, items from far-flung places such as African ivory, Arab dates and coffee and colourful mats, were being imported in large quantities. Marianne noticed many Arab mariners in Mandvi. "The Arab sailors, who, coming from Mocha and other ports of the Red Sea, are frequently seen here, are a wild and singularly picturesque looking race, and although wearing the flowing robe, and graceful turban, common in the East, seem strikingly dissimilar to men of other tribes." She wrote of their darker clothes and their pale blue and red turbans, that were less studiously arranged than those of Indians. "Their general bearing is that of men used to peril, but accustomed to defy it," she said admiringly.

Marianne wrote of two and three-storeyed houses with terraced roofs and rich carvings, but added that Mandvi's streets were narrow, dusty, ill-ordered and swarming with 'Pariah' dogs and bulls, that were fed by grain merchants. As in most towns in Indian princely states, the grandest structure was the ruler's palace. Marianne called it the 'most strikingly curious object' in Mandvi and said that it was 'most grotesquely ornamented by a variety of carvings, of dancing girls, tigers, and roistering-looking Dutch knaves.' The locals told her that the palace was designed by a native of Kathiawar, who was kidnapped as a child and taken to Holland.

#BHUJ

A sketch from '*Cutch or Random Sketches Taken During a Residence in one of the Northern Provinces of Western India.*' Credit: Marianne Postans.

A sketch from '*Cutch or Random Sketches Taken During a Residence in one of the Northern Provinces of Western India.*' Credit: Marianne Postans.

A sketch from '*Cutch or Random Sketches Taken During a Residence in one of the Northern Provinces of Western India.*' Credit: Marianne Postans.

Young Ruler

During her stay in the region, Marianne was a regular visitor to the palace of the Rao of Kutch. "It is a large white stone building, decorated with beautiful carvings, and fine fretwork, in the same style as the ornaments of the palace at Mandavie," she wrote. The inner passages and gateways were manned by Arab guards. She drew a sketch of the Rao and her writing suggests that she was particularly fond of the young ruler. "The present Prince Rao Daisuljee (Deshalji II) is not more than twenty two years of age, having been elected on the formal deposition of his father, Rao Bharmuljee (Bharmalji), a prince long rendered infamous by his public and private crimes," Marianne wrote. "The manners of the young Rao are peculiarly urbane and amiable, the personal attachment of his dependants is a proof of his benevolence and kindness of disposition, and the respect he observes in public, towards his unhappy father, evinces the delicacy and tenderness of his character." It was the British who had overthrown Rao Bharmalji after attacking Bhuj in 1819. As expected, the writer believed that the British presence in Kutch and the placing of Deshalji on the throne was for the greater good. "During the present reign, Cutch has regained its early tranquility and the country, from having been ravaged by freebooters and outlaws, is restored to the enjoyment of a legitimate and peaceful government." The British, initially, tried to get Deshalji to learn English and study sciences, but the *Jadeja* Rajput chiefs, who helped put him in power in place of his father, insisted that the minor's attention be on governance. In reality, the kingdom was being run by a council of regents, headed by an English captain until Deshalji became an adult. Marianne wrote that Deshalji's mother was a 'devout supporter of the *Brahminical* creed' and she had succeeded in 'embuing his mind with the darkest superstitions of his people.' The Englishwoman added, "The population of Cutch, however, being composed of nearly an equal proportion of *Mohamedans* and *Hindus*, the interests of his government require that he should conform in public to both these forms of worship, but it is probable that he retains only a heartfelt respect for that religion, whose tenets are identified with the affections and associations of his childhood."

A sketch from '*Cutch or Random Sketches Taken During a Residence in one of the Northern Provinces of Western India.*' Credit: Marianne Postans.

Religion and Pilgrimages

Given that the British public knew very little about India in the early 19th century, Marianne went into great detail when describing religious practices and popular beliefs. From her book, it appears that she was genuinely keen on observing pilgrims and pilgrimages. "Hindu pilgrims are very numerous," she wrote. "They come from the distant parts of India to perform penances at D'waka and at other places which bear a holy character." "Tanks, rivers, caves and forests were sacred for Hindus," Marianne wrote, "but not as important as temples." "Immediately, within reach of the devotees of Cutch is the temple of D'waka and that of Hinglag in Sindh." She noted that Kutch was a major transit point for Mecca-bound Muslim pilgrims from Sindh, Kandahar and Kabul. The Rao of Kutch allowed the pilgrims to pass through his territory to Mandvi, from where there would board dhows for West Asia. "Many of these poor fanatics perish on the way, from fatigue, climate and privation, combined with the effect of pestilential disease, which constantly attacks their caravans," Marianne wrote. "They experience, however, the greatest consolation in the idea of meeting death as true *Mohamedans* should, with their faces towards Mecca." Kutch also played host to Muslims pilgrims from Central Asia. "The most interesting pilgrims, I have seen in Cutch, were a party of Usbeck Tartars from Yercund, one of the western frontier possessions of China," she wrote.

Beauty of the Rann

What impressed the Englishwoman the most was the *Rann of Kutch*. "Throughout Western India, nothing could, perhaps, be found more worthy the observation of the traveller, than the great Northern Runn, a desert salt plain, which bounds Cutch on the north and east, and extends from the western confines of Guzzerat to the eastern branch of the River Indus, approaching Bhuj at its nearest point, at about the distance of sixteen miles."

She explained that the Rann was passable in the dry season but the glare from the incrustation of salt, caused by the evaporation of water, was so great that few people attempted to cross it unless they were motivated by business gains or military duty.

The beauty of the Rann awed her. "The distant aspect of the Runn resembles that of the ocean at ebb tide, and as some water always remains on it, the refraction of light produces the most beautiful and mysterious effects, decorating it with all the enchantments of the most lovely specimens of mirage, whose magic power, exerting itself on the morning mists, indues this desert tract with the most bewitching scenes."

The book is, by no means, a romanticised look at Kutch. The writer describes in detail the social ills of the region, such as infanticide and the practise of *sati*. She is also very critical of the religious beliefs and customs of Hindus and Muslims. However, there is an attempt in the book to comprehensively describe the culture of the region, its bards and bardic literature, arts and crafts, and agriculture and trade, no mean feat for a woman in her 20s in that age. Making the book more interesting are her sketches that beautifully depict the region.

The book was published in London in 1839 and met with a great deal of success. Encouraged by the reception, Marianne next wrote a two-volume book titled '*Western India*,' which also covered Surat, Saurashtra, Bombay and the Deccan. She and her husband mostly lived in India, until he died in 1846. Marianne's writing career continued for another couple of decades and included non-fiction about Sindh, Egypt, Switzerland and Gallipoli, where she travelled with her second husband during the Crimean War. She passed away at the age of 86 in Somerset in 1897. Looking back, her writings and sketches were pathbreaking for women and provide rare glimpses of 19th-century India in the English language. Born Marianne Ridgway in 1811, she wrote most of her works under the name, her marital name, of Mrs. Postans. Her work was well-received prior to the Indian Mutiny, but her sympathetic attitude got a colder response to her final work in 1857.

rajeshsharma1049@gmail.com

#RESEARCH

Protein That Can Slow MS Damage

While probing inflammatory T cells and disabling a particular gene, a routine practice to grasp its function, researchers stumbled upon a surprise.

Researchers studying multiple sclerosis in mice identified a protein that could reshape the understanding of MS (Multiple Sclerosis) treatments. The protein boosts the aggressive migration of immune cells into the central nervous system, leading to MS, an autoimmune disease affecting about 1 million adults. The intrusion of a specific type of immune cell, called Th17, is particularly harmful to the brain and spinal cord.

But when the researchers blocked the protein-integrin alpha 3, it slowed immune cells from reaching and damaging the central nervous system and improved symptoms in mice, according to a study in Science Immunology.

"We were studying the role of another gene when we stumbled upon integrin alpha 3," says co-lead author, Maria Ciofani, associate professor in Duke University's Integrative Immunobiology department. "We found that when it's missing, the Th17 cells don't develop as effectively, and more importantly, they face difficulties entering the central nervous system. This means less damage." The Th17 cells, which are vital for the body to fight fungal and bacterial infections, don't usually cause diseases. But for people with MS, these cells are mistakenly activated and end up attacking the central nervous system. The research team is the first to reveal the abundance of integrin alpha 3 on Th17 cells. The protein helps Th17 cells to form connections with other cells, which, in turn, helps the cells grow and become more aggressive. But in the absence of the protein, Th17 cells get trapped outside the blood-brain barrier, the brain's protective shield.

While probing inflammatory T cells and disabling a particular gene, a routine practice to grasp its function, researchers stumbled upon a surprise. The altered mice were fully shielded from the MS-like symptoms, typically seen in such models.

"They were walking around like nothing happened," Ciofani says. "When we looked carefully, we found that none of the Th17 cells were entering the central nervous system. It was an opportunity to look at the machinery that controls these cells."

With the help of computational approaches, Ciofani's team-including co-lead study author, Eunchong Park, identified integrin alpha 3. Park, a scientist at AstraZeneca, is a former graduate student in the Integrative Immunology department and a member of the Center for Advanced Genomic Technologies.

There's currently no drug that targets integrin on Th17 cells, but the drug natalizumab does target another kind of T-cell, Th1, that can also cause MS. But natalizumab has its side effects, emphasizing the need for alternative treatments. "One concern about targeting integrin alpha 3 is that these Th17 cells are vital for our body's defense against infections," Ciofani says. "We've done preliminary tests to see if inhibiting integrin alpha 3 stops Th17 cells from doing their protective roles, and so far, it seems that they can still do their jobs." Since integrin alpha 3 is so essential for the harmful actions of Th17 cells, it could be a potential target for new MS treatments.

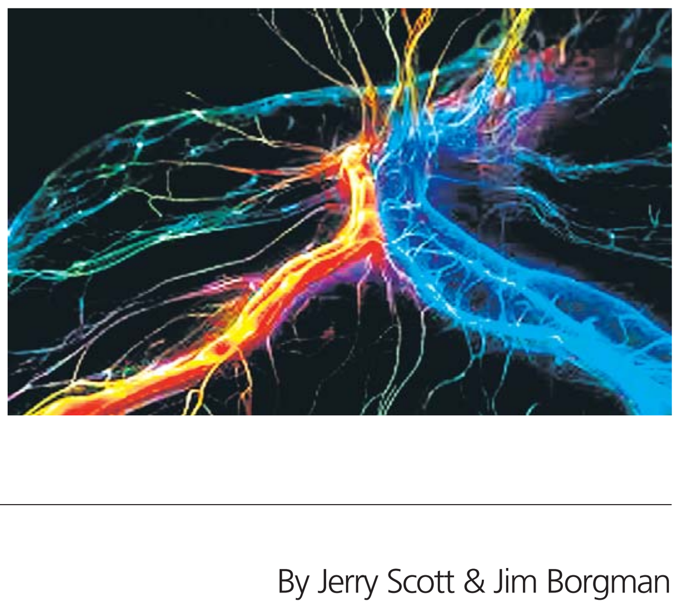

THE WALL

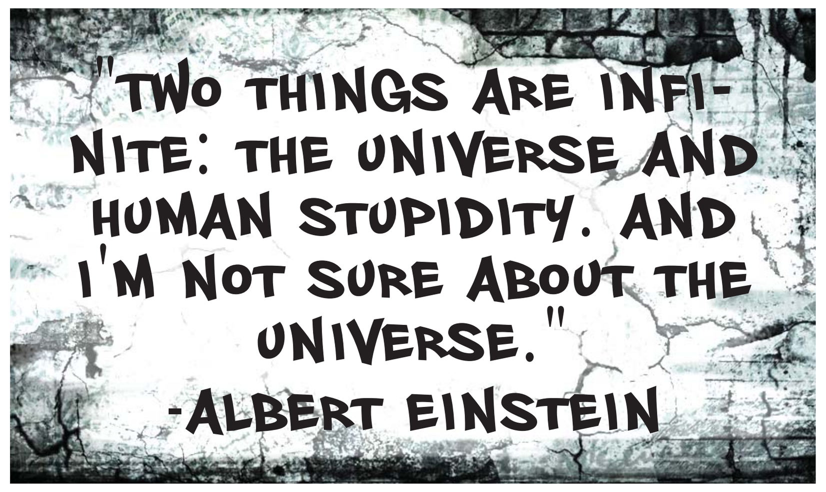

BABY BLUES

By Rick Kirkman & Jerry Scott

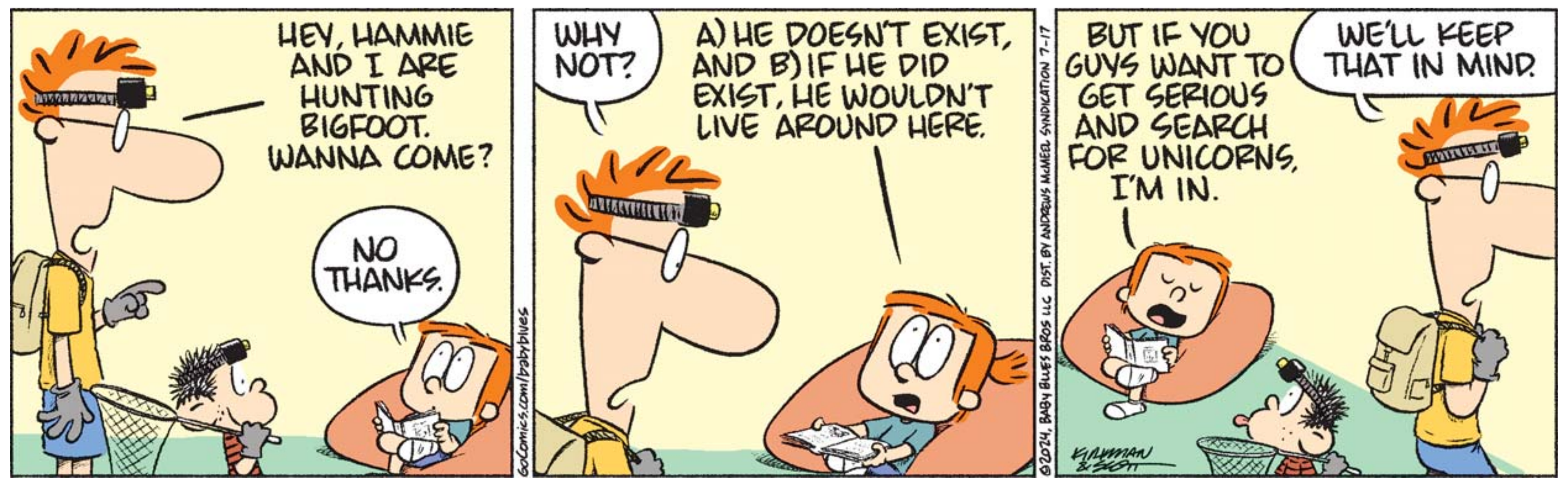

ZITS

By Jerry Scott & Jim Borgman

सैकड़ों टन अवैध बजरी का भंडारण जप्त, बजरी माफिया गैंग फरार

वन विभाग की भूमि पर आठ सौ टन बजरी का अवैध भंडारण किया हुआ था

जहाजपुर में अधिकारियों ने वन विभाग की जमीन पर अवैध बजरी के भंडारण को जप्त किया।

■ प्रशासन ने बजरी के स्टॉक को वन विभाग को सुपुर्द करते हुए सुरक्षित रखने के निर्देश दिए

देवली, (निसं)। निकटवर्ती हनुमान नगर थाना क्षेत्र में बजरी माफियाओं ने वन विभाग की भूमि पर अवैध बजरी का भंडारण किया हुआ था, जिस पर जहाजपुर प्रशासनिक एवं पुलिस अधिकारियों ने कार्रवाई करते हुए आठ सौ टन अवैध बजरी के भंडारण को जप्त किया है। पुलिस और प्रशासनिक अधिकारी मौके पर पूरी तैयारी के साथ पहुंचे लेकिन इससे पहले ही बजरी माफिया गैंग मौके से फरार हो गई। वन विभाग की भूमि पर भारी मात्रा में अवैध बजरी के स्टॉक को देख कर पुलिस व प्रशासनिक अधिकारियों के भी होश उड़ गए।

कार्रवाई दौरान हनुमान नगर थाना प्रभारी अयूब खान ने बताया कि शाहपुरा पुलिस अधीक्षक राजेश कावंत के निर्देश पर अवैध बजरी खनन और परिवहन के विरुद्ध अभियान के तहत जहाजपुर तहसीलदार, पटवारी, वन विभाग, खनिज विभाग के अधिकारियों के संयुक्त दल ने लुहारी कला गांव के वन क्षेत्र में दबिश दी। इस दौरान उक्त संयुक्त दल को वन भूमि पर भारी मात्रा में अवैध बजरी का भंडार मिला। इस दौरान बताया कि यह अवैध बजरी का स्टॉक लगभग करीब आठ सौ टन का होगा। कार्रवाई के दौरान प्रशासन ने उक्त बजरी के स्टॉक को वन विभाग को सुपुर्द करते हुए सुरक्षित रखने के निर्देश दिए।

गौरतलब है कि अभी हाल ही में 14 मई को हनुमान नगर थाना क्षेत्र के छोटी लुहारी गांव मे शाहपुरा कलेक्टर राजेंद्र सिंह शेखावत एवं एसपी राजेश कावट ने मिलकर संयुक्त कार्रवाई करते हुए 650 मेट्रिक टन अवैध बजरी के भंडारण को जब्त किया था। वहीं अभी हाल ही में 14 मई को हुई कार्रवाई के बाद भी बजरी माफिया के हौसले यहां बुलंद बने हुए हैं। इसके सबूत यह है कि यहां लूहारी गांव की वन भूमि पर फिर से प्रशासनिक अधिकारियों ने ढाई महीने बाद आठ सौ टन अवैध बजरी के भंडारण पर संयुक्त कार्रवाई करते हुए भारी मात्रा में अवैध बजरी जब्ती की कार्रवाई की है। उक्त दौरान भी कार्यवाही की सूचना लीक होने से बजरी माफिया और वाहन एवं जेसीबी मशीन लेकर मौके से फरार हो गए थे और इस बार भी वही हुआ।

राजकीय पीएम श्री उ.प्रा. विद्यालय की भूमि से अतिक्रमण हटवाया

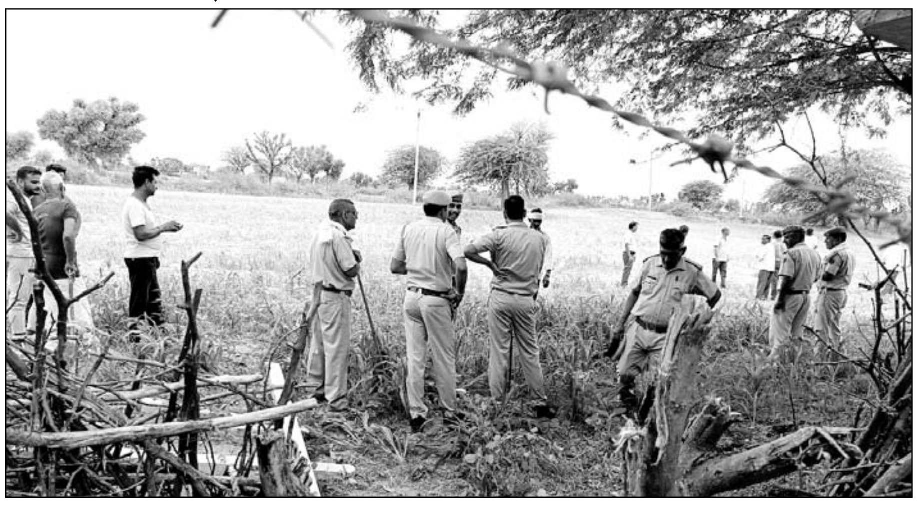

एडिशनल एसपी जयपुर ग्रामीण ने भारी पुलिस जाप्ते के साथ अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई की।

सांभरझील, (निसं)। आखिरकार सत्य की जीत हुई और लंबी कानूनी और राजनीतिक लड़ाई के बाद सरकारी भूमि पर कई सालों से अतिक्रमण कर फसल उगाने, भूमि को चारों तरफ से बाड़बंदी कर उसमें छप्पर बनाकर कब्जा करने वाले अतिक्रमी के अतिक्रमण को पूरी तरह से ध्वस्त कर दिया गया।

पंचायत बरडोटी के ग्राम पीपला की ढाणी में स्थित राजकीय पीएम श्री उच्च प्राथमिक विद्यालय की भूमि पर पिछले कई वर्षों से अतिक्रमण हो रखा था। उक्त अतिक्रमण को हटाने के लिए विद्यालय परिवार, एसएमसी सदस्य व समस्त ग्रामवासियों को तीन बार कोर्ट से आदेश लेने पड़े क्योंकि जब भी अतिक्रमण हटाने के आदेश की पालना में पुलिस प्रशासन, प्रशासन वहां पहुंचता लेकिन प्रभावशाली माने जाने वाले अतिक्रमी के आगे प्रशासन व राजस्व विभाग की टीम वापस लौट आती। बताया यह भी जा रहा है कि अतिक्रर्मी की ओर से पूरा राजनीतिक जोर भी लगा रखा था। इसी के चलते प्रशासन आदेश के बावजूद अतिक्रमण हटाने में पीछे हट रहा था। इधर गांव के लोगों ने भी मामला सीएम तक पहुंचाया और आखिरकार एडिशनल एसपी जयपुर ग्रामीण की मौजूदगी में राजस्व विभाग की टीम ने पत्थरगढी की, अतिक्रमण भूमि को चिन्हित किया। इसके बाद जेसीबी की सहायता से अतिक्रमण हटवाया गया। इस दौरान भारी पुलिस जाप्ता तैनात रहा और विद्यालय परिसर को चारों ओर से घेर लिया गया।

मौके पर एडीशनल एसपी जयपुर ग्रामीण, नायब तहसीलदार सांभर, थानाधिकारी के साथ ही गिरदावर, 6 पटवारी, 2 एसआई, 4 एएसआई व लगभग 40 पुरुष-महिला कांस्टेबलों के जाप्ते के साथ कारवाई की गई तथा विद्यालय प्रशासन को कब्जा सुपुर्द किया गया। मौके पर संस्था प्रधान कुसुम सुत्रकार, अध्यापक महेश कुमावत, पोखरमल यादव, मेवाराम गुर्जर सोहन, ग्रामीण पवन कुमार नागा, रमेश चौधरी, लक्ष्मीनारायण नागा, प्रेमचंद कुमावत, बोदूराम गुर्जर, शंकर लाल यादव, रामेश्वर कुमावत, भंवर बंजारा, मालचन्द खटीक, प्रभुराम वर्मा सहित सैकड़ों ग्रामीण मौजूद रहे। इधर अतिक्रमण हटने के बाद ग्रामीणों में हर्ष व्याप्त है और इसके लिए यहां के लोगों ने प्रशासन, पुलिस प्रशासन व मुख्यमंत्री का आभार जताया है।

ट्रेलरों की भिड़ंत में दो घायल

हादसे में दोनों वाहन क्षतिग्रस्त हो गये।

भीलवाड़ा, (निसं)। बदनोर थाना क्षेत्र के नारमंगरा गांव के निकट हाइवे-158 पर दो ट्रेलरों की आमने-सामने हुई जोरदार भिड़ंत दो युवक गंभीर घायल हो गए। घटना की सूचना मिलने पर बदनोर पुलिस मौके पहुंची और ट्रोले में फंसे ड्राईवर को बड़ी मशक्कत के बाद बाहर निकलकर हॉस्पिटल पहुंचाया।

जानकारी के अनुसार सीमेंट से भरे ट्रोले के ड्राईवर भंवर सिंह पिता खुशाल सिंह को बदनोर से ब्यावर जिला मुख्यालय रेफर किया गया और खाली ट्रक ड्राईवर को आसींद चिकित्सालय ले जाया गया। जहां उपचार जारी है। सूचना पर बदनोर थाना प्रभारी राज दीपेंद्र सिंह सहित पुलिस जाप्ता मौके पर पहुंचा एवं दोनों तरफ लगे लंबे जाम को खुलवाकर मार्ग को सुचारू करवाया।

अत्यधिक जलभराव से कॉलोनी पानी से जलमग्न

भरतपुर के खादी कॉलोनी में मुख्य सड़क मार्ग पर जल भराव हो गया।

■ जलभराव से आमजन को व बच्चों को अत्यधिक परेशानी का सामना करना पड़ रहा है

भरतपुर, (निसं)। जवाहर नगर के सामने स्थित खादी कॉलोनी में मुख्य सड़क मार्ग पर एवं सभी खाली प्लाटों में आसपास के एरिया से आ रहे पानी से जल भराव की समस्या पैदा हो गई है। जिससे आमजन को व बच्चों को अत्यधिक परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। कॉलोनी में बार-बार जल भराव की स्थिति को देखते हुए नगर विकास न्यास द्वारा माह सितंबर 2022 में कॉलोनी के सभी मार्गो के लिए सीसी सड़क हेतु 62.23 लाख की राशि स्वीकृत की गई थी।

सड़क के लिए टेंडर भी जारी किया गया था, लेकिन खादी कॉलोनी में सीसी सड़क निर्माण कार्य आज तक नहीं हुआ है। ठेकेदार द्वारा द्वारा कॉलोनी के सभी रैंप और जालियों को पिछले एक वर्ष पूर्व हटाया गया, जो अभी भी उसी स्थिति में हैं लेकिन ठेकेदार ने सीसी सड़क नहीं बनाई, जो भी कच्ची सड़क बनाई वह निर्धारित मापदंडों के अनुसार ऊंचाई व चौड़ाई नहीं ली गई, जिसके कारण कॉलोनी में जल भराव हो गया है। नगर निगम भरतपुर द्वारा सीवरेज एनओसी जारी कर दी गई है। उसके उपरांत भी सीसी सड़क नहीं बनाई है। दो वर्ष हो चुके हैं, यूआईटी के एक्सईएन डीपी शर्मा से बार-बार अनुग्रह किए जाने के बाद भी सड़क निर्माण कार्य नहीं हो रहा है ना ही उसकी गुणवत्ता की जांच कॉलोनी में आकर यूआईटी के किसी अधिकारी ने की है। इस समस्त प्रकरण का परिवाद विशेषाधिकारी मुख्यमंत्री कार्यालय जनसुनवाई केंद्र भरतपुर को भी दे दिया गया है जिसके द्वारा यूआईटी को पत्र लिखा गया है।

सभी कॉलोनीवासियों ने नगर विकास न्यास प्रशासन से कॉलोनी के जल भराव की निकासी के लिए निवेदन किया है। लेकिन पिछले तीन दिन से यूआईटी ने कोई प्रयास नहीं किया, जेईएन संतोष द्वारा खाली इंजन रखवा दिया है जिसका ठेकेदार उसको रखकर चला गया। सभी कॉलोनीवासियों ने विशेषाधिकारी मुख्यमंत्री जनसुनवाई केंद्र भरतपुर एवं जिला कलेक्टर को पत्र लिखते हुए मांग की है कि कॉलोनी के जलभराव की निकासी तुरंत की जाए तथा सीसी सड़क निर्माण कार्य को अतिशीघ्र पूर्ण किया जाए एवं पिछले निर्माण कार्य की गुणवत्ता जांच की जाए।

10 मजदूरों के मोबाइल चोरी

सीकर, (निसं)। राणीसती इलाके में कंस्ट्रक्शन साइट से 10 मजदूरों के मोबाइल चोरी होने का मामला सामने आया है। इतना ही नहीं चोरों ने मजदूरों के 10 हजार रुपए भी चुरा लिए। आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज में दो संदिग्ध नजर आए हैं। बूंदी निवासी मजदूर रमेश ने ऑनलाइन शिकायत देकर बताया है कि राणीसती रोड पर राजेंद्र हॉस्पिटल के पास मार्केट का कंस्ट्रक्शन चल रहा है, जहां पर मजदूर अस्थाई रूप से बने कमरों में रहते हैं। बीती रात यहां से मजदूरों के 10 मोबाइल और 10 हजार रुपए चोरी हो गए। सुबह जब उठे तो चोरी का पता चला।

चोरों ने उपसरपंच के कुएं पर धावा बोला

अजमेर, (कासं)। मांगलियावास थाना क्षेत्र में बीती रात अज्ञात चोरों ने उपसरपंच के कुएं पर धावा बोलते हुए कुएं पर लगी केबल, बिजली मोटर सहित अन्य सामान चुरा कर फरार हो गए। पीड़ित उपसरपंच ने थाने में अज्ञात चोरों के खिलाफ चोरी की रिपोर्ट दर्ज कराई है। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

मांगलियावास पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार मांगलियावास के उपसरपंच शंकरलाल पुत्र रामदेव पुनिया ने थाने में अज्ञात चोरों के खिलाफ चोरी की रिपोर्ट दर्ज कराई है। दर्ज रिपोर्ट में उन्होंने बताया कि क्षेत्र में सक्रिय चोर गिरोह ने बीती रात को उसके सिक्सलेन स्थित कुएं से बोरिंग की केबल, 150 फीट वायर, स्टार्टर तथा पाइप चुरा कर फरार हो गए, जिससे करीब बीस हजार का नुकसान हो गया। पीड़ित ने बताया कि चोर गिरोह द्वारा दो माह पूर्व भी पांच काश्तकार गोपीलाल पूनिया, भागचंद जाखड़, शंकर लाल पूनिया, रूपचंद तथा सोदान जाखड़ के कुएं से एक ही रात में करीब पचास हजार का सामान चुरा कर फरार हो गए थे, जिसकी पांचों कास्तकारों ने थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई थी, लेकिन आज तक चोर गिरोह का सुराग नहीं लग पाया है।

करंट से युवक की मौत

पचेवर पुलिस ने परिजनों की मौजूदगी मे पंचनामे की कार्यवाही की।

मालपुरा, (निसं)। पचेवर थाना क्षैत्र के बरोल गांव में रविवार को करंट की चपेट में आने से युवक की दर्दनाक मौत हो गई।

बरोल सरपंच हनुमान गुर्जर ने बताया कि बरोल निवासी कजोड़ (34) पुत्र कालू हरिजन जो कि रविवार को अपने घर में कपड़ों के प्रेस कर रहा था। इसी दौरान प्रेस में अचानक करंट दौड़ जाने से युवक करंट की चपेट में आ गया। युवक के चिल्लाने की आवाज सुन दौड़े परिजनों ने मकान की सप्लाई को बंद कर युवक को करंट के चंगुल से तो छुड़ा तो लिया लेकिन अचेत हुये युवक को मालपुरा के सरकारी अस्पताल लेकर पहुंचे तो चिकित्सको ने स्वास्थ्य परीक्षण कर युवक को मृत घोषित कर दिया। बुजुर्ग मां-बाप की सेवा करने वाले कजोड़ के चार छोटी-छोटी संतानें हैं। ऐसें में कजोड़ की मौत से परिवार में कोहराम मच गया। सूचना पर पहुंची पचेवर थाना पुलिस ने परिजनों की मौजूदगी मे पंचनामे की कार्यवाही कर पोस्टमार्टम के बाद शव परिजनों को सौंपा।

दो हजार रुपये का इनामी अपराधी टोंक से गिरफ्तार

गौवंश तस्करी के प्रकरण में वांछित था आरोपी

पुलिस ने गो तस्करी में वांछित ईनामी अपराधी को गिरफ्तार किया।

बूंदी, (निसं)। सदर थाना पुलिस ने गो तस्करी के प्रकरण में वांछित दो हजार रुपये के ईनामी अपराधी प्रधान पुत्र दुलाराम निवासी प्रतापपुरा थाना डिग्गी को टोंक से गिरफ्तार करने में सफलता प्राप्त की है। पुलिस अधीक्षक हनुमान प्रसाद ने बताया कि टीम ने आरोपी के संभावित स्थानों पर काफी तलाश की थी। कुछ दिन पूर्व टीम के सदस्य रणजीत घटाला को ईनामी अपराधी प्रधान के संबंध में सूचना प्राप्त हुई कि प्रधान कुछ दिन पहले की डिग्गी, इस्लामपुरा ईलाके में आया हुआ है, जिस पर टीम आरोपी को तलाश करते हुए डिग्गी, प्रतापपुरा पहुंची जहां से इनामी बदमाश को डिटेन कर बूंदी लाया गया। ईनामी काफी समय से फरार चल रहा था व बूंदी पुलिस की ओर से दो हजार रुपये का ईनाम घोषित किया हुआ है। ईनामी अपराधी को गिरफ्तार करने वाली पुलिस टीम में सदर सीआई भगवान सहाय, सहायक उप निरीक्षक हरिशंकर, कानि. प्रमोद शामिल रहे।

बुजुर्ग विधवा महिला का कच्चा घर धराशायी

कोदिया में बारिश से बुजुर्ग महिला का कच्चा घर धराशायी हो गया।

भीलवाड़ा, (निसं)। कोटड़ी उपखंड क्षेत्र के कोदिया गांव में शनिवार शाम को हुई झमाझम बारिश के चलते एक बुजुर्ग विधवा महिला का आशियाना धराशाई हो गया, जिसमें बुजुर्ग विधवा महिला निवास करती थी। ग्रामीणों ने बताया कि कोदिया गांव में शनिवार को हुई बारिश के चलते शाम को अलोल पत्नी भैरू सुथार का कच्चा केलूपोश घर धराशाई हो गया, लेकिन गनीमत रही कि इसमें कोई जनहानि नहीं हुई, हादसे के वक्त महिला घर से बाहर गई हुई थी, इसलिए वह बाल-बाल बच गई। वहीं घर में रखा खाने-पीने का सामान मलबे में दब गया। बाद में ग्रामीणों ने मलबे में दबे सामान को बाहर निकाला, घर के धराशाई होने से बुजुर्ग महिला का आशियाना उजड़ गया।

अनीता का अंतिम उपहार, अंगदान कर दे गई चार लोगों को नया जीवन

एक किडनी और लीवर का जोधपुर एम्स में तथा हृदय एवं एक किडनी का जयपुर एसएमएस में हुआ प्रत्यारोपण

ऑर्गन रिट्रीवल प्रक्रिया के बाद शव को पूरे सम्मान और प्रतिष्ठा के साथ परिवार को सौंपा।

■ जोधपुर एम्स में 25 वर्षीय महिला ने किया अंगदान

जयपुर। चिकित्सा मंत्री गजेन्द्र सिंह खींवसर की पहल पर प्रदेश में अंगदान एवं प्रत्यारोपण का मानवीय मिशन मजबूती से आगे बढ़ रहा है। इसी कड़ी में रविवार को जोधपुर में एक ब्रेन डेड मरीज के अंगदान से 4 लोगों को नया जीवन मिला।

सड़क दुर्घटना की शिकार 25 वर्षीय महिला के परिवार ने जरूरतमंदों को जीवन का उपहार देने के लिए उसके अंगदान करने का फैसला किया। संभावित प्राप्तकर्ताओं के प्रत्यारोपण के लिए दानकर्ता की किडनी, लीवर और हृदय को निकाला गया। सोटो द्वारा किए गए आवंटन के अनुसार एक किडनी और लीवर एम्स जोधपुर को तथा दूसरी किडनी और हृदय एसएमएस अस्पताल जयपुर को आवंटित किया गया। चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग की अतिरिक्त मुख्य सचिव शुभ्रा सिंह ने जयपुर एवं जोधपुर जिले के कलेक्टर्स से दूरभाष पर चर्चा कर ग्रीन कॉरिडोर सहित अन्य व्यवस्थाएं सुनिश्चित कीं। किडनी को सड़क मार्ग से एसएमएस जयपुर स्थानांतरित करने के लिए प्रशासनिक अधिकारियों एवं पुलिस की मदद से ग्रीन कॉरिडोर बनाया गया। इसी प्रकार हृदय को पहले एम्स से जोधपुर एयरपोर्ट और फिर हवाई मार्ग से जयपुर लाया गया। उसके बाद ग्रीन कॉरिडोर बनाकर हृदय को जयपुर एयरपोर्ट से सड़क मार्ग से एसएमएस लाया गया। इस तरह 25 वर्षीय अनीता 4 लोगों को नया जीवन देकर अपनी ओर से अंतिम उपहार दे गई, जो इन चार लोगों के माध्यम से जीवंत रहेगा।

जोधपुर एम्स में पहली बार किसी ब्रेन डेड मरीज का कार्डियक रिट्रीवल किया गया है, जिससे भविष्य में इस तरह की और प्रक्रियाओं का मार्ग प्रशस्त होगा। ऑर्गन रिट्रीवल प्रक्रिया को एम्स जोधपुर के ऑर्गन ट्रांसप्लांट टीम द्वारा कार्यकारी निदेशक प्रो. जीडी पुरी, ट्रांसप्लांट टीम के अध्यक्ष प्रो. एएस संधू और चिकित्सा अधीक्षक डॉ. दीपक झा की देखरेख में अंजाम दिया गया। ऑर्गन रिट्रीवल प्रक्रिया के बाद शव को पूरे सम्मान और प्रतिष्ठा के साथ परिवार को सौंप दिया गया।

इस पूरी प्रकिया के दौरान सवाई मानसिंह अस्पताल के डॉक्टर्स एवं सोटो की टीम ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ऑर्गन रिट्रीवल के लिए एसएमएस अस्पताल से यूरोलॉजी एवं कार्डियोथोरेसिक विभाग से चिकित्सकों की टीम रात को जोधपुर पहुंची। हार्ट रिट्रीवल के बाद सुबह कार्डियोथोरेसिक विभाग की टीम वापस अंग लेकर जयपुर पहुंची और यहां एसएमएस अस्पताल में पहले से तैयार ओटी में सफलतापूर्वक प्रत्यारोपण किया। इसी प्रकार सड़क मार्ग से आई किडनी का भी सफलतापूर्वक प्रत्यारोपण किया गया। एसएमएस मेडिकल कॉलेज के प्रधानाचार्य डॉ. दीपक माहेश्वरी ने बताया कि टीम में वरिष्ठ प्रोफेसर न्यूरोसर्जरी डॉ. मनीष अग्रवाल, सीटीवीएस सर्जरी के डॉ. राजकुमार यादव व डॉ. संजीव देवगढ़ा, एनेस्थिशिया से डॉ. रीमा मीना, डॉ. अंजुम सैयद, यूरोलॉजी से डॉ. रामदयाल एवं डॉ. नीरज अग्रवाल एवं टांसप्लांट कॉर्डिनेटर लीलम एवं रामरतन शामिल रहे।

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग की अतिरिक्त मुख्य सचिव शुभ्रा सिंह ने कहा है कि अंगदान के लिए फर्जी एनओसी प्रकरण के बाद विभाग ने निरंतर प्रयास कर प्रदेश में अंगदान कार्यक्रम को फिर मजबूती से खड़ा किया है। कमेटियों का पुनर्गठन करनं, एसओपी बनानं एवं अंगदान व प्रत्यारोपण की प्रक्रिया को सुगम और पारदर्शी बनाने जैसे कई महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं। इसके चलते केंद्र सरकार ने भी अंगदान की दिशा में राजस्थान की प्रो-एक्टिव एप्रोच को सराहा है।

संक्षिप्त

मांगे पूरी नहीं होने पर राशन डीलर करेंगे कार्य बहिष्कार

पावटा। विराटनगर विधानसभा के पावटा कस्बे में ऑल इंडिया फेयर प्राइस शॉप डीलर्स फेडरेशन इकाई पावटा के तत्वाधान मे राशन डीलर संघ पावटा तहसील अध्यक्ष जगदीश प्रसाद सुरेला के नेतृत्व मे राशन डीलरो ने अपनी विभिन्न मांगो को लेकर विराटनगर विधानसभा क्षेत्रीय विधायक कुलदीप धनकड को ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन सौपते हुए तहसील अध्यक्ष जगदीश प्रसाद सुरेला ने बताया कि गत माह राशन डीलरो द्वारा पूर्व मे भी मुयमंत्री को नौ सूत्रीय मांग पत्र प्रस्तुत किया गया था। लेकिन सरकार व खाद्य विभाग के अधिकारियों द्वारा मांगो पर कोई भी संज्ञान नही लिया गया है। तहसील अध्यक्ष जगदीश प्रसाद सुरेला ने मांगो को लेकर राशन विक्रेताओं को मानदेय कर्मी घोषित कर प्रति प्रति माह ३० हजार रुपए निश्चित किया जाने, गेहूं तोल में दो प्रतिशत की छीजत दी जाने, गत महिनो का बकाया कमीशन दिये जाने सहित मांगो को धरातल या अमल मे लाने की बात कहीं। मांगो के पूरा नही होने पर राशन डीलरो ने 1 अगस्त २०24 से राशन वितरण व्यवस्था को विराम देने की बात बात कही। जिसकी जिमेदारी राज्य सरकार व प्रशासन की होगी।

शाहपुरा क्षेत्र की समस्याओं को विधानसभा में उठाने पर विधायक का सम्मान

शाहपुरा क्षेत्र की समस्याएं विधान सभा में उठाने पर विधायक मनीष यादव का आभार जताया।

शाहपुरा। विधायक के निवास पर क्षेत्र के सैकड़ों लोगों ने विधायक का सम्मान कर आभार जताया। रविवार को क्षेत्रवासियों ने विधायक मनीष यादव का सम्मान कर आभार जताया और कहा कि हमारे पहले विधायक है जिन्होनें क्षेत्र की समस्याओं को ध्यान में रखकर प्रदेश की सबसें बडी पंचायत में रखा।

क्षेत्रवासियों ने कहा कि विधायक ने प्रदेश सहित हमारें क्षेत्र के विभिन्न मुद्दों जिनमें विधुत कटौती, क्षेत्र के बांधों को ईआरसीपी परियोजना में जोडनें की बात, पेयजल, कानून व्यवस्था व क्षेत्र में फैल रही मादक पदार्थो की तस्करी व नशें का व्यापार, नगरपालिकाओं में पट्टा की बात तथा टेंडर के माध्यम से हो रहे भष्टाचार सहित सफाई कर्मचारियों की भर्ती में वाल्मिकी समाज को प्राथमिकता देनी की बात, कस्बों व आस-पास के गावों में बंदरों की समस्या, क्षेत्र के अस्पतालों की व्यवस्था में सुधार की बात, विधार्थियों की छात्रवृति का मुद्दा, प्रतियोगी परीक्षाओं में डिलीट होने वालें प्रशनों का मुद्दा, पेपर लीक, किसानों को मिल रही प्रधानमंत्री किसान निधि की राशि बढानें की बात, आंगनबाडी में कार्यरत महिलाओं का मानदेय बढानें की बात आदि को विधानसभा में पुरजोर तरीकें से उठाया। क्षेत्रवासियों ने कहां कि विधानसभा में आपकी आवाज उठनें के बाद शाहपुरा में कानून व्यवस्था में सुधार हेतु एसआईटी गठित की गई, निकायों में पट्टों बनानें के लिए 30 दिन निर्धारित किये गये तथा सफाई कर्मचारी भर्ती में वाल्मिकी समाज को प्राथकिता देनी की बात भी यूडीएच मंत्री ने कही साथ ही बजट में आपकें प्रयासों से शाहपुरा नगरपालिका को नगरपरिषद में क्रमोन्नत किया गया। पीएचसी निवाणा को सीएचसी में क्रमोन्नत किया। निंदौला में 33/11 केवी विधुत सबस्टेशन दिया गया। रोड स्वीकृत हुई तथा कई दिनों से शाहपुरा में बस स्टेण्ड बनानें की मांग पूरी हुई। विधायक यादव ने क्षेत्रवासियों का आभार जताया ।

'शिक्षा से ही समाज का सर्वांगीण विकास सम्भव'

कोटपूतली। महाराजा दक्ष प्रजापति की जयंती पर रविवार को कस्बे के डाबला रोड स्थित नारायणा गार्डन में दक्ष सेवा संस्थान, प्रजापति विकास समिति व समस्त प्रजापति (कुम्हार) समाज के संयुक्त तत्वाधान में सप्तम जयंती समारोह का आयोजन किया गया। इस मौके पर विशाल रक्तदान शिविर व विशाल सम्मान समारोह का आयोजन हुआ। उल्लेखनीय है कि समिति द्वारा विगत 07 वर्षो से निरन्तर रक्तदान शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इस मौके पर रक्तदाताओं ने बढ़-चढकर भाग लेते हुये कुल 113 यूनिट रक्तदान किया। शिविर का शुभारम्भ हरिकिशनपुरा अन्नदाता धाम के श्रवणदास महाराज द्वारा किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में भाग लेते हुये विधायक हंसराज पटेल ने कहा कि शिक्षा से ही किसी भी समाज का सर्वांगीण विकास हो सकता है। प्रजापति समाज सामाजिक सरोकारों में अपना योगदान दे रहा है, यह बेहद सकारात्मक पहल है। विधायक पटेल ने कोटपूतली में प्रजापति समाज के बालिका छात्रावास हेतु जमीन आवंटन, प्रजापति समाज के मिट्टी के बर्तन बनाने वाले लोगों के लिये मिट्टी की जमीन उपलब्ध करवाना व कोटपूतली कस्बे में किसी एक मुख्य चौराहे का नाम राजा दक्ष प्रजापति के नाम पर किये जाने का आश्वासन दिया।

सार-समाचार

न्यूरोलॉजिस्ट डॉ. खंडेलवाल सम्मानित

श्रीमाधोपुर। खंडेलवाल वैश्य पटवारी धर्मशाला में रविवार को खंडेलवाल समाज द्वारा जयपुर निवासी न्यूरोलॉजिस्ट डा. कपिल खंडेलवाल का भव्य सम्मान किया। यह सम्मान उनके द्वारा शहर में दी जा रही निःशुल्क सेवाओं के लिए गया।इस दौरान खंडेलवाल समाज अध्यक्ष नंदकिशोर खुटेटा, मंत्री श्याम सुंदर रावत, सुरेश कुमार खुटेटा , सुभाष चंद्र खुटेटा, ओम प्रकाश मामोडिया, ओमप्रकाश रावत, नरेंद्र कूलवाल, बालकिशन मामोडिया, प्रेम प्रकाश, रामशरण मामोडिया, नितिन खुटेटा, चिरंजी लाल कानुनगो सहित समाज के अन्य लोग मौजूद रहें।

शोकाकुल परिवार से मिले विधायक

पावटा। गत 26 जुलाई शरुक्रवार को विराटनगर क्षेत्र भाबरु थाने के अंतर्गत ग्राम किशनपुरा स्थित नदी के पास गुरुवार देर शाम 11 हजार केवी विद्युत लाइन के करंट से लाइनमैन भैंसलाना निवासी राजेश सिंह शेखावत की मौत पर गमगीन परिवारों से मिलने जयपुर ग्रामीण सांसद राव राजेंद्र के पुत्र राजकुमार देवायुष, विराटनगर विधानसभा क्षेत्रीय विधायक कुलदीप धनकड, कोटपुतली विधायक हंसराज पटेल मृतक के गांव भैसलाणा पहुंच दिवंगत पुण्यात्मा को श्रद्धासुमन अर्पित किए। वही शोकाकुल परिवार को ढांढस बंधाते हुए कहा कि दुख की इस घडी में विवेक एवं धैर्य बनाकर बच्चों का पालन पोषण करे। समय बदलते देर नहीं लगती है। दुख की इस घडी व कठिन समय में पीडित परिवार के साथ है। और इस घटना के जिमेदार लोगों को सत से सत सजा मिले यह सुनिश्चित करना व भविष्य में ऐसी घटना को पुनरावृति नहीं इसके लिए भी ठोस कदम उठाना हमारी जिमेदारी है।

शोधपत्र लेखन प्रतियोगिता हुई

पावटा। भारतीय शिक्षण मंडल द्वारा विजन फॉर विकसित भारत शोधपत्र लेखन प्रतियोगिता का आयोजन आनंदशाला कार्यक्रम आँतेला में किया गया। शिक्षण मंडल के जीएल यादव ने शोधार्थियों को अधिक से अधिक प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए प्रेरित करते हुए कहा कि भारत की आत्मा गाँवों में बसती है एवं समृद्धि की नई ऊँचाइयों को प्राप्त करने में शोधपत्र प्रतियोगिता कारगर सिद्ध होगी। महेश सैनी ने कहा आधुनिक बुनियादी ढाँचे को निर्माण करने में युवाओ की सहभागिता रामबाण साबित होगी। विद्यार्थियों ने अपना रजिस्ट्रेशन करवा कर शोधपत्र में गहरी रुचि दिखाई। इस अवसर पर महेश सैनी, सुभाष नार्नोलिया, मनोज ठुकरान सहित अनेक गणमान्य लोग उपस्थित रहे ।

शहीद की याद में किया वृक्षारोपण

कोटपूतली। वृक्षारोपण महाभियान के तहत रविवार को ग्राम सांगटेड़ा स्थित शहीद सुरेश चंद जाट स्मारक पर वृक्षारोपण कर शहीदों को श्रद्धांजलि दी गई। शहीद वीरांगना राजबाला देवी द्वारा वृक्षारोपण किया गया। इस दौरान लोगों ने 02 मिनट का मौन धारण कर शहीद सुरेश चंद जाट को श्रद्धांजलि अर्पित की। सामाजिक कार्यकर्ता रतनलाल शर्मा ने कहा कि हमें शहीदों पर गर्व है, जिन्होंने मातृभूमि की रक्षा के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिये। वीरांगना राजबाला देवी ने शहीद स्मारक पर वृक्षारोपण कर संदेश दिया कि हम वीर शहीदों की याद में वृक्षारोपण कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित कर सकते हैं और पर्यावरण एवं वातावरण को भी शुद्ध एवं संतुलित बना सकते हैं। इस दौरान सरपंच सोनू चौधरी, पूरणमल भगत, करण सिंह, धर्मपाल जाट, संदीप चतुर्वेदी, शुभम, गीता देवी व सरोज सैन सहित अन्य लोग मौजूद रहे।

अन्तिम मतदाता सूची का प्रकाशन

कोटपूतली। अग्रवाल समाज समिति कार्यकारिणी के चुनाव के लिये रविवार को आपत्तियों के निस्तारण के पश्चात् अन्तिम मतदाता सूची का प्रकाशन कर दिया गया है। मुख्य निर्वाचन अधिकारी डॉ. ओमप्रकाश गुप्ता ने बताया कि नामांकन पत्र सोमवार व मंगलवार को दोपहर 02 से शाम 05 बजे तक दाखिल किये जा सकेगें। प्रत्येक प्रत्याशी केवल एक पद के लिये नामांकन पत्र भर सकते है। अध्यक्ष पद हेतु न्यूनतम आयु 50 वर्ष, उपाध्यक्ष, महामंत्री, मंत्री, कोषाध्यक्ष पद हेतु न्यूनतम आयु 40 वर्ष रखी गई है। नाम वापसी 31 जुलाई बुधवार को दोपहर 02 से शाम 05 बजे तक की जा सकेगी। उसी दिवस को 05 बजे के बाद चुनाव चिन्ह का आवंटन किया जायेगा। मतदान आगामी 04 अगस्त को प्रातः 08 से दोपहर 03 बजे तक अग्रसेन भवन में आयोजित होगें।

जनसमस्याओं का किया निस्तारण

कोटपूतली। विधायक हंसराज पटेल ने रविवार को निजी निवास स्थित कार्यालय पर जनसुनवाई की। इस दौरान उन्होंने क्षेत्र के विभिन्न गांवों से आये ग्रामीणों से शिष्टाचार भेंटकर उनकी समस्यायें जानी। साथ ही विभिन्न अभाव अभियोग सुनते हुये सम्बंधित अधिकारियों को मौके पर ही निस्तारण के निर्देश दिये। इस दौरान भाजपा ओबीसी मोर्चा के पूर्व प्रदेश महामंत्री एड. हीरालाल रावत, पूर्व प्रधान व वरिष्ठ भाजपा नेता विक्रम सिंह तंवर, पूर्व सरपंच जयराम सिंह गुर्जर, सरपंच देवकरण मान, सरपंच शीशराम गुर्जर व पंसस धर्मपाल गुर्जर सहित अन्य लोग मौजूद रहे।

नवीन कार्यकारिणी गठित

किशनगढ़ बास। डॉ भीमराव अंबेडकर जनकल्याण समिति की बैठक अध्यक्ष छुट्टन लाल की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक में नवीन कार्यकारिणी का गठन कर घोषणा की गई। गठित नवीन कार्यकारिणी में महासचिव प्रदीप सगवैया उपाध्यक्ष मदनलाल बाबूजी व संरक्षक गोरा सिंह को बनाया गया। इसके अलावा उपाध्यक्ष पद पर हरिराम ताराचंद मंगतूराम गजराज बट्टी राम को नियुक्त किया गया है।

बकाया बिलों का भुगतान शीघ्र करने के लिए अधिकारी को भिजवाए

- **जिला कलेक्टर की निरंतर मॉनिटरिंग से आमजन को मिल रही है राहत**

टोंक। प्रदेश के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की मंशानुसार आमजन की समस्याओं के त्वरित समाधान व निराकरण को लेकर जिला प्रशासन सजग है। जिला कलेक्टर डॉ. सौम्या झा बिजली, पानी, चिकित्सा, सड़क, वर्षा ऋतु में जल भराव, साफ-सफाई समेत अन्य परेशानियों के तत्काल समाधान को लेकर गंभीर है। उन्होंने जिले के विभिन्न विभागों के अधिकारियों को लोगों की समस्याओं का त्वरित निस्तारण करने में लापरवाही नहीं बरतने के निर्देश दिए है। इसके साथ ही, जिला कलेक्टर की निरंतर मॉनिटरिंग से आमजन को समस्याओं का निस्तारण होने से राहत मिल रही है।

जिला कलेक्टर के निर्देश पर अधिकारी एवं कार्मिक आमजन की समस्याओं का हर संभव एवं यथाशीघ्र समाधान कर रहे है। उपखंड पीपलू के ग्राम रानोली के सामुदायिक भवन की छत टपकने पर ग्रामीणों की शिकायत पर पंचायत समिति पीपलू के सहायक अभियंता रामदयाल विजय ने ठेकेदार को ग्राउटिंग कार्य एवं छत पर बजरपुट कराने के निर्देश दिए। साथ ही, ग्राम पंचायत को खराब बजरी का उपयोग नहीं करने के लिए कहा। उपखंड देवली के राजमहल के समीप रघुनाथपुरा गांव के तालाब की पाल टूटने की संभावना को देखते हुए विकास अधिकारी रानू इंकिया द्वारा तत्काल तालाब के पाल की मरम्मत कर पानी निकासी का रास्ता निकालकर ग्रामीणों की समस्या का स्थायी समाधान किया गया।

उपखंड उनियारा के ग्राम बनेठा के रूपपुरा में जल जीवन मिशन के तहत गौरव पथ को खोदकर डाली गई पेयजल पाईप लाईन को खुदाई के बाद ट्रेंच को मोटरबल कर बारिश के बाद ठेकेदार को गौरव पथ का रिपेयर गुणवत्तापूर्ण करने के निर्देश दिए है। उपखंड पीपलू के रानोली गांव में कीचड़ होने के कारण छात्र-छात्राओं को स्कूल जाने में हो रही परेशानी को देखते हुए विकास अधिकारी राजेश्वरी के निर्देश पर ग्राम पंचायत द्वारा सफाई कर पानी की निकासी करवाई गई। ग्राम पंचायत द्वारा इस रास्ते पर सीसी रोड़ मय नाली के करवाया जाएगा।

फॉरच्युनर गाड़ी चोरी

कोटपूतली। स्थानीय पुलिस थाने में एक फॉरच्युनर कार के चोरी होने का मामला दर्ज हुआ है। पुलिस के अनुसार कस्बे के डाबला रोड निवासी कृष्ण कुमार स्वामी ने मामला दर्ज करवाते हुए बताया कि उनकी गाड़ी टोयोटा फॉरच्युनर नं. एचआर 36 एएम 0777 जो कि भागीदार पवन कुमार स्वामी के साथ शिव शक्ति स्टोन क्रेशर के नाम पंजीकृत है। उक्त गाडी विगत 27 जुलाई की रात्रि को डाबला रोड़ स्थित उनके ऑफीस कार्यालय प्लॉट नं. 11 भागीरथ एनक्लेव पर ऑफीस परिसर में ही खडी थी। रविवार 28 जुलाई को सुबह कार्यालय पहुंचने पर देखा कि कार्यालय के मुख्य द्वार का ताला टुटा हुआ था। चोरों ने ऑफीस का लॉक तोडकर अन्दर की स्टैण्ड से गाडी की चाबी निकाल ली एवं उसे चुरा कर ले गये। सीसीटीवी फुटेज में अज्ञात चोर नजर आ रहे है, चोरों ने कार्यालय में टेबल के दरवाजों को लॉक तोडकर खोलकर देखा। साथ ही कार्यालय की अन्य चीजों की जाँच भी की जा रही है। गाडी के ओरिजनल दस्तावेज भी उसी के डेस्कबॉर्ड में रखे हुये है। चोरी की सूचना मिलते ही इसकी जानकारी पुलिस कन्ट्रोल रूम पर भी दे दी गई थी। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

विधायक हंसराज पटेल ने किया कांवड शिविर का शुभारम्भ

विधायक हंसराज पटेल ने कांवड़ियों का स्वागत किया।

कोटपूतली। भगवान भोलेनाथ की उपासना के पवित्र माह श्रावण मास में हरिद्वार, गंगोत्री व गौमूख समेत अन्य पवित्र तीर्थ स्थलों से गंगा जल की कॉवड लाकर भगवान शिव का अभिषेक कर रहे श्रद्धालूओं व कॉवडियों की सेवा हेतु फल-सब्जी मण्डी अध्यक्ष रमेश चंद सैनी (भगतजी) व रामौतार सैनी द्वारा कस्बे के राजमार्ग स्थित बानसूर कट पर सब्जी मण्डी परिसर के पास शिव कांवड शिविर लगाया गया है। शिविर का रविवार को विधायक हंसराज पटेल ने बतौर मुख्य अतिथि फिता काटकर शुभारम्भ किया। साथ ही आने वाले कॉवडियों का मार्ल्यापण भी किया। विधायक पटेल ने कहा कि श्रावण मास भारतीय संस्कृति व सनातन धर्म का वह पवित्र महिना है जिसमें प्रत्येक श्रद्धालू भगवान शंकर की आराधना करता है। भारतीय संस्कृति हमेशा से ही जीव मात्र की सेवा एवं विश्व के कल्याण का भाव रखती है। इस प्रकार कांवडियों की सेवा करना भी पुण्य का कार्य है।

भाजपा पदाधिकारियों ने सुनी पी.एम. के मन की बात

गोविंदगढ़ /अलवर गोविंदगढ़ कस्बे में आज यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्रमोदी जी मन की बात का प्रोग्राम गोविंदगढ़ भाजपा मंडल के सभी शक्ति केदो पर मन की बात का प्रोठााम112वे संस्करण सोने का कार्यक्रम हुआ जिसमें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने बताया की उत्तर पूर्व भारत की वर्ल्ड हेरीटेन साइड घोषित की गई मान्य मोदी जी ने आमजन से खादी ठाामोद्योग को बढ़ावा देने पर जोर देने के लिए कहा एक पेड़ मां के नाम अभियान चलाएं वह आगामी 15 अगस्त को हर घर झंडा लगाने का अभियान चलाने की अपील की गई गोविंदगढ्ढ मंडल के सभी शक्ति केंद्रओ पर कार्यक्रम देखा गया और सुना गया और बूथ संख्या 245 पर गोविंदगढ्ढ मंडल अध्यक्ष रवि सनातनी मंडल महामंत्री कुलदीप शर्मा गोविंद गौतम मीडिया प्रभारी मोहित बटवारा विक्रम सिंह कैलाश चंद शर्मा गुरुजी मंडल मंत्री प्रकाश चंद शर्मा फूल चंद मीणा पूर्व मंडी अध्यक्ष रमेश चंद मीणा एसटी भाजपा मंडल अध्यक्ष किसान मोर्चा मंडल अध्यक्ष लाखन सिंह सोलंकी मंडल मंत्री गोपाल सिंह सोलंकी नितिन सेन सम्राट सिंह नरूका मनी सिंहसूबा सिंह आईटी सेल प्रभारी राजकुमार शर्मा बूथ अध्यक्ष सिबी सैनी गिर्राज प्रसाद शर्मा एडवोकेट कीर्ति नंदन शर्मा वह वीर प्रताप सोलंकी कार्यक्रम मे मौजूद रहे वह सभी ने यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी की प्रशंसा की एवं उनके कार्यों की प्रशंसा की

पेंशनर समाज की बैठक हुई

किशनगढ़ बास। पेंशनर समाज उप शाखा अध्यक्ष सुल्तान सिंह यादव की अध्यक्षता में बैठक आयोजित हुई। बैठक में जिला संगठन मंत्री मूलचंद यादव ने गठित कार्यकारिणी सदस्यों को शपथ दिलाई और सदस्यता अभियान चलाई जाने का निर्णय लिया गया।

शाखा अध्यक्ष सुल्तान सिंह यादव ने बताया कि जिला संगठन मंत्री मूलचंद यादव की उपस्थिति में उप शाखा किशनगढ्ढ बास की हुई बैठक में सदस्यों शपथ ठाहण कराई जाने के साथ सदस्यता अभियान शुरू किए जाने सहित विभिन्न विषयों पर विचार विमर्श किया गया।

'युवाओं को आगे बढ़ाना ही मेरा संकल्प'

श्रीमाधोपुर । ग्राम के नांगल के युवाओं के आग्रह पर ग्राम के युवा जन प्रतिनिधि के के यादव ने खेल प्रतिभाओं को बढ़ाने के लिए खेल सामग्री उपलब्ध करवाई ।युवाओं ने मिलकर के के यादव को यह सूचना दी की हमारे पास खेलने की सामठाी नहीं है हमे क्रीडा सामग्री उपलब्ध करवाए और के के यादव द्वारा केवल 24 घंटो में इस समस्या का समाधान करवा कर युवाओं को खेल सामठाी उपलब्ध करवा दी और युवा हितेषी की मिशाल कायम की। के के यादव विधानसभा क्षेत्र श्रीमाधोपुर के सबसे युवा समाजसेवी के रूप में पहचाने जाते है। इन्होने वर्ष 2017 में आदर्श फाउंडेशन संस्थान एनजीओ का चुनाव कर हजारों प्रतिभाओं को तरासने का काम किया है। के के यादव ने बताया कि ठाामीण क्षेत्र में प्रतिभाओं की कमी नहीं होती लेकिन संसाधनों के अभाव से प्रतिभाएं पिछड़ जाती है।जिसके लिए रवि दत्त, आशुतोष शर्मा,विजय कुमावत, शशि वर्मा,उमेश वर्मा, ओमप्रकाश, गोविंद जांगिड़, सुनील जांगिड, गणेश शर्मा, सौरभ सैन और सैंकडों युवाओं ने युवा साथी के के यादव का आभार व्यक्त किया।

7500 किलोमीटर पैदल चलकर पहुंचेगी सना मक्का मदीना

मनोहरपुर । कस्बे के टोल प्लाजा के पास एक निजी पार्क में पैदल हज पर जाने वाली सना का मनोहरपुर पहुंचने पर अभिनंदन किया। इधर मुस्लिम समुदाय के लोगों अंसारी का शॉल व माला पहनाकर इस्तक़बाल किया। सना ने बताया शिहाब से प्रभावित होकर हज यात्रा पर जाने निर्णय कर महाराष्ट्र पालघर से पिछले 4 महीनो से पैदल हज यात्रा के लिए निकली है। उन्होंने बताया की पांच देशों से होते हुए करीब 7500 किमी की दूरी तय करेगी। अंसारी के पति अजीम शेख ने बताया की करीब 1 साल (मई 2025) में मक्का मदीना पहुचेगी। अंसारी रोज 10 से 20 किमी की पैदल यात्रा कर रही है। अंसारी ने बताया की महाराष्ट्र से शुरू हुई यात्रा गुजरात, राजस्थान पहुंची। इसके बाद दिल्ली, हरियाणा, पजाब बागा बॉर्डर, पाकिस्तान, ईरान, इराक, कुवेत, सऊदी होकर मक्का मदीना पहुचेगी। अंसारी हज यात्रा कर देश के लिए अमन चैन की दुआ मांगेगी। इस दौरान शाकिब खान, फैज स्थान, ननावेद खान, शादाब सहित बड़ी संख्या मे महिला व पुरुष मौजूद रहे।

पी.एम. के मन की बात सुनी

शाहपुरा । प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मन की बात कार्यक्रम का रविवार को भाजपा शाहपुरा शहर मंडल उपाध्यक्ष व संयोजक राजेश पलसानिया के निवास स्थान रानीजी वाली ढाणी, वार्ड नंबर 1 में आयोजन हुआ। भाजपा जयपुर जिला देहात उत्तर मीडिया सह प्रभारी सुभाष जोशी एवं विधानसभा मीडिया प्रभारी मनोज कुमार टांक ने बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मन की बात कार्यक्रम में किसान मोर्चा जिला अध्यक्ष सरदार मल यादव, मन की बात कार्यक्रम के जिला संयोजक व किसान मोर्चा जिला मंत्री रामकरण गुर्जर, मंडल उपाध्यक्ष व संयोजक राजेश पलसानिया सहित सैकड़ों स्थानीय निवासियों ने कार्यक्रम में शामिल होकर प्रधानमंत्री के मन की बात कार्यक्रम को सुना एवं भरसक प्रशंसा की।

'दिव्यांगों को अधिकार मिले'

खैरथल। जिला कलेक्टर डॉ. आर्तिका शुक्ला की ओर से जिले में प्रारंभ किए गए सशक्त खैरथल-तिजारा अभियान के द्वितीय चरण में 11 दिन तक अलग अलग उपखंड मुख्यालय पर लगे दिव्यांग जनों के लिए शिविर में 718 दिव्यांगों को प्रमाण पत्र बनाकर दिए गए। शिविर में ऐसे दिव्यांग जनों को प्रमाण पत्र बनाकर दिए गए जो वर्षों से पात्र होते हुए भी प्रमाण पत्र नहीं बनवा पाए थे। अब कलेक्टर के प्रयास है कि जिला अस्पताल पर प्रत्येक सप्ताह में एक दिन प्रमाण पत्र बनाए जाएं।

जिला कलेक्टर डॉ अर्तिका शुक्ला ने बताया कि 15 से 26 जुलाई तक दिव्यांग जनों के लिए लगाए गए शिविर में 2309 दिव्यांगों का रजिस्ट्रेशन हुआ जिसमें 718 दिव्यांगों का 40 या 40 से अधिक दिव्यांग होने पर प्रमाण पत्र जारी किया गया तथा 491 को रेफर किया गया है। कलेक्टर ने बताया शिविर में ऐसे दिव्यांगजनों के प्रमाण पत्र बनें है जो जानकारी के अभाव में पहले कभी प्रमाण पत्र बनवाने के लिए आवेदन नहीं कर पाए जिसके कारण लाभ से वंचित रहे। अभियान के तहत प्रथम चरण में दिव्यांगों का चिन्हीकरण कर एक स्थान पर सभी सुविधाएं कर शिविरों के माध्यम से मिले।

पांच दर्जन से अधिक प्रतिभावान बालिकाओं का सम्मान

देवली के जगदीश धाम परिसर में रविवार को प्रतिभावान बालिकाओं का सम्मान किया ।

- **शिक्षा के लिए किया प्रोत्साहन**

देवली, (निस) मानव सेवा संकल्प संस्थान देवली की ओर से शहर के जगदीश धाम परिसर में रविवार को प्रतिभावान बालिकाओं का सम्मान किया गया। इस मौके पर पांच दर्जन से अधिक बालिकाओं का सम्मान कर उन्हें मोटिवेट किया गया। इस मौके पर मानव सेवा संस्थान के अध्यक्ष प्रेमचंद शर्मा ने बताया कि प्रतिभा सम्मान समारोह के मुख्य अतिथि पुलिस उप महानिरीक्षक जयपुर शिवराज मीणा थे। जबकि अतिथि के रूप में देवली उपखंड अधिकारी दुर्गा प्रसाद मीणा, पुलिस उप अधीक्षक रामसिंह, तहसीलदार वीरेंद्र सिंह शक्तावत, भामाशाह नवल मंगल, बनवारी गुप्ता, रमेश जिंदल समेत मुख्य अतिथि समेत थे। जिन्होंने संबोधित करते हुए कहा कि बालिका शिक्षा को समाज के विकास व उन्नित के लिए जरूरी बताया। लेकिन वर्तमान दौर में सोशल मीडिया भटका रहा है। अतिथियों ने बालिकाओं को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म से दूर रहकर लक्ष्य बनाकर अध्ययन करने की बात कही। इसी तरह सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर बालिकाओं को अपनी फोटो आदि लगाने बचाने को कहा, ताकि इसका दुरुपयोग ना हो। अतिथियों ने सोशल मीडिया का उपयोग अपनी पढ़ाई के लिए करने को कहा। इस मौके पर देवली शहर की सभी सरकारी व निजी स्कूलों में कक्षा 10 एवं 12 में 85 फीसदी से अधिक अंक प्राप्त करने वाली प्रथम दो स्थानों वाली बालिकाओं को सम्मानित किया गया। बालिकाओं को दुपट्टा ओढ़ाकर प्रशस्ति पत्र व मोमेंटो को देकर सम्मानित किया गया। इस दौरान संस्थान के अध्यक्ष प्रेमचंद शर्मा, संरक्षक लक्ष्मीकांत पारीक, अशोक माहेश्वरी समेत पदाधिकारी मौजूद थे।

पूर्व विधायक ने पौधे रोपे

चौमूं / कालाडेरा (निसं) प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के एक पेड़ मां के नाम लगाने के एक अभिनव आव्हानप पर आज विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस के अवसर पर पूर्व विधायक रामलाल शर्मा के मुख्यअतिथि में नगर मंडल चौमूं के वार्ड नं-44 के बूथ संख्या 213 में सेरावत फ़ार्म हाउस पर कार्यकर्ता और वार्ड वासियों की उपस्थित में वृक्षारोपण किया। प्रकृति के संरक्षण के लिए अपना योगदान सुनिश्चित करने और इसके निर्वहन करने का संकल्प लिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता गजानंद कुमावत ने की। इस दौरान न.पा.पूर्व चैयरमैन आशिष दुसाद, नानूराम सैनी, कालाडेरा मंडल अध्यक्ष बनवारी शर्मा, भाजपा नगर मंडल महामंत्री महेश सेरावत, महिला मोर्चा अध्यक्ष सुमन सैनी, महामंत्री वंदना दीक्षित, पूर्व प्रधान महेश मीणा, रामरतन मुनीम, सीएम खटीक, रामवतार कुलदीप, मुकेश जांगिड, ब्रजेश सैनी, रामावतार कुलदीप मोहनलाल यादव संदीप शर्मा धर्मेंद्र बंजारा संदीप कुमावत सूणीलाल सैनी रामेश्वर दिनेश सैनी राजकुमार यादव दिनेश कुमावत रामचंद्र सैनी बबलू जगदीश जाट कालूराम यादव डाँ पंकज सहित कार्यकर्ता एवं वार्डवासी उपस्थित रहे।

संक्षिप्त

'गीता को दैनिक जीवन में पढ़ना चाहिए'

टोंक। शहर स्थित मैत्री सेवा संघ टोंक द्वारा गीता ज्ञान परीक्षा 2024 पुरस्कार समारोह गौरवपूर्ण तरीके से गंगा जमुना गार्डन में आयोजित किया गया। मैत्री सेवा संघ के महासचिव आदर्श किशोर शर्मा ने बताया कि उक्त कार्यक्रम में लालेश्वर मठ के महंत विमर्शानंद महाराज का पदार्पण हुआ एवं इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि टोंक जिला कारागार अधीक्षक वैभव भारद्वाज एवं अध्यक्षता टोंक जिला भाजपा अध्यक्ष एवं पूर्व विधायक अजीतसिंह मेहता ने की। कार्यक्रम के दौरान जिला कारागृह अधीक्षक वैभव भारद्वाज ने विद्यार्थियों के जीवन में गीता के महत्व पर प्रकाश डाला। और भाजपा जिला अध्यक्ष एवं पूर्व विधायक अजीत सिंह मेहता ने गीता को महनीय ग्रंथ बताते हुए इसे विद्यालय पाठ्यक्रम में शामिल करने की अनुशंसा की बीकानेर से पधारे हुए महंत विमर्शानंद गिरि महाराज ने अपने वक्तव्य में कहा कि गीता को दैनिक जीवन से जोडकर पढना चाहिए।

जानवर के काटने से बालिका की मौत

मालपुरा (निस) नगरपालिका शहरी क्षेत्र से सटी अजमेरो की ढाणी मे रविवार को खेत में परिजनों के साथ गई बालिका को जहरीले जानवर के काट लेने से बालिका की मौत हो गई। सामाजिक कार्यकर्ता गजेन्द्र कुमार वर्मा ने बताया कि अजमेरो की ढाणी निवासी रमेश वर्मा की बेटी ज्योति वर्मा जो कि रविवार को अपनी मां के साथ खेत पर गई थी। जहां जहरीले जानवर के काट लेने से बालिका अचेत हो गई। परिजन अचेतावस्था मे बालिका को लेकर मालपुरा अस्पताल लेकर पहुंचे। जहां उसे अचानक उल्टी होने के कुछ ही पल मे बालिका ने दम तोड दिया।

फरार वांछित आरोपी गिरफ्तार

टोंक। जिला पुलिस अधीक्षक संजीव नैन के आदेशानुसार पीपलू वृताधिकारी देशराज कुलदीप व थानाधिकारी ओमप्रकाश द्वारा गठित विशेष दल ने एक वर्ष फरार वांछित आरोपी नेहना पुत्र उर्फ लखपत पुत्र बीरसिंह जाति लोदी राजपूतनिवासी फतेहपुर नगर शिकरी, चार हिस्सा थाना फतेहपुर तहसील किरावली जिला आगरा (उत्तरप्रदेश) हॉल निवासी जवाहर नगर नीम दा गेट भरतपुर को गिरफ्तार किया। आरोपी टॉप-10 अपराधियों में शामिल है, जिसको बाद अनुसंधान के न्यायालय में पेश किया जाकर न्यायिक अभिरक्षा में रखा गया है।

कब्रिस्तान में किया पौधा रोपण

चाकसू(निस) रविवार को कस्बे के मुस्लिम भड़भूजा समाज युवा वेलफेयर सोसयटी ने एक पेड़ माँ के नाम अभियान के तहत कब्रिस्तान में वृक्षारोपण किया। गौरतलब है कि पिछले दिनों राज्य सरकार की ओर से एक पेड़ माँ के नाम अभियान से प्रेरित होकर यंहा पर भड़भूजा समाज ने भड़भूजा समाज युवा वेलफेयर सोसायटी के नेतृत्व में कब्रिस्तान को हरा - भरा बंनाने के लिए वृक्षारोपण कार्यक्रम सफलता पूर्वक सम्पन्न किया। जिसमे कई छायादार पेड लगाए साथ ही उनकी देखरेख का जिम्मा भी लिया गया। इस अवसर पर सदर हबीब भाई दौलतपुरा मेंबर रज्जाक खान, जमाल खान, जाकिर कोटखावदा, सलीम पेंटर समसुद्दीन,इमरान भाई, बादशाह, पप्पू खा, इमरान (सैनू) सांगानेर ,बबलू खा, छोटू खान, कमालुद्दीन, रियाजुद्दीन, इंतियाज, सिराज, इमरान, बुन्दु भाई, शाहरुख, आशिफ सहित कई लोग मौजूद रहे।

ए.डी.जी. कोर्ट खोलने की मांग को लेकर बंद रहा देवली

देवली (नि स) शहर में रविवार को सामाजिक संगठन एवं सर्वदलीय संगठनों की ओर से यहां एसीजेएम व एडीजी कोर्ट खोलने सहित अन्य मांगों को लेकर मुख्यमंत्री के नाम उपखंड अधिकारी दुर्गा प्रसाद मीणा को फिर से ज्ञापन सौपा गया। जानकारी के अनुसार इससे पहले संगठन के देवली बंद के आव्हान के तहत रविवार को शहर के सभी बाजारों में प्रतिष्ठान बंद रहे।

शहर के व्यस्ततम बाजारों में

■ व्यापार संघ सहित संगठनों के पदाधिकारियों ने जुलूस निकाला

सन्नाटा पसरा रहा। इससे पहले ममता सर्किल पर अभिभाषक संघ देवली, व्यापार महासंघ, विभिन्न राजनीतिक संगठन के नेता, सामाजिक संगठनों के पदाधिकारी, सदस्य एकत्र हुए यह सभी जुलूस के रूप में नारेबाजी करते हुए मुख्य बाजार मैं घूमते रहे। इस आंदोलन में अधिवक्ता संघ और सर्वदलीय संगठन शाहिद क्षेत्र वासियों की मांग है कि। देवली में एसीजेएम और एडीजी कोर्ट खोलना अति आवश्यक है। तो वहीं उप जिला अस्पताल भी जल्द से जल्द स्थापित किया जाए। इन्हीं मांगो को लेकर रविवार के दिन देवली के बाजार बंद रहे। तो वही सभी संगठनों का संयुक्त

देवली शहर में सामाजिक संगठन एवं सर्वदलीय संगठनों की ओर से एडीजी कोर्ट खोलने सहित अन्य मांगों को लेकर मुख्यमंत्री के नाम उपखंड अधिकारी दुर्गा प्रसाद मीणा को फिर से ज्ञापन सौपा।

जुलूस मुख्य बाजार से नारेबाजी करते हुए तहसील परिसर पहुंचा। और उक्त मांगों को जल्दी पूरा करने के लिए मुख्यमंत्री के नाम उपखंड अधिकारी को ज्ञापन दिया गया।

ज्ञापन में बताया कि अभिभाषक संघ देवली एवं न्यायालय परिसर में कार्यरत डीड राइटर, टाइपिस्ट, स्टांप वेंडर पिछले 15 दिनों से अतिरिक्त मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट एवं न्यायालय अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश खोलने की मांग को लेकर धरना, प्रदर्शन व क्रमिक अनशन पर है। लेकिन अभी तक राज्य सरकार की ओर से आश्वासन नहीं मिला। जबकि देवली में उक्त न्यायालय खोलने के लिए सभी निर्धारित मापदंड पूरे हैं।

इसी तरह बजट में देवली के उप जिला अस्पताल को शहर में ही खोले जाने की मांग की है। इसके अलावा देवली में गौण कृषि उपज मंडी स्थापित करने की मांग की। वही फल सब्जी विक्रेताओं पर व्यापारियों के लिए भी अलग से भू आवंटन किए जाने की मांग उठाई गई। इस दौरान अभिभाषक संघ अध्यक्ष महावीर सिंह राठौड़, अधिवक्ता छीतर सिंह, अजीत सिंह, भारत सिंह,अनिल बुरेठिया ललित चौहान ,सागर चौहान बाबूलाल मीणा, संदीप कटिया, बंसीलाल कलवार , भीमराज जैन, रतन मंगल, उमाशंकर खूटेटा, जितेंद्र सिंह चौधरी, बेनी प्रसाद टाक, रीको अध्यक्ष कृष्ण कुमार गोयल ने संबोधित किया और पुरजोर तरीके से मांग उठाई है।

भाजपा जिलाध्यक्ष के नेतृत्व में 11 पेड़ लगाए

अलवर। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के मन की बात कार्यक्रम के अंतर्गत आज काला कुआं शक्ति केंद्र के बूथ संख्या 191 पर जिला अध्यक्ष अशोक गुप्ता के नेतृत्व में बड़ी संख्या में भाजपा कार्यकर्ता ,पदाधिकारी एवम आमजन ने यह कार्यक्रम सुना।

इस अवसर पर अपने संबोधन में जिला अध्यक्ष अशोक गुप्ता ने कहा कि देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मन की बात कार्यक्रम वास्तविक रूप में भारत के आमजन के मन की बात है जिसमें संपूर्ण भारतवर्ष के विभिन्न क्षेत्रों की विविधताओं के मोतियों से देश एक सूत्र में बंधा हुआ है देश के आम जनमानस के विभिन्न विषय के संबंध में चर्चा हों या पर्यावरण संरक्षण का संदेश मन की बात के माध्यम से सभी की बात की जाती है। कार्यक्रम के अंत में एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत जिला अध्यक्ष अशोक गुप्ता के नेतृत्व में 11 पेड लगाए गए। इस अवसर पर जिला मीडिया प्रभारी लक्ष्मी नारायण गुप्ता ,मंडल अध्यक्ष मनोज चौहान, महिला मोर्चा जिला अध्यक्ष सुनीता सैनी, किसान मोर्चा जिला संयोजक, जितेंद्र राठौर, मंडल महामंत्री नरेन्द्र सिंह राठौड़, उपाध्यक्ष आशीष अरोड़ा, महिला मोर्चा मंडल अध्यक्ष ममता कंवर, किसान मोर्चा मंडल अध्यक्ष रविराज सिंह चौहान , कमल गुप्ता, मोहनलाल गुप्ता,कश्मीरा देवी, रामेश्वर सैनी अजय कुमार ,मोहित शर्मा, आशा खंडेलवाल सहीत सैकडों की संख्या में भाजपा कार्यकर्ता पदाधिकारी व आमजन उपस्थित रहे।

सार-समाचार

संतों का किया सम्मान

श्रीमाधोपुर। कस्बे के गौ गढ़ ब्रह्मचारी आश्रम पर रविवार को परमहंस शिव स्वरुप बाबा आत्मानन्द ब्रह्मचारी जी महाराज की 70वी. पूण्यतिथि (बरसी) मनाई गई। महंत सतगिरी महाराज ने बताया कि सुबह सवा सात बजे से विद्वान विप्रजनों द्वारा वेद मंत्रों के साथ गुरु महाराज आत्मानंद ब्रह्मचारी जी महाराज की मुर्ति का पंचामृत अभिषेक कर नया अचला धारण करा गया। सवा नो बजे से 22 जुलाई से चल रहे नित्य महामृत्युंजय जप व पार्थिव शिवलिंग रूद्राभिषेक कर महाआरती के बाद हुए संत सम्मेलन में धनराज गिरी कुराली पंजाब, उत्तराखंड बागेश्वर से शंकर गिरी महाराज, हरियाणा से शिवानंद सरस्वती जी महाराज, शेखावाटी से हीरापुरी जी महाराज ने भक्तों को आशीर्वचन दिया। महंत सतगिरी महाराज द्वारा संतो के सम्मान के बाद भण्डारा शुरू हुआ जिसमें हजारों भक्तों ने बैठकर लड्डू, भुजिया, पुडी सब्जी की प्रसादी ठाहण की। इस मौके पर भजनों की प्रस्तुति भी दी गई।

34 भेंडे चोरी

चाकसू,(निस) शिवदासपुरा थाना क्षेत्र में 34 भेंडे बाडे से चुराने का मामला सामने आया है। भेड मालिक ने चोरों के खिलाफ नामजद मामला दर्ज करवाया है। भेड मालिक किशन रेबारी पुत्र बादर राम रेबारी उम्र 31 वर्ष निवासी रेवारियो कि ढाणी, विमलपुरा ने पुलिस को दी रिपोर्ट में बताया कि दिनेश मोगिया पुत्र राजाराम, रतन मोगिया निवासी छापर कि हाणी, जंगलात जयपुर एवं अन्य व्यक्तियों द्वारा हमारे हाल निवास विशनपुरा, सतोषपुरा तहसील चाकसू जिला जयपुर में एक स्किम राधा गोविन्द के अंदर हमारी 254 भेंडे थी। अभियुक्तों ने आस पास के खेतों कि जाली को काटते हुए हमारे बाडें से 34 भेड़े ले गए। घटना के दो दिन पहले से दिनेश व स्तन मोगिया डेरे के आस-पास चक्कर काटता हुआ देखा गया था। हमारे आवाज लगाने पर वह वहाँ से भाग जाता था। हम लोग घटना की रात 12 बजे तक तो जाग रहे थे। सुबह 8 बजे पता लगा कि प्रार्थी कि भेडे चोरी हो गई, पुलिस को 100 नम्बर भी किया लेकिन पुलिस कि तरफ कोई नहीं आया तथा हमनें आस पास खोज कि तो पता चला कि खेत कि जालिया काटी हुई है। खेतो में लगभग 5-6 व्यक्यिों के पेरो के निशान व जाली पर एक व्यक्ति का तोलिया भी बरामद हुआ। वही पीड़ित अपने दोस्त जयराम व रामस्वरूप अभियुक्त दिनेश के घर पर भी गए लेकिन वह घर पर नहीं था। पीड़ित ने बताया कि भेड़ो को कुछ समय पहले ही उधार खरीद कर लाया था एवं आर्थिक खर्चा इन्हीं भेड़ो से ही चलता था तथा भेंडे चोरी होने से पीड़ित को बहुत नुकसान हुआ है। वही पुलिस ने मामला दर्ज कर आगे की कार्यवाही शुरू कर दी है।

बैडमिंटन में टोंक का शानदार प्रदर्शन

मालपुरा, (निस) राज्य पीएम श्री जवाहर राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कुचामन सीटी मे आयोजित युथ राज्य स्तरीय बाल बैडमिंटन प्रतियोगिता मे टोंक की जिला स्तरीय टीम ने शानदार खेल का प्रदर्शन करते हुये स्वर्ण पदक पर कब्जा जमाया। मोहम्मद इस्लाम नकवी ने बताया कि प्रतियोगिता मे सेमीफाईनल मुकाबला हनुमानगढ से हुआ। जिसमे टोंक का शानदार प्रदर्शन रहा। वही फाईनल मुकाबले मे बीकानेर को टोंक ने दो सीटो से हरा कर जीत का परचम लहराया। टीम मे शामिल छात्रा वर्ग मे कृष्णा शर्मा, छात्र वर्ग मे हर्षित जांगिड को उत्कर्ष्ट खिलाडी का पुरस्कार मिला। टीम के स्वर्ण पदक जीतने पर जिला बाल बेडमिन्टन संघ के जिलाध्यक्ष मूलशंकर शर्मा,मोहम्मद इस्हाक नकवी,युसुफ पटेल, किशनलाल जाट,कन्हैयालाल सैनी, मुन्नवर अली, मारूफ, अली हसन सहित प्रशिक्षक अब्दुल्ला नकवी, मोहम्मद ईस्लाम ने खिलाडियो को बधाई दे उज्जवल्ल भविष्य की कामना की।

डॉ. शर्मा भारत गौरव से सम्मानित

टोंक। श्रीरघुनाथ धाम ज्योतिष एवं आध्यात्म शोध संस्थान जयपुर द्वारा आयोजित ज्योतिष महाकुम्भ, ज्योतिष शोध संगोष्ठी विद्वान् सम्मान समारोह महल रजवाडा रिसोर्ट जयपुर में शनिवार को आयोजित किया गया। आयोजक स्वामी सोरभ राघवेंद्राचार्य महाराज ने मनु ज्योतिष एवं वास्तु शोध संस्थान टोंक के निदेशक महर्षि बाबूलाल शास्त्री एवं महासचिव डॉ बालकिशन शर्मा दूनी को उनके द्वारा भारतीय सनातन वैदिक संस्कृति एवं वेद ज्योतिष ज्ञान, वास्तु शास्त्र के प्रति किये जा रहे विधाओं के प्रचार-प्रसार व संरक्षण में उत्कृष्ट योगदान, जन सेवा, प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिन्ह देकर विशेष रूप से सम्मानित किया।

डॉ. नरूका सम्मानित

निवाई। राहोली के शिक्षाविद डॉ. योगेन्द्रसिंह नरूका को जयपुर के इण्डियाना पैलेस में आयोजित विशिष्ट प्रतिभा सम्मान समारोह में ठामीण शिक्षा में बच्चों के ड्रॉप ऑउट रेशो को कम करने, बालिका शिक्षा प्रोत्साहन, ठामीण प्रतिभाओं को राज्य, राष्ट्रीय स्तरीय पर पहचान दिलाने व शैक्षिणक नवाचारों के लिए एक्सीलेंसी आइकॉनिक अवार्ड समारोह में बेस्ट प्रिन्सिपल ऑफ द ईयर टाइटल से सम्मानित किया गया। डॉ. नरूका को यह सम्मान जानी मानी अभिनेत्री ईशा देओल ने प्रदान किया है। गौरतलब हो कि शिक्षाविद डॉ. नरूका ने बधिर समुदाय के कलाकारों की कला उन्नयन के लिए डेफ आर्ट मूवमेंट फाउंडेशन की स्थापना भी की है।

भ्रुण मिलने फैली सनसनी

निवाई। बरोनी पुलिस थाना क्षेत्र मे बनास नदी में पिलर नम्बर तीन के पास एक नवजात बच्चे का भ्रुण मिला है। जिससे क्षेत्र में सनसनी फैल गई। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि उक्त घटना से एक बार फिर से मां की ममता तार-तार हुई है। जो समाज में शर्मशार व निन्दनीय है। बरोनी थानाधिकारी ओमप्रकाश ने बताया कि बनास नदी में पिलर के पास एक नवजात बच्चे का भ्रुण मिला है। सूचना पर थानाधिकारी मय जाप्ते के मौके पर पहुंचे और भ्रुण को कब्जे मे लेकर सआदत अस्पताल टोंक की मोर्चरी में रखवाया। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

स्वीकृत कार्यो को तीन दिन में शुरू करने के आदेश

मालपुरा, (निस)जिला परिषद सदस्य छोगालाल गुर्जर ने बतया कि 15वें वित्त आयोग एवं राज्य वित्त आयोग जिला परिषद मद से मालपुरा उपखण्ड क्षेत्र में स्वीकृत कार्य पूर्ण नही करवाने की सीईओ से की शिकातय के बाद सीईओ प्रतिष्ठा पिलानिया पंचायत समिति विकास अधिकारी को आदेशित कर तीन दिवस मे कार्य शुरू करवाने के निर्देश दिये। डीआर गुर्जर ने बताया कि क्षेत्र के डिग्गी, पारली, डूंगरी, मोरला, कुराड, चबराना, सिंधोलिया, सोडा, सीतारामपुरा, धौली, किरावल, चबराना, आंटोली मे हैण्डपम्प व टयूबवेल सहित नाला निर्माण आदि कार्य स्वीकृत होने पर मार्च मे कार्यादेश शुरू करने के निर्देश दिये गये थे लेकिन आज दिनांक तक भी कार्य नही करने की शिकायत की गई। तथा मामला जिला परिषद की बैठक मे भी उठाया गया था। पंचायत समिति विकास अधिकारी द्वारा कार्य शुरू करवाने से पूर्व ग्राम पंचायत को टेण्डर इत्यादि की प्रक्रिया पूर्ण नही करने से पंचायते उक्त कार्य शुरू नही कर सकती। मामले की शिकायत जलदाय मंत्री कन्हैयालाल चौधरी से कर जल्द कार्य शुरू करवाने की मांग गई।

सिलीसेढ़ बांध के बहाव क्षेत्र में बने होटल और चारदीवारी पर कार्रवाई की तैयारी

अलवर। लम्बे समय से मीडिया की सुर्खियों में रहे सिलीसेढ बांध के भराव क्षेत्र पर किए गए सोलह अतिक्रमणों पर प्रशासन ने तोड़ने के नोटिस चस्पा कर दिए लेकिन लोगों का कहना है कि यह तो प्रशासन ने मीडिया को शांत रखने के मजबूरी में जारी किए है जबकि वास्तविकता तो यह है कि इस क्षेत्र में अभी दर्जनों ऐसे अतिक्रमण है जो रसूकदारों के है इनमें राजनेता, अधिकारी और उद्योगपति सहित बडे बिल्डर्स शामिल है।

यहां के निवासियों ने प्रशासन पर आरोप लगाते हुए कहा कि यहां जिला प्रशासन ने बडे मगरमच्छों को बचाने के लिए छोटी मछलियों को अपने जाल में फांसा है उन्होंने कहा कि कानून सभी के लिए समान होना चाहिए सभी अतिक्रमणों को ध्वस्त किया जाना चाहिए।

सिलीसेढ़ के बहाव क्षेत्र में बने होटल और चारदीवारी पर कार्रवाई की तैयारी हो शुरू हो गई है। लंबी जद्दोजहद के बाद शनिवार को सिंचाई विभाग की टीम ने सभी 16 अतिक्रमणकारियों को नोटिस दिए। मौके पर खाली पड़े प्लॉट की चारदीवारी पर नोटिस चस्पा भी किए गए। विभाग ने लिखा है कि आपके द्वारा सिलीसेढ़ की उपरा से जयसमंद को जाने वाले नाले/जयसमंद के कैचमेन्ट के बहाव क्षेत्र में अतिक्रमण किया हुआ। आपको नोटिस के जरिए आदेशित किया जाता है कि अतिक्रमण को आप स्वयं के खर्चे पर 07 दिवस में हटा लें। अन्यथा विभाग द्वारा अतिक्रमण हटाने की कानूनी एवं विभागीय कार्रवाई अमल में लाई जाएगी। जिसकी समस्त हर्जे-खर्चे की जिम्मेदारी आपकी होगी।

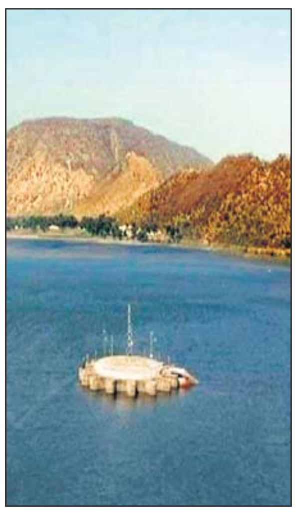

बांध भराव क्षेत्र के 16 अतिक्रमणों को तोड़ने के नोटिस चस्पा करने के बाद आगे की कार्रवाई शुरु।

एक और मोटरसाइकिल चोरी

देवली (नि स) शहर में लगातार हो रही बाइक चोरी की वारदातों पर अंकुश लगाने एवं बिना नंबर की बाइकों पर देवली थाना पुलिस ने कार्रवाई शुरू कर दी है। लेकिन इसी बीच शहर के साकेत कॉलोनी से शनिवार को चोरों ने एक मोटरसाइकिल पर हाथ साफ कर लिया।

देवली थाना प्रभारी राजकुमार नायक के अनुसार चोरी की वारदातों का खुलासा करने तथा संदिग्ध बाइक, बिना नंबर की बाइक के विरुद्ध कार्रवाई करने को लेकर तीन टीम गठित की गई। जानकारी के अनुसार देवली शहर में जहाजपुर तिराहे पर सहायक उप निरीक्षक करण सिंह, यातायात प्रभारी इमरान खान, परशुराम सर्कल पर हेडकांस्टेबल ओमप्रकाश यादव, पेट्रोल पंप चौराहा पर सहायक उप निरीक्षक लक्ष्मण सिंह समेत पुलिसकर्मियों ने संयुक्त रूप से वाहनों पर कार्रवाई शुरू की।

इस दौरान बिना नं की 28 संदिग्ध बाइक व दो संदिग्ध टेंपो बिना नंबर के मोटर व्हीकल अधिनियम 207 के तहत जब्त किए गए। उक्त कार्रवाई से वाहन चालकों में हड़कंप मच गया। देखते ही देखते थाना परिसर में बाइकों का जमावड़ा लग गया। यहां देखने वाली बात तो यह है कि एक और तो वाहन चोरी की वारदातों पर अंकुश लगाने के लिए पुलिस कार्रवाई करती रही। वहीं दूसरी ओर साकेत कॉलोनी से बेखौफ चोर बाइक चुरा कर ले गया। जानकारी के अनुसार यह बाइक कॉलोनी निवासी प्रेम ओझा की है। जो साकेत कॉलोनी स्थित अपने मकान के अंदर गया था कि वहीं दो युवक आए जिन्होंने बाइक चोरी करने के लिए बाइक में तत्काल चाबी लगाई और मौके से बाइक लेकर फरार हो गए।उल्लेखनीय है कि देवली में बाइक चोरी की वारदात बेलगाम हो चुकी है। वही इन चोरों ने पुलिस की नाक में दम कर रखा है। लेकिन स्थानीय पुलिस को चोरों तक पहुंचने की सफलता नहीं मिल रही है।

वृक्षारोपण व पर्यावरण संरक्षण पर संगोष्ठी हुई

अलवर। दी इंसिटिट्यिुशन ऑफ इंजीनियर्स (इंडिया) अलवर लोकल सैन्टर पर मुख्यमंत्री सघन वन (एक पेड़ मां के नाम) के तहत वृक्षारोपण एवं पर्यावरण संरक्षण पर संगोष्ठी को आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम दी इंसिटिट्यिुशन ऑफ इंजीनियर्स (इंडिया) अलवर लोकल सैन्टर एवं वन विभाग अलवर के सामूहिक तत्वाधान में आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता चैयरमेन इंजि. अशोक गुप्ता (मेठी) ने की कार्यक्रम में पधारे मुख्य पर्यावरण मित्र राजेन्द्र कुमार हुड्डा (उप वन संरक्षक) अलवर ने वृक्षारोपण की उचित तकनीक के बारे में पीपीटी के माध्यम से पेड कैसे लगाये और वृक्षों की उपयोगिता के बारे में विस्तार से बताया। एवं मुख्य वक्ता इंजी. राजदीप शर्मा ने पर्यावरण संरक्षण के महत्व के बारे में बताया। कार्यक्रम में विभिन्न पर्यावरणविदो ने भी अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम में पर्यावरण मित्र बीना गुप्ता ने पर्यावरण संरक्षण पर कविता वाचन किया। कार्यकम में विभिन्न सामाजिक एवं व्यापारिक संस्थाओं को उप वन संरक्षक द्वारा प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में निर्मल इंस्ड्रिज के पर्यावरण संरक्षण हेतु किये गये प्रयासों के लिए विशेष रूप से सम्मानित किया गया। मंच का संचालन इंजी. पकंज तिवारी के द्वारा किया गया।

विधायक ने सुनी लोगों की समस्याएं

विराटनगर। विधानसभा क्षेत्रीय विधायक कुलदीप धनकड ने रविवार को अपने ग्राम भांकरी स्थित निवास स्थान पर जन सुनवाई कार्यक्रम के तहत शहरी व ग्रामीण क्षेत्र से आये लोगों की समस्याओं को विस्तारपूर्वक सुना और उन्होंने समस्याओं को सुनने के उपरांत सबन्धित अधिकारियों को लोगों की शिकायतों का प्राथमिकता से निपटान करने के निर्देश दिये। विधायक धनकड ने कहा कि केंद्र और प्रदेश सरकार गरीबों के लिए काफी योजनाओं को चला रही है।

इनका लाभ पात्र लोगों तक पहुंचाया जाएगा। क्षेत्र के लोगों की हर परेशानी और समस्या का प्राथमिकता के आधार पर हल कराया जाएगा। इसके लिए विभिन्न विभाग के अधिकारियों को निर्देशित कर समस्याओं का निदान कराया जाएगा। उन्होंने कहा कि जन प्रतिनिधि के नाते लोगों की समस्याओं का समाधान करवाना उनका दायित्व है। उन्होंने अधिकारियों को यह भी कहा कि लोगों की समस्याओं के समाधान में कोई तकनीकी या अन्य समस्या आ रही है, उस बारे उन्हें अवगत करवाएं। जनसुनवाई के दौरान लोगों ने विधायक से बिजली, सडक, पानी, बरसाती पानी की निकासी व अन्य समस्याओं से संबंधित लिखित प्रार्थना पत्र देकर अपनी समस्या का निदान कराने का अनुरोध किया। वहीं अन्य क्षेत्रों से आये लोगों ने भी अपनी-अपनी शिकायत का निवारण करने के लिए विधायक से गुहार लगाई। विधायक ने सभी लोगों को आश्वस्त किया कि उनकी समस्याओं का जल्द से जल्द समाधान किया जायेगा।

इस दौरान बजट मे विराटनगर विधानसभा क्षेत्र के लिए हुई घोषणाओ को लेकर जनप्रतिनिधियों, ग्रामीणों ने विधायक कुलदीप धनकड का माला व साफा पहनाकर स्वागत किया गया। इस दौरान बडी संया मे जनप्रतिनिधि व ग्रामीण मौजूद रहे।

'अंतिम छोर तक बैठा पार्टी का हर कार्यकर्ता ही भाजपा का ब्रह्मास्त्र है'

सांभरझील, (निसं)। यहां कटला बाजार स्थित उम्मेद टाउन हॉल (श्री सांभर पुस्तकालय) में भाजपा मंडल की कार्यसमिति की महत्वपूर्ण बैठक जिला पदाधिकारी शिवजीराम कुमावत के मुख्य आतिथ्य में हुई।

इस मौके पर शिवजी राम कुमावत ने कहा कि अंतिम छोर तक बैठा पार्टी का हर कार्यकर्ता ही भाजपा का ब्रह्मास्त्र है। कार्यकर्ताओं की बदौलत ही पार्टी आज केंद्र में तीसरी दफा सरकार बनाने में सफल हुई है। हमें उम्मीद है आने वाले पंचायत समिति व नगर पालिका के चुनाव में कांग्रेस पूरी तरह से छूमंतर हो जाएगी। भाजपा मंडल अध्यक्ष जितेंद्र डांगरा व नेता प्रतिपक्ष अनिल कुमार गट्टानी की मौजूदगी में आयोजित बैठक में कार्यकर्ता उत्साहित नजर आए। पार्टी पदाधिकारीयों का कहना है कि किसी के मन में कोई गलगच नहीं रहनी चाहिए,भाजपा का प्लेटफार्म सभी कार्यकर्ताओं के विचार और सुझाव जानने के लिए एक समान है। इससे पहले कांठोस के खिलाफ राजनैतिक प्रस्ताव नेता प्रतिपक्ष अनिल गट्टानी ने रखा जिसे सर्वसम्मति से पारित किया गया। बैठक में वाइस चेयरमैन नवल किशोर सोनी, वकील दिव्य राजवीर गुर्जर, राधेश्याम शर्मा, राजेश पारीक, उपेंद्र कुमार वर्मा, सुरेश जोबनेरिया प्रेमचंद सैनी, चन्द्रप्रकाश माली, रामावतार माली, किशन लाल कुमावत, हीरालाल तंवर, राजेश चंदेल, दीनदयाल सबलानियां, संतोष सांभरियां, शैलेश माथुर सहित अनेक कार्यकर्ताओं की मौजूदगी उपस्थित रही।

भाजपा मंडल की कार्यसमिति की महत्वपूर्ण बैठक जिला पदाधिकारी शिवजीराम कुमावत के मुख्य आतिथ्य में हुई।

हर कार्यकर्ता व पदाधिकारी कांग्रेस का मजबूत स्तंभ है : मिश्रा

अलवर। विधानसभा क्षेत्र राजगढ़-लक्ष्मणगढ़ के ब्लॉक लक्ष्मणगढ़ में कांग्रेसजनों का आभार, धन्यवाद एवं समीक्षा बैठक का रविवार को आयोजन किया गया।

कांग्रेस जिलाध्यक्ष योगेश मिश्रा ने बताया कि लक्ष्मणगढ ब्लॉक के धौली कोठी मौजपुर में आयोजित कार्यक्रम में जिला कांठोस कमेटी अलवर के जिलाध्यक्ष योगेश मिश्रा, अलवर लोकसभा क्षेत्र के प्रत्याशी एवं मुंडावर विधायक ललित यादव, राजगढ़ - लक्ष्मणगढ विधायक मांगेलाल मीणा, सहित वरिष्ठ कांठोसजन, कांठोस कार्यकर्ता एवं पदाधिकारी मौजूद रहे।

इस दौरान सभी अतिथियों का ब्लॉक कांग्रेस कमेटी की ओर से साफा व माला पहनाकर स्वागत किया गया। कांग्रेस जिलाध्यक्ष योगेश मिश्रा ने कहा कि राजगढ लक्ष्मणगढ विधानसभा क्षेत्र का प्रत्येक कार्यकर्ता व पदाधिकारी कांठोस का एक मजबूत स्तंभ है, उन्होंने लोकसभा चुनाव में 8 विधानसभा में से सबसे अधिक वोटों से कांठोस को यहाँ से जिताने के लिये कांग्रेसजनों को धन्यवाद दिया। अलवर लोकसभा प्रत्याशी व विधायक ललित यादव ने राजगढ-लक्ष्मणगढ से कांग्रेस को जीत दिलाने पर सभी का आभार व्यक्त किया।

स्थानीय विधायक मांगेलाल मीणा ने कहा कि जिस तरह से जनता जनार्दन ने कांग्रेस पर विश्वास व्यक्त किया है मैं उनकी हर समस्या के समुचित समाधान के लिये प्रयासरत रहूंगा। कार्यक्रम में प्रवक्ता रिपु दमन गुप्ता, ब्लॉक अध्यक्ष नवीन कुमार शर्मा, कठूमर यूथ कांठोस अध्यक्ष धर्मपाल नंगली, राजगढ़ लक्ष्मणगढ़ यूथ कांठोस अध्यक्ष गोपेश भारद्वाज, रामप्रकाश शर्मा, हारुन खान डायरेक्टर नूरुद्दीन खान, इकबाल खान, रघुवर सैनी, बसमीना, खुशाल खान,अयूब खान, नवल किशोर मीणा, शिव सहाय मीणा एडवोकेट राशिद खान, मामदीन खान दुलीचंद सीथल आदि मौजूद रहे।

22 साल की निशानेबाज के अथक समर्पण, कड़ी मेहनत और जुनून ने सचमुच रंग दिखाया। बिंद्रा ने मनु भाकर को निशानेबाजी में भारत की पहली महिला पदक विजेता बनने के लिए शुभकामनाएं दीं।
– अभिनव बिंद्रा

ओलिंपिक गोल्ड मेडलिस्ट, मनु का पदक जीतने पर बधाई दी।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी ▶ ऋषभ पंत

ऋषभ पंत ने श्रीलंका के खिलाफ 49 रन की पारी खेली और अब वो श्रीलंका में टी20 में बतौर विकेटकीपर भारत के लिए सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाज बन गए हैं। इससे पहले ये रिकॉर्ड दिनेश कार्तिक के नाम पर दर्ज था जिन्होंने साल 2018 में बतौर विकेटकीपर भारत के लिए नाबाद 39 रन की पारी खेली थी। अब 6 साल के बाद पंत ने 49 रन की पारी खेलकर दिनेश कार्तिक के रिकॉर्ड को तोड़ दिया।पंत ने पहली बार टी20 में 49 रन की पारी खेली और आउट हो गए। टी20 में 49 रन के स्कोर पर आउट होने वाले वो चौथे भारतीय बल्लेबाज बन गए।

क्या आप जानते हैं ?... वर्तमान में 80 से अधिक देश पोलो खेलते हैं। पोलो 1900 से 1936 तक ओलंपिक खेल था और इसे अब एक बार फिर अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक समिति ने मान्यता प्रदान की है।

देश का मान है मनु

पेरिस ओलिंपिक में खुला भारत का खाता | मनु ने 10 मीटर एयर पिस्टल में कांस्य जीता | शूटिंग में मेडल दिलाने वाली पहली महिला

पेरिस, 28 जुलाई। पेरिस ओलिंपिक्स में भारतीय शूटर मनु भाकर ने इतिहास रच दिया है। उन्होंने विमेंस 10 मीटर एयर पिस्टल इवेंट में ब्रॉन्ज मेडल जीता। ओलिंपिक के इतिहास में शूटिंग में मेडल दिलाने वाली मनु पहली भारतीय महिला हैं। उन्होंने फाइनल में 221.7 पॉइंट्स के साथ कांस्य जीता।

2021 के टोक्यो ओलिंपिक में मनु की पिस्टल खराब हो गई थी। 20 मिनट तक वे निशाना नहीं लगा पाईं। पिस्टल ठीक हुई, तब भी मनु सिर्फ 14 शॉट लगा पाईं और फाइनल की रेस से बाहर हो गईं थीं। मनु निराश थीं लेकिन उन्होंने वापसी की और पेरिस ओलिंपिक्स में भारत को मेडल दिलाया। इस इवेंट में कोरिया की ओह ये जिन ने गोल्ड जीता। उन्होंने 243.2 पॉइंट स्कोर करके ओलिंपिक रिकॉर्ड बनाया। कोरिया की ही किम येजी ने सिल्वर मेडल जीता। उन्होंने 241.3 पॉइंट बनाए।

मनु भाकर ने भारत को ओलिंपिक में 12 साल बाद शूटिंग का मेडल दिलाया है। भारत को इस खेल में आखिरी ओलिंपिक मेडल 2012 में मिला था। यह शूटिंग में भारत का अब तक का 5वां मेडल है। राज्यवर्धन सिंह राठौड़ ने 2004 में सिल्वर, अभिनव बिंद्रा ने 2008 में गोल्ड और 2012 में विजय कुमार ने सिल्वर और गगन नारंग ने ब्रॉन्ज जीता था। भारतीय महिला निशानेबाज मनु भाकर

जीत के बाद मनु ने कहा-

मैं गीता बहुत पढ़ती हूं। इससे फोकस करने में मदद मिलती है। आज के मैच में मैंने आखिर तक टारगेट पर फोकस किया। मैं खुश हूं। भारत इससे ज्यादा डिजर्व करता है। उम्मीद है कि बाकी इवेंट में भारत और मेडल जीतेगा।

को दूसरे स्थान पर रहना पसंद ही नहीं है, तीसरे स्थान की तो बात ही छोड़ दीजिये। लेकिन उन्होंने यहां कहा कि रविवार का दिन अपवाद था क्योंकि पेरिस में ऐतिहासिक कांस्य पदक जीतकर वह तोक्यो ओलंपिक में अपनी निराशा को पीछे छोड़कर राहत महसूस कर रही हैं।

भाकर (22 वर्ष) यहां 10 मीटर एयर पिस्टल स्पर्धा में कांस्य पदक जीतकर ओलंपिक पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला निशानेबाज बन गईं। आत्मविश्वास से भरी भाकर ने कांस्य पदक जीतने के बाद 'जियो सिनेमा' से कहा, ''तोक्यो के बाद मैं बहुत निराश थी। मुझे इससे उबरने में बहुत समय लगा।'' उन्होंने कहा, ''बहुत खुश हूं कि मैं कांस्य पदक जीत सकी और हो सकता है कि अगली बार इसका रंग बेहतर हो।''

अंकिता, भजन और दीपिका की टीम तीरंदाजी क्वार्टरफाइनल में हारी

पेरिस, 28 जुलाई। भारतीय महिला तीरंदाज अंकिता भकत, भजन कौर और दीपिका कुमारी की टीम को रविवार को पेरिस ओलंपिक तीरंदाजी के महिला रिकर्व टीम स्पर्धा में नीदरलैंड से 0-6 से हार का सामना करना पड़ा। आज यहां खेले गये मुकाबले में भारतीय टीम की शुरुआत अच्छी नहीं रही। पहले राउंड में अंकिता और दीपिका केवल सात अंक ही हासिल कर पाईं। हालांकि भजन कौर ने 10 अंक हासिल करते हुए टीम की उम्मीदों के जिंदा रखा। दूसरी तरफ से नीदरलैंड की टीम ने नौ और और अंक बटोरे और 52-51 से जीत कर दो अंक अर्जित कर लिए। भारत ने इस राउंड में कुल (7, 10, 7, 9, 9, 9) तो वहीं नीदरलैंड ने (9, 8, 9, 9, 9, 8) अंक जुटाए। दूसरे राउंड में अंकिता ने परफेक्ट शॉट (एक्स) लगाया और भजन कौर ने 10 अंक हासिल करते हुए टीम को शानदार शुरुआत दिलाई, हांलाकि, दीपिका का निशाना आठ पर जा कर लगा, जहां भारत ने अपना मोमेंटम खो दिया और उन्हें इस राउंड में 49-54 से हार मिली। भारत ने दूसरे राउंड में (एक्स, 10, 8, 6, 9, 6) अंक बटोरे तो वहीं नीदरलैंड ने (9, 9, 8, 9, 10, 9) अंक के जीत दर्ज की।

अश्विनी पोनप्पा और तनिषा क्रैस्टो पहले मैच में हारी

पेरिस, 28 जुलाई। अश्विनी पोनप्पा और तनिषा क्रैस्टो की भारतीय जोड़ी को ओलंपिक खेलों की बैडमिंटन प्रतियोगिता के महिला युगल के ग्रुप सी के मुकाबले में दक्षिण कोरिया की किम सो यियोंग और कोंग ही योंग से सीधे गेम में हार का सामना करना पड़ा। पिछले साल अच्छा प्रदर्शन करके ओलंपिक के लिए क्वालीफाई करने वाली भारतीय जोड़ी शनिवार को 44 मिनट तक चले मैच में 18-21 10-21 से हार गई। पोनप्पा और क्रैस्टो ने अच्छी शुरुआत की थी। उन्होंने पहले गेम में कोरिया की जोड़ी को कड़ी चुनौती दी लेकिन इसके बाद वह अपनी लय बरकरार नहीं रख पाई। भारतीय जोड़ी का अगला मुकाबला सोमवार को जापान की चौथी वरीयता प्राप्त चिहारू शिदा और नामी मात्सुयामा से होगा।

ओलंपिक में पुरुष एकल टेनिस स्पर्धा में नागल को मिली हार

पेरिस, 28 जुलाई। भारत के सुमित नागल रविवार को पेरिस ओलंपिक में पुरुष एकल टेनिस स्पर्धा में पहले दौर में फ्रांस के कोरेंटिन मौटेट से हारकर बाहर हो गये है। टेनिस पुरुष एकल राउंड में रविवार को खेले गए मुकाबले में भारतीय खिलाड़ी सुमित नागल को फ्रांस के कोरेंटिन मौटेट ने 2-6, 6-2, 5-7 से हराया। यह मैच दो घंटे 28 मिनट तक चला। पहले सेट सुमित ने शानदार प्रदर्शन करते हुए 6-2 से जीत दर्ज की, लेकिन बाद के दोनों सेटों में कोरेंटिन से उन्हें हार का सामना करना पड़ा।

नटराज और देसिंघु की हार, भारत को ओलिंपिक में तैराकी अभियान समाप्त

पेरिस, 28 जुलाई। श्रीहरि नटराज और धीनिधि देसिंघु की हार के साथ ही पेरिस ओलिंपिक 2024 में भारत का तैराकी अभियान रविवार को समाप्त हो गया। श्रीहरि नटराज ने पुरुषों की 100 बैकस्ट्रोक और धीनिधि देसिंघु ने महिलाओं की 200 मीटर फ्रीस्टाइल तैराकी स्पर्धाओं में भाग लिया था।

श्रीहरि नटराज ने पेरिस ला डिफेंस एरिना में प्रतिस्पर्धा करते हुए ने 55.01 का समय लेकर हीट 2 में दूसरा और 46 तैराकों के बीच अपना सर्वश्रेष्ठ समय 53.77 के साथ 33वां स्थान हासिल किया। नियमानुसार प्रतियोगिता में शीर्ष 16 तैराकों ने अगले दौर में प्रवेश किया।

हंगरी के तैराक ह्यूबर्ट कोस, 2023 में 200 मीटर बैकस्ट्रोक विश्व चैंपियन ने पुरुषों की 100 बैकस्ट्रोक हीट में शीर्ष पर पहुंचने के लिए 52.78 का राष्ट्रीय रिकॉर्ड बनाया जबकि 53.93 के साथ ब्रिटेन के जॉनी मार्शल 16वें स्थान पर रहे और सेमीफाइनल के लिए जगह बनाने वाले अंतिम तैराक थे। श्रीहरि नटराज ने दूसरी बार ओलंपिक खेलों में भाग लिया है। इससे पहले नटराज टोक्यो 2020 के ग्रीष्मकालीन खेलों में पर्दापण करते हुए 27वें स्थान पर रहे। पेरिस 2024 में भारतीय दल की सबसे कम उम्र की सदस्य 14 वर्षीय धीनिधि देसिंघु ने 2:06.96 का समय लेकर शीर्ष हीट एक में प्रवेश किया। बेंगलुरु की तैराक के पास इस प्रतियोगिता में 2:04.24 का राष्ट्रीय तैराकी रिकॉर्ड दर्ज है।

हालांकि, धीनिधि चार हीट में 30 तैराकों के बीच 23वें स्थान पर रहीं। देसिंघु ने पहली बार ओलंपिक खेलों में भाग लिया है। ऑस्ट्रेलिया की मोली ओकैलाघन 1:55.79 समय के साथ 30-महिला तैराकों में शीर्ष पर रहीं और रोमानिया की रेबेका-एमी डायकोनेस्कु 1:59.29 समय के साथ सेमीफाइनल कट-ऑफ में जगह बनाने वाली आखिरी महिला थीं।

आज भारत 4 खेलों में भाग लेगा

पेरिस, 28 जुलाई। 29 जुलाई सोमवार को पेरिस ओलिंपिक में भारत चार खेलों में भाग लेगा। **तीरंदाजी** : पुरुष टीम क्वार्टर फाइनल: तरुणदीप राय, धीरज बोम्मादेवरा, प्रवीण जाधव – शाम 6:30 बजे। **बैडमिंटन** : पुरुष युगल (ग्रुप चरण): सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी और चिराग शेट्टी बनाम मार्क लैम्सफस और मार्विन सीडेल (जर्मनी) – दोपहर 12 बजे। **महिला युगल (ग्रुप चरण)**: अश्विनी पोनप्पा और तनीषा क्रास्टो बनाम नामी मात्सुयामा और चिहारू शिदा (जापान) – दोपहर 12:50 बजे। **पुरुष एकल (ग्रुप चरण)**: लक्ष्य सेन बनाम जूलियन कैरेगी (बेल्जियम) – शाम 5:30 बजे। **निशानेबाजी** : 10 मीटर एयर पिस्टल मिश्रित टीम क्वालीफिकेशन: मनु भाकर और सरबजोत सिंह, रिदम सांगवान और अर्जुन सिंह चीमा – दोपहर 12:45 बजे। पुरुष ट्रैप क्वालीफिकेशन: पृथ्वीराज तोंडईमान– दोपहर 1:00 बजे।

श्रीलंका ने भारत को हराकर जीता महिला एशिया कप का खिताब

श्रीलंकाई महिला टीम ने भारत से छीना चैम्पियन का ताज, पहली बार बनी एशिया की चैम्पियन

दांबुला, 28 जुलाई। हर्षिता समाराविक्रमा नाबाद (69) और चमारी अट्टापटू (61) रनों की अर्धशतकीय पारियों की बदौलत श्रीलंका ने रविवार को महिला एशिया कप के फाइनल मुकाबले में भारत को आठ विकेट से हराकर खिताब जीत लिया।

166 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी श्रीलंका की शुरुआत अच्छी नहीं है। दूसरे ओवर में विश्मी गुणारत्ने (1) को रनआउट हुई। इसके बाद हर्षिता समाराविक्रमा और कप्तान चमारी अट्टापटू ने पारी को संभालते हुए तेजी से साथ रन बटोरे। 12वें ओवर में दीप्ति शर्मा ने अट्टापटू को आउट कर भारत को दूसरी सफलता दिलाई। अट्टापटू ने 43 गेंदों में (61) रन बनाये। हर्षिता समाराविक्रमा ने 51 गेंदों में छह चौके और दो छक्के लगाते हुए नाबाद (69) रनों की पारी खेली।

कविशा दिलहारी 16 गेंदों में (30) रन बनाकर नाबाद रही। श्रीलंका ने 18.4 ओवर में दो विकेट पार 167 रन बनाकर खिताबी मुकाबला आठ विकेट से जीत लिया। इससे पहले आज यहां भारतीय कप्तान हरमनप्रीत कौर ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया। बल्लेबाजी करने उतरी शेफाली वर्मा और स्मृति मंधाना की सलामी जोड़ी ने अच्छी शुरुआत करते हुए पहले विकेट के लिये 44 रन जोड़े। सातवें ओवर में कविशा दिलहारी ने शेफाली वर्मा (16) को आउटकर श्रीलंका को पहली सफलता दिलाई। इसके बाद नौवें ओवर में उमा छेत्री (9) रन बनाकर पवेलियन लौट गई। कप्तान हरमनप्रीत कौर (11) और जेमिमाह रॉड्रिग्स (29) रन बनाकर आउट हुई।

स्मृति मंधाना ने 47 गेंदों में 10 चौके लगाते हुये (60) रनों की पारी खेली। ऋचा घोष ने 14 गेदों में चार चौके और एक छक्का लगाते हुये (30) रन बनाये। पूजा वस्त्रकर (5) और राधा यादव (1) रन बनाकर नाबाद रही। भारत ने निर्धारित 20 ओवरों में छह विकेट पर 165 का स्कोर खड़ा किया।

कराते व कोबुडो बेल्ट ग्रेडिंग सम्पन्न प्रतियोगिता में विभिन्न स्कूलों के 620 छात्र-छात्राओं ने भाग लिया

जयपुर, 28 जुलाई। मुरलीपुरा में स्थित इंडियन मार्शल आर्ट्स एकेडमी की कराते व कोबुडो बेल्ट ग्रेडिंग जमना विद्यापीठ सीनियर सैकण्डरी स्कूल न्यू लोहा मण्डी रोड़ जयपुर में आयोजित की गई। जिसमें विभिन्न स्कूलों के 620 छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। इस अवसर पर सेन्ट जेवियर स्कूल, एसएमएस स्कूल, भवानी निकेतन स्कूल, ए.वी.वी.एम.स्कूल, एस.एन. कन्वेट स्कूल, लोटस स्कूल, जी.आर. ग्लोबल एकेडमी, महाराजा सवाई मान सिंह स्कूल, हंसराज एकेडमी स्कूल, श्रीकृष्णा पब्लिक स्कूल, यूरो किड्स स्कूल के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया।

कोबुडो बेल्ट ग्रेडिंग उत्तर भारत के प्रमुख प्रशिक्षक गोजू रयू केनशिकाय शिहान महेंद्र गहलोत ब्लेक बेल्ट 6 डान के सानिध्य में सम्पन्न हुई। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में जमना विद्यापीठ स्कूल के चेयरमैन मीर सिंह व डायरेक्टर विक्रम सिंह गजराज ,राधेश्याम जाट व पं.वेदप्रकाश वशिष्ठ (स्वर गायक), सौरभ शर्मा (एस.एस.ब्राइट डांस एकेडमी) मुख्य अतिथि रहे।

यलो बेल्ट वर्ग में गर्विता शर्मा, रविकांत वर्मा निहारिका मोदी, सिद्धिका माहेश्वरी, ओरेंज बेल्ट मे जियांस कटारिया,राजवीर लुहार, कार्तिक यादव,ग्रीन बेल्ट मे डेविड मुंडोतिया, कृतिका जोशी, वरुण वर्मा, ब्लू बेल्ट मे तनुश्री सेनी,इशिका कुलदीप, परपल बेल्ट मे अशु सैनी, खुशबू राठोंड ,दिव्यांशी चौधरी, हितार्थ जोशी, ब्राउन 4 मे रजनी सेनी अव्वल रहे।

पीवी सिंधु ने पेरिस ओलिंपिक में अपना पहला मुकाबला 29 मिनट में जीता

पेरिस, 28 जुलाई। भारतीय बैडमिंटन स्टार और दो बार की ओलंपिक पदक विजेता पीवी सिंधु ने रविवार को शानदार प्रदर्शन करते हुए मालदीव की फतिमाथ अब्दुल रज्जाक पर मात्र 29 मिनट में जीत दर्ज कर अपने अभियान की शुरुआत की। सिंधु ने आज यहां ग्रुप एम के मुकाबले में फतिमाथ अब्दुल रज्जाक को 21-9, 21-6 से हराया। सिंधु ने पहले गेम में दबदबा बनाते हुए शुरुआती बढ़त हासिल की और पूरे समय मैच पर नियंत्रण बनाए रखा। फ़तिमाथ को सिंधु की गति और सटीकता का सामना करने में संघर्ष करना पड़ा। सिंधु ने पहला सेट 21-9 से आसानी से जीत लिया। इसके बाद दूसरे गेम में भी सिंधु ने शानदार खेल मुजाहिरा करते हुए मध्य-खेल अंतराल पर 11-3 की बढ़त हासिल की और दूसरा सेट 21-6 से जीतकर मुकाबला भी जीत लिया। सिंधु बुधवार को अपने दूसरे ग्रुप मैच में एस्टोनिया की क्रिस्टिन कुबा से भिड़ेंगी।

रमिता जिंदल ने 10 मीटर एयर राइफल में फाइनल में जगह बनाई

पेरिस, 28 जुलाई। भारत की रमिता जिंदल ने शानदार प्रदर्शन करते हुए रविवार को पेरिस ओलंपिक खेलों में महिलाओं की 10 मीटर एयर राइफल निशानेबाजी स्पर्धा में फाइनल में जगह बना ली हैं। रमिता 60 शॉट के क्वालीफाइंग राउंड में 631.5 का स्कोर के साथ पांचवें स्थान पर रहते हुए फाइनल में अपनी जगह पक्की की। रमिता ने पहली सीरीज में 104.3, दूसरी में 106.0, तीसरी में 104.9, चौथी में 105.3, पांचवीं में भी 105.3 और छठी सीरीज में 105.7 अंक हासिल किए। रमिता की हमवतन इलावेनिल वलारिवन ने कड़ी टक्कर दी लेकिन वह बहुत कम अंतर से पीछे रह गईं। 630.7 के स्कोर के साथ वलारिवन की उम्मीदें अंतिम सीरीज में धराशायी हो गईं। वह दसवें स्थान पर रहीं और शीर्ष आठ से बाहर हो गईं। फाइनल मुकाबला सोमवार 29 जुलाई को खेला जायेगा। उल्लेखनीय है कि रमिता ने हांग्जो में 2022 एशियाई खेलों में दो पदक जीते थे।

रोइंग में बलराज पुरुष एकल स्कल्स के क्वार्टरफाइनल में

पेरिस, 28 जुलाई। भारतीय रोवर बलराज पंवार इतिहास रचते हुए पेरिस ओलंपिक 2024 रोइंग स्पर्धा के पुरुष एकल स्कल्स रेपेचेज राउंड में बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए रविवार को प्रतियोगिता के क्वार्टरफाइनल में पहुंच गये है। आज यहां वैरेस-सुर-मार्ने नॉटिकल स्टेडियम में हुये मुकाबले में बलराज ने 7:12.41 समय के साथ 2000 मीटर की दूरी तय की और इस राउंड में दूसरे स्थान पर रहे। भारतीय रोवर ने 1000 मीटर की दूरी तय करने के लिए 3:33.94 का समय लिया। वह इसमें भी दूसरे स्थान पर रहे। इससे पहले उन्होंने 1:44.13 समय में 500 मीटर की दूरी तय की। 25 वर्षीय सेना के जवान बलराज ने मोनाको के क्वेंटिन एंटोगनेली के बाद 7:12.41 का समय लेकर रेपेचेज 2 में दूसरा स्थान हासिल किया। तीन रेपेचेज राउंड के प्रत्येक दो शीर्ष रोवर क्वार्टरफाइनल के लिए क्वालीफाई करते हैं। प्रत्येक रेस में कुल पांच रोवर ने हिस्सा लिया। पुरुष एकल स्कल्स स्पर्धा के क्वार्टर फाइनल मुकाबला मंगलवार 30 जुलाई को खेला जायेगा।

मुक्केबाजी में निखत जरीन ने प्री-क्वार्टरफाइनल में प्रवेश किया

पेरिस, 28 जुलाई। भारतीय महिला मुक्केबाज निखत जरीन ने रविवार को पेरिस ओलंपिक खेलों में जर्मनी की मैक्सी करीना क्लोएट्ज़र पर 5-0 की जीत दर्ज करते हुए महिलाओं के 50 किग्रा स्पर्धा के प्री-क्वार्टर फाइनल में प्रवेश कर लिया। राउंड ऑफ 32 में मुकाबले की शुरूआत में जर्मनी की मुक्केबाज निखत पर हमलावर रही। हालांकि इस दौरान भारतीय मुक्केबाज ने भी कुछ जोरदार पंच लगाए लेकिन पहले राउंड के बाद जजों का फैसला 3:2 से क्लोएट्ज़र के पक्ष में रहा। निखत ने दूसरे राउंड के शुरुआती सेकेंड से ही हमलावर रुख अख्तियार किया। नियमों को न मानने के लिए दोनों मुक्केबाजों के एक-एक अंक काटे गए, लेकिन निखत ने मैच को अपने पक्ष में कर लिया और दूसरे राउंड में सर्वसम्मत जीत हासिल कर की। दो बार की विश्व चैंपियन तीसरे राउंड में भी हावी रही शुरुआती दो मिनट के बाद वापसी करते हुए निखत ने जीत दर्ज की। निखत का मुकाबला अब एक अगस्त को प्री क्वार्टर फाइनल में चीन की शीर्ष वरीयता प्राप्त वू यू से होगा। उल्लेखनीय है कि वू यू 52 किग्रा में मौजूदा विश्व चैंपियन हैं और एशियाई खेल 2023 में स्वर्ण पदक जीता था।

मनिका और श्रीजा महिला टेबल टेनिस के दूसरे दौर में

पेरिस, 28 जुलाई। भारत की टेबल टेनिस स्टार मनिका बत्रा और श्रीजा अकुला ने रविवार को पेरिस ओलंपिक में महिला टेबल टेनिस स्पर्धा में शानदार खेल का मुजाहिरा करते हुए प्रतिद्वंद्वी खिलाड़ियों को मात देकर अगले दौर में जगह बना ली है। भारतीय टेबल टेनिस स्टार मनिका बत्रा ने महिला एकल वर्ग के मुकाबले में ब्रिटेन की अन्ना हर्सी को 4-1 से हराकर दूसरे दौर में जगह बनाई। आज यहां मनिका ने मुकाबले में पिछड़ने के बाद शानदार वापसी करते हुए 11-8, 12-10, 11-9, 9-11, 11-5 से मुकाबला जीत लिया। इसकी के साथ वही महिला एकल वर्ग में राउंड ऑफ 32 में पहुंच गई है। वह राउंड ऑफ 32 में पहुंचने वाली दूसरी भारतीय महिला बन गई हैं। राउंड ऑफ 32 में मनिका बत्रा का मुकाबला भारतीय मूल की फ्रांसीसी खिलाड़ी पृथिका पावड़े से होगा। इससे पहले भारत की उभरती टेबल टेनिस स्टार श्रीजा अकुला ने पेरिस ओलंपिक में राउंड ऑफ 64 के मुकाबले में स्वीडन की खिलाड़ी क्रिस्टीना कल्बर्ग पर जीत दर्ज करते हुए अगले दौर में प्रवेश किया। श्रीजा ने आक्रामक शुरुआत करते हुए बढ़त बनाई। इसके बाद पहला गेम 11-4 से, दूसरे गेम में 9-11 से, तीसरा गेम 11-7 से जीता और आखिरी गेम को 11-7 से जीतकर दर्ज वह अगले दौर में पहुंच गई।

बारिश भी नहीं रोक पाई भारत के जीत का क्रम

वर्षा से बाधित दूसरा टी-20 भारत ने 7 विकेट से जीता

यशस्वी, सूर्या और हार्दिक ने खेली विस्फोटक पारियां, बिश्नोई को 3 विकेट

पल्लेकेल, 28 जुलाई। भारत ने श्रीलंका को दूसरे टी-20 में मेथड के तहत 7 विकेट से हरा दिया है। इसी के साथ भारत ने 3 टी-20 की सीरीज में 2-0 की अजेय बढ़ त बना ली। तीसरा टी-20 मंगलवार को खेला जाएगा। पल्लेकेले में भारत ने टॉस जीतकर बैटिंग चुनी। श्रीलंका ने 9 विकेट के नुकसान पर 161 रन बनाए। कुसल परेरा ने फिफ्टी लगाई। रवि बिश्नोई ने 3 विकेट लिए। हार्दिक पंड्या, अर्शदीप सिंह और अक्षर पटेल को 2-2 सफलताएं मिलीं।

भारत की बैटिंग के दौरान बारिश आ गई, इस कारण टीम को 8 ओवर में 78 रन का रिवाइज्ड टारगेट मिला। 6.3 ओवर में 3 विकेट के नुकसान पर टारगेट हासिल कर लिया। सूर्यकुमार यादव ने 12 बॉल पर 26, हार्दिक पंड्या ने 9 बॉल पर 22 और यशस्वी जायसवाल ने 15 बॉल पर 30 रन बनाए। श्रीलंका ने कुशल परेरा के शानदार अद्धर्शतक (53) और पतुम निसंका के (32) रनों की बदौलत रविवार को दूसरे टी-20 मैच में भारत को जीत के लिए 162 रनों का लक्ष्य दिया।

आज यहां भारत ने टॉस जीतकर श्रीलंका को पहले बल्लेबाजी करने का न्यौता दिया। बल्लेबाजी करने उतरी श्रीलंका की शुरुआत अच्छी नहीं रही और उसका पहला विकेट 26 रन पर ही गिर गया। इसके बाद पतुम निसंका एवं कुसल परेरा ने दूसरे विकेट के लिए 80 रन जोड़े। दसवें ओवर में हार्दिक ने परेरा को रिंकू के हाथों कैच आउट कराकर श्रीलंका को चौथा झटका दिया।

परेरा ने 34 गेंदों में छह चौके और दो छक्के लगाते हुए (53) रनों की पारी खेली। 130 स्कोर पर पर कामिंडु मेंडिस को हार्दिक ने रिंकू के हाथों कैच आउट कराया। इसके बाद नियमित अतंराल पर श्रीलंका के विकेट गिरते रहे और श्रीलंका निर्धारित 20 ओवरों में नौ विकेट पर 161 का स्कोर खड़ा कर सका। भारत की ओर से रवि विश्नोई ने तीन विकेट झटके वहीं अर्शदीप सिंह , अक्षर पटेल , हार्दिक पांडया ने दो दो बल्लेबाजों को आउट किया।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा को मिली जान से मारने की धमकी

दौसा जिले की श्यालावास जेल में बंद कैदी ने जयपुर पुलिस कंट्रोल रूम में फोन कर धमकी दी

- मामले में जेल अधीक्षक, जेलर और मुख्य प्रहरी सस्पेंड हुये।
- पुलिस की जांच के दौरान जेल में 12 से ज्यादा मोबाइल फोन और कुछ संदिग्ध वस्तुएं मिली हैं।
- जयपुर के विधायकपुरी थाने में मामला दर्ज हुआ।

जयपुर, 28 जुलाई। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा को शनिवार देर रात करीब दो बजे दौसा जिले की श्यालावास जेल में बंद कैदी ने जयपुर पुलिस कंट्रोल रूम को फोन कर जान से मारने की धमकी दी है। मामले में जयपुर पुलिस ने विधायकपुरी थाने में मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। वहीं

आई.जी. जयपुर रेंज अनिल टांक ने बताया कि रात को एक फोन जयपुर पुलिस कंट्रोल रूम के पास आया था। फोन करने वाले ने पुलिसकर्मियों को कहा कि वह मुख्यमंत्री को मार देगा। धमकी की जानकारी मिलने पर साइबर टीम को लगाया गया। टीम ने कुछ घंटों में फोन नम्बर को ट्रेस कर लोकेशन निकाली। जो वह दौसा जिले के श्यालावास जेल की थी। इस पर रात को ही दौसा और जयपुर पुलिस की टीमों ने लोकेशन के आधार पर आरोपी की तलाश की। इस दौरान दौसा जिले की श्यालावास जेल में दार्जिलिंग निवासी एक आरोपी को डिटेन किया गया। युवक ने फोन पर धमकी देने की बात स्वीकार कर ली है। पुलिस जेल में ही कैदी से पूछताछ कर रही है। प्रारंभिक पूछताछ में कैदी ने बताया कि वह कोई दवाई खाता है। दवा खाने से उसे होश नहीं रहा। इसके बाद फोन कॉल किया। पुलिस उसके जवाबों से संतुष्ट नहीं होने पर पूछताछ करने में जुटी है।

पुलिस की जांच के दौरान जेल में 12 से ज्यादा मोबाइल फोन और कुछ संदिग्ध वस्तुएं मिली है। इन्हें पुलिस टीम ने जब्त कर लिया है। जेल अधिकारियों को इसकी जानकारी दे दी गई है। वहीं, आगे की कार्रवाई की जा रही है। उधर, जयपुर पुलिस कमिश्नरेट के एडिशनल पुलिस कमिश्नर कैलाश चंद्र बिश्नोई ने बताया कि मामले में शहर के विधायकपुरी थाने में मुकदमा दर्ज किया गया है। आरोपी पहचान दौसा की जिले के श्यालावास जेल में बंद एक कैदी के रूप में हुई है। उन्होंने बताया कि फिलहाल आरोपी न्यायिक अभिरक्षा में जेल में बंद है। कोर्ट से उसका प्रोडक्शन वारंट लेकर गिरफ्तार कर पूछताछ की जाएगी।

मुख्यमंत्री को धमकी देने के मामले में जेल प्रशासन ने कार्यवाहक जेल अधीक्षक कैलाश दरोगा, जेलर बिहारी लाल और मुख्य प्रहरी अवधेश कुमार को सस्पेंड कर दिया। इस संबंध में जेल अधीक्षक, जेलर के लिए डीजी जेल राजेश निर्वाण और मुख्य प्रहरी के लिए डीआईजी मोनिका अग्रवाल ने आदेश जारी कर दिए।

गौरतलब है कि करीब 6 महीने पहले भी मुख्यमंत्री को धमकी मिली थी। जयपुर की सेंट्रल जेल में 5 साल से बंद पॉक्सो एक्ट के बंदी ने ही कंट्रोल रूम में फोन कर मुख्यमंत्री को गोली मारने की धमकी दी थी। इसके बाद कॉल काटकर मोबाइल स्विच ऑफ कर लिया गया। पुलिस टीम ने तुरंत तकनीकी आधार पर जांच शुरू की और धमकी देने वाले आरोपी की पहचान कर ली थी। इस दौरान जेल में दो बंदियों से मोबाइल भी जब्त किए गए थे। मामले में जेल के हेड वार्डन अजय सिंह राठौड़ और वार्डन मनीष कुमार यादव को सस्पेंड किया गया था।

खादी का कारोबार डेढ़ लाख करोड़ रुपये पहुंचा : मोदी

नयी दिल्ली 28 जुलाई (वार्ता) प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने लोगों से खादी और हथकरघा उत्पादों को खरीदने की अपील करते हुए कहा है कि देशवासियों के सहयोग से खादी का कारोबार पहली बार डेढ़ लाख करोड़ रुपये के पार पहुंच गया है।

- प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि खादी की बिक्री सालाना आधार पर चार सौ पर्सेंट बढ़ रही है।

मोदी ने हरियाणा के रोहतक जिले में उन्नति स्व सहायता समूह की जुड़ी महिलाओं के हथकरघा उत्पादों की विशेष रूप से सराहना करते हुए लोगों से इन्हें खरीदने तथा इनको बढ़ावा देने को कहा है।

प्रधानमंत्री ने रविवार को अपने रेडियो कार्यक्रम मन की बात में कहा ,मुझे ये बताते हुए आनंद आ रहा है कि खादी ग्रामोद्योग का कारोबार पहली बार डेढ़ लाख करोड़ रुपए के पार पहुँच गया है। सोचिए, डेढ़ लाख करोड़ रुपए !! और जानते हैं खादी की बिक्री कितनी बढ़ी है ? 400 परसेंट।

उन्होंने कहा कि इससे देश में बड़ी संख्या में रोजगार के नए अवसर भी बन रहे हैं।

शहीदों ने देश को बचाया, अब आपको देश बनाना है: ओम बिड़ला

लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला ने वीडियो कान्फ्रेंसिंग के जरिये 15 हजार इंजीनियरिंग एवं मैडिकल छात्रों को संबोधित किया

- ओम बिड़ला ने कहा कि संस्कारों के बिना जीवन अधूरा है। शिक्षा के साथ संस्कार मिलते हैं तो जीवन में पूर्णता आती है। एलन में शिक्षा के साथ संस्कारों को प्राथमिकता दी जाती है। यही कारण है कि आज करगिल शहीदों को श्रद्धांजलि देने और उनके परिजनों का अभिनन्दन करने के लिए इतनी बड़ी संख्या में स्टूडेंट्स शामिल हुए हैं। शहीदों और सैनिकों के जीवन से अनुशासन और देश के लिए जीने की सीख लेनी चाहिए।

नयी दिल्ली 28 जुलाई (वार्ता)। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला ने कहा कि हम सुरक्षित हैं क्योंकि हमारे सैनिक हमारी रक्षा कर रहे हैं। करगिल में हजारों सैनिक शहीद हो गए। उन्होंने इस देश को बचाया। अब आपको यह देश बनाना है। आप इस देश का भविष्य हैं। कल के डॉक्टर और इंजीनियर हैं। सैनिकों की तरह देश के लिए जीने और इसे आगे ले जाने का संकल्प लें।

बिड़ला ने वीडियो संदेश के माध्यम से यह बात रविवार को नयी दिल्ली के इंदिरा गांधी एरिना में करगिल विजय की रजत जयंती के तहत आयोजित 'एलन शौर्य वंदन' कार्यक्रम में कही। इस समारोह में मेडिकल व इंजीनियरिंग परीक्षा की तैयारी करने वाले 15 हजार से अधिक स्टूडेंट्स शामिल हुए।

उन्होंने कहा कि संस्कारों के बिना जीवन अधूरा है। शिक्षा के साथ संस्कार मिलते हैं तो जीवन में पूर्णता आती है। एलन में शिक्षा के साथ संस्कारों को प्राथमिकता दी जाती है। यही कारण है कि आज करगिल शहीदों को श्रद्धांजलि देने और उनके परिजनों का अभिनन्दन करने के लिए इतनी बड़ी संख्या में स्टूडेंट्स शामिल हुए हैं। शहीदों और सैनिकों के जीवन से अनुशासन और देश के लिए जीने की सीख लेनी चाहिए।

इस कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि रहे रक्षा राज्यमंत्री संजय सेठ ने कहा कि विद्यार्थियों को देश के युद्धों का इतिहास जानना चाहिए, सेना के शौर्य के बारे में पढ़ना चाहिए तथा उनके बलिदान से सबक लेना चाहिए। सेना से अनुशासन, संकल्प, हौसला और बलिदान होने की हिम्मत सीखें। सैनिकों का जीवन एक सीख होती है, कैसे वे अपने परिवारों से हजारों किलोमीटर दूर रहकर देश की सेवा में समर्पित होते हैं।

कार्यक्रम में परमवीर चक्र विजेता सूबेदार मेजर ऑनरेरी कैप्टन योगेन्द्र सिंह यादव ने कहा कि एलन कॅरियर इंस्टीट्यूट की ओर से शहीदों के परिजनों का यह सम्मान देश का सम्मान है, जिस तरह एक योद्धा देश के लिए लड़ता है ठीक उसी तरह एक विद्यार्थी को भी देश को आगे ले जाने के लिए संकल्पित रहना चाहिए। पढ़ाई में भी टारगेट लेकर उसकी प्राप्ति के लिए पूरे प्रयास होने चाहिए।

एलन निदेशक डॉ.नवीन माहेश्वरी ने कहा कि हम शिक्षा के साथ संस्कार देने में विश्वास रखते हैं। करगिल विजय के 25 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर शौर्य वंदन श्रृंखला की शुरुआत की। अब तक दिल्ली सहित राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, चंडीगढ़, पंजाब, हरियाणा, जम्मू, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, ओडिशा, आसाम, पश्चिम बंगाल में शौर्य वंदन कार्यक्रम हो चुके हैं, जहां 280 करगिल शहीदों के परिजनों का सम्मान किया जा चुका है।

एलन कॅरियर इंस्टीट्यूट प्राइवेट लिमिटेड की ओर से दिल्ली में आयोजित शौर्य वंदन में करगिल युद्ध में दिल्ली और आस-पास 32 शहीदों के परिजनों का सम्मान किया गया।

इस दौरान शहीदों के परिजनों ने भी अपने अनुभव साझा किए। इस दौरान कई बार ऐसे क्षण भी आए जब हर किसी के आंख में आंसू आ गए। कार्यक्रम में शामिल विद्यार्थियों ने खड़े होकर शहीदों के सम्मान में तालियां बजाई और परिजनों को सेल्युट किया।

कार्यक्रम में परमवीर चक्र विजेता योगेन्द्र यादव, एलन निदेशक डॉ. गोविन्द माहेश्वरी, राजेश माहेश्वरी, डॉ. नवीन माहेश्वरी, डॉ. बृजेश माहेश्वरी एवं सीईओ नितिन कुकरेजा ने शहीदों के परिजनों का सम्मानित किया। जोनल हेड व वाइस प्रसीडेंट अमित मोहन अग्रवाल ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

कार्यक्रम में सोनीपत, रोहतक, नूह, भिवानी, मेरठ, नोएडा, आगरा, हाथरस, बुलंदशहर, मथुरा, गाजियाबाद शहीद अनुज नायर, अरविंदर सिंह, चमन सिंह, धर्मबीर सिंह, हसन मोहम्मद, हसन अली खान, जितेन्द्र सिंह, जितेन्द्र सिंह चौहान, मनोज तलवार, मोहन सिंह राजपूत, ओमप्रकाश, पदम सिंह, राज सिंह, राजेन्द्र सिंह गाजियाबाद, राजेन्द्र सिंह मेरठ, रामवीर सिंह, रविकरण सिंह, रिषिपाल सिंह, सतीश कुमार, सतपाल सिंह, सत्यवीर सिंह, श्यामबीर सिंह, सोरन सिंह, सुरेन्द्र सिंह, विजयंत थापर, यशवीर सिंह, योगेन्द्र सिंह यादव, जुबैर अहमद, सुरेन्दर, अहमद, बलवान सिंह और भीम सिंह के परिजनों का सम्मान किया गया।

वरिष्ठ भाजपा नेता ओमप्रकाश माथुर...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

जाता है। लोकसभा चुनावों में भी माथुर छत्तीसगढ़ के प्रभारी थे, लेकिन ज्यादा सक्रिय नहीं रहे। भाजपा ने छत्तीसगढ़ की 11 लोकसभा सीटों में से 10 पर जीत दर्ज की थी।

इसके साथ ही माथुर कई राज्यों के प्रभारी रहे हैं। मूल रूप से पाली जिले के फालना कस्बे के रहने वाले ओम प्रकाश माथुर का जन्म 17 अगस्त 1952 को हुआ था। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा पाली में हुई। उच्च शिक्षा के लिए वे जयपुर आ गए थे। राजस्थान विश्वविद्यालय से उन्होंने बीए की डिग्री ली। माथुर छात्र जीवन से ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़ गए थे। 1988 में भाजपा के सदस्य बनने के बाद वे पार्टी में विभिन्न पदों पर रहे। 7 जनवरी 2008 से 13 जुलाई 2009 तक वे राजस्थान भाजपा के प्रदेशाध्यक्ष रहे। वही पार्टी ने उन्हें गुजरात, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश और छत्तीसगढ़ राज्य का प्रभारी भी बनाया था। इसके अलावा माथुर केन्द्रीय संगठन में राष्ट्रीय सचिव, राष्ट्रीय महामंत्री और लंबे समय तक राष्ट्रीय उपाध्यक्ष के पद पर भी रहे। उन्हें पार्टी ने दो बार राज्यसभा भी भेजा। उनका अंतिम राज्यसभा का कार्यकाल 2016 से 2022 तक रहा। ओम प्रकाश माथुर को राज्यपाल बनाने के कई सियासी मायने भी हैं। बढ़ती उम्र के कारण अब पार्टी माथुर को ज्यादा सक्रिय जिम्मेदारी नहीं दे सकती थी। ऐसे में अपने ऐसे कार्यकर्ता जिसने पूरा जीवन संगठन को समर्पित कर दिया हो। उसकी सक्रिय राजनीति से यह एक सम्मानजनक विदाई है। वही पार्टी अब प्रदेश में सेकेंड लाइन लीडरशिप को प्रमोट करना चाहती है। दो दिन पहले ही भाजपा प्रदेशाध्यक्ष बनाए गए मदन राठौड़ और ओम माथुर पाली जिले से आते हैं। दोनों की अदावत किसी से छिपी नहीं है। 2008 में ओम माथुर भाजपा प्रदेशाध्यक्ष थे। तब मदन राठौड़ का टिकट कट गया था, जबकि उस समय राठौड़ सिटिंग एमएलए थे।

कटारिया की राज्यपाल के तौर पर यह उनकी दूसरी नियुक्ति है। प्राइवेट स्कूल में शिक्षक रहे कटारिया ने पहली बार 1977 में चुनाव लड़ा था। वह उदयपुर शहर सीट से विधायक चुने गए थे। इसके बाद उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा। बताया जाता है कि उन्होंने अपने जीवनकाल में कुल 11 चुनाव लड़े, जिसमें से 9 में उन्हें जीत मिली। साल 1998 में वह सादड़ी से सांसद के तौर पर चुनाव जीते। आखिरी चुनाव 2018 में जीतकर वह 15वीं राजस्थान विधानसभा में पहुंचे। असम का राज्यपाल नियुक्त होने से पहले वे विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष थे।

तमिलनाडू में भाजपा नेता ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

मौके पर पहुंचे और देखा कि सेल्वाकुमार दम तोड़ चुके हैं। पुलिस ने सेल्वाकुमार के शव को सरकारी अस्पताल में भेज दिया जहां उनका पोस्टमार्टम किया जाएगा। ग्रामीणों और भाजपा समर्थकों ने सेल्वाकुमार की हत्या के खिलाफ आज जोरदार विरोध प्रदर्शन किया। इन लोगों ने सड़क जाम कर दी और दोषियों को तुरंत गिरफ्तार किए जाने की मांग रखी। बताया जा रहा है कि उन्होंने बीजेपी लीडर का शव लेने से भी इनकार कर दिया। कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए मौके पर बड़ी संख्या में पुलिस कर्मियों को तैनात किया गया है। वहीं, राज्य भाजपा प्रमुख अन्नामलाई ने सेल्वाकुमार के परिवार के प्रति संवेदना जताई। उन्होंने पार्टी की ओर से समर्थन का पूरा आश्वासन भी दिया। बीजेपी लीडर ने तमिलनाडु को हत्याओं की राजधानी करार दिया। उन्होंने कहा, राज्य में असामाजिक तत्वों को सरकार या पुलिस का कोई डर ही नहीं रह गया है।

'न्यायाधीश ज्यादातर मुकदमों में जमानत न देकर ''सेफ'' खेलना पसंद करते हैं'

मुख्य न्यायाधीश डी.वाय. चंद्रचूड़ ने कहा कि अपराध के महत्वपूर्ण मुद्दों को संदिग्ध नजरिये से देखा जाता है, इसलिए ज्यादातर जज कॉमन सैंस काम में नहीं लेते

- मुख्य न्यायाधीश ने कहा कि देश के प्रारम्भिक न्यायालयों की गैर जिम्मेदारी की वजह से ज्यादातर जमानती मुकदमे उच्च न्यायालयों में पहुँच जाते हैं।

नई दिल्ली, 28 जुलाई। भारत के मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ ने रविवार को कहा कि जब अपराध के महत्वपूर्ण मुद्दों को संदेह की दृष्टि से देखा जाता है, तो ट्रायल जज जमानत न देकर सुरक्षित खेलना पसंद करते हैं। मुख्य न्यायाधीश ने प्रत्येक मामले की बारीकियों को देखने के लिए मजबूत सामान्य ज्ञान (कॉमेंस सेंस) की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने कहा,''जिन लोगों को ट्रायल कोर्ट में जमानत मिलनी चाहिए और उन्हें वहां नहीं मिल रही है, जिसके परिणामस्वरूप उन्हें हमेशा उच्च न्यायालयों का रुख करना पड़ता है। सीजेआई चंद्रचूड़ ने आगे कहा कि जिन लोगों को उच्च न्यायालयों से जमानत मिलनी चाहिए, उन्हें जरूरी नहीं कि वह मिल जाए, जिसके परिणामस्वरूप उन्हें सर्वोच्च न्यायालय जाना पड़ता है। यह देरी उन लोगों की समस्या को और बढ़ा देती है, जिन्हें मनमाने ढंग से गिरफ्तार किया जाता है। वे बर्कले सेंटर के तुलनात्मक समानता और भेदभाव विरोधी 11वें वार्षिक सम्मेलन के दौरान मुख्य भाषण के अंत में एक सवाल का जवाब दे रहे थे। सवाल मनमाने ढंग से की जाने वाली गिरफ्तारियों पर था। सवाल पूछने वाले ने कहा कि हम ऐसे समाज में रहते हैं जहां पहले काम किया जाता है और बाद में माफी मांगी जाती है। उन्होंने कहा कि यह बात विशेष रूप से राजनीतिक रूप से प्रेरित तरीके से काम करने वाले पब्लिक अथॉरिटी के लिए सच हो गई है, जो कार्यकर्ताओं, शिक्षाविदों, पत्रकारों और यहां तक कि विपक्षी दलों के मुख्यमंत्रियों सहित राजनेताओं को हिरासत में ले रहे हैं।

सीजेआई डीवाई चंद्रचूड़ ने कहा कि सर्वोच्च न्यायालय लगातार यह बताने की कोशिश कर रहा है कि इसका एक कारण यह भी है कि देश के भीतर संस्थाओं में अंतर्निहित अविश्वास है। मुझे लगता है कि यह महत्वपूर्ण है कि हम उन लोगों पर भरोसा करना सीखें जो कानूनी व्यवस्था में हो सकते हैं, जैसे कि बहुत नीचे, जो कि ट्रायल कोर्ट हैं। दुर्भाग्य से, आज समस्या यह है कि हम ट्रायल जजों द्वारा राहत दिए जाने को संदेह की दृष्टि से देखते हैं। इसका मतलब है कि ट्रायल जज गंभीर अपराधों के महत्वपूर्ण मुद्दों पर जमानत नहीं देते हुए तेजी से सुरक्षित खेल रहे हैं। सीजेआई के अनुसार, न्यायाधीशों को प्रत्येक मामले की बारीकियों को देखना चाहिए।

कश्मीर में गर्मी ....

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

होने के पीछे इस बार बारिश नहीं होना माना जा रहा है। इस पहाड़ी और प्राकृतिक रूप से सम्पन्न राज्य में इस बार सीजन में अभी तक बहुत ही कम बारिश हुई है।

मौसम विभाग के निदेशक मुख्तार अहमद ने 'यूनीवार्ता' को बताया कि 21 जुलाई 1988 को न्यूनतम तापमान 25.2 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया था। एक स्वतंत्र मौसम पूर्वानुमानकर्ता फैजान आरिफ ने कहा कि श्रीनगर में रात का तापमान आमतौर पर मई के मध्य में महसूस होने वाले दिन के तापमान के बराबर था। कश्मीर घाटी के अन्य स्थानों पर भी शनिवार देर रात के दौरान न्यूनतम तापमान सामान्य से तीन डिग्री सेल्सियस से आठ डिग्री सेल्सियस अधिक दर्ज किया गया। कश्मीर घाटी में गर्म और आर्द्र मौसम की स्थिति बने रहने के आसार हैं। प्रदेश के कुछ स्थानों पर आज दोपहर या रात के दौरान गरज के साथ बारिश होने का अनुमान है। उन्होंने कहा, उनतीस जुलाई को गर्म और उमस भरे मौसम के बीच कश्मीर घाटी के कुछ हिस्सों में बारिश के आसार 55 प्रतिशत हैं और इसके साथ ही तापमान एक डिग्री सेल्सियस से चार डिग्री सेल्सियस तक कम होने का अनुमान है।''

'70 प्रतिशत बाघ ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

'बाघ मित्र कार्यक्रम' का विशेष रूप से उल्लेख किया।

प्रधानमंत्री ने कहा, कल दुनिया भर में बाघ दिवस मनाया जाएगा। भारत में तो 'बाघ', हमारी संस्कृति का अभिन्न हिस्सा रहा है। हम सब बाघों से जुड़े किस्से-कहानियाँ सुनते हुए ही बड़े हुए हैं। जंगल के आसपास के गाँव में तो हर किसी को पता होता है कि बाघ के साथ तालमेल बिठाकर कैसे रहना है। हमारे देश में ऐसे कई गाँव है, जहां इंसान और बाघ के बीच कभी टकराव की स्थिति नहीं आती। प्रधानमंत्री ने कहा, मुझे खुशी है कि जन-भागीदारी बाघों के संरक्षण में बहुत काम आ रही है। ऐसे प्रयासों की वजह से ही भारत में बाघों की आबादी हर साल बढ़ रही है। आपको ये जानकर खुशी और गर्व का अनुभव होगा कि दुनियाभर में जितने बाघ हैं ,उनमें से 70 प्रतिशत बाघ हमारे देश में हैं और देश के अलग-अलग हिस्सों में कई बाघ अभयारण्य हैं। मोदी ने कहा कि भारत में जहाँ भी बाघ और मानव में टकराव की स्थिति आती है, वहाँ बाघों के संरक्षण के लिए अभूतपूर्व प्रयास हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि इस काम में जन भागीदारी प्रोत्साहित की जाती है और राजस्थान के रणथंभौर जिले में कुल्हाड़ी बंद पंचायत अभियान इसका एक नमूना है।प्रधानमंत्री ने कहा कि रणथंभौर का कुल्हाड़ी बंद पंचायत अभियान बहुत दिलचस्प है। स्थानीय समुदायों ने स्वयं इस बात की शपथ ली है कि जंगल में कुल्हाड़ी के साथ नहीं जाएंगे और पेड़ नहीं काटेंगे। इस एक फैसले से यहाँ के जंगल, एक बार फिर से हरे-भरे हो रहे हैं, और बाघों के लिए बेहतर वातावरण तैयार हो रहा है। मोदी ने महाराष्ट्र के तादोबा-अंघेरीबाघ अभयारण्य के आस पास के समुदायों, विशेषकर गोंड और माना जनजाति के लोगों द्वारा ईको-टूरिज्म (नैसर्गिक पर्यटन) के कार्य की ओर तेजी से प्रगति का उल्लेख भी किया।

हरिभाऊ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

चंडीगढ़ के प्रशासक की भी जिम्मेदारी है। सिक्किम के राज्यपाल लक्ष्मण प्रसाद आचार्य असम के राज्यपाल का कार्यभार संभालेंगे और उन्हें मणिपुर का अतिरिक्त प्रभार भी दिया गया है। इस बीच, श्रीमती मुर्मू ने पंजाब के राज्यपाल और केंद्र शासित प्रदेश चंडीगढ़ के प्रशासक की जिम्मेदारी संभाल रहे बनवारीलाल पुरोहित का इस्तीफा भी स्वीकार कर लिया। विज्ञिप्त के अनुसार उपरोक्त नियुक्तियां उनके संबंधित कार्यालयों का कार्यभार संभालने की तारीख से प्रभावी होंगी।

मु.मंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा, रणथंभौर के 'कुल्हाड़ी बंद पंचायत अभियान' का उल्लेख उत्साहवर्धक है

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के कार्यक्रम 'मन की बात' को मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने दिल्ली में भाजपा मुख्यालय में बैठकर सामूहिक रूप से सुना।

नई दिल्ली/जयपुर, 28 जुलाई (का.सं.)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को मन की बात कार्यक्रम के 112वें संस्करण को मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने दिल्ली स्थित भाजपा राष्ट्रीय कार्यालय में सुना। अपने सम्बोधन में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि इस समय पूरे देश में पेरिस ओलंपिक छाया हुआ है। ओलंपिक हमारे खिलाड़ियों को विश्व पटल पर तिरंगा लहराने का मौका देता है। इस दौरान प्रधानमंत्री ने प्रोजेक्ट परी (पब्लिक आर्ट ऑफ इंडिया) व हेंडलूम की बढ़ती लोकप्रियता के संबंध में चर्चा की। साथ ही, उन्होंने देशवासियों से भारत को ड्रग्स फ्री बनाने की दिशा में शुरू की गई 'मानस हैल्पलाइन' का उपयोग करने का आग्रह किया।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'मन की बात' कार्यक्रम में राजस्थान के रणथंभौर के 'कुल्हाड़ी बंद पंचायत अभियान' का विशेष उल्लेख किया है। इस अभिनव पहल के अंतर्गत स्थानीय समुदायों ने वन क्षेत्र में कुल्हाड़ी नहीं लेकर जाने और वृक्षों की कटाई रोकने का प्रण लिया है। प्रधानमंत्री द्वारा इस अभियान की सराहना प्रकृति-प्रेमियों को प्रोत्साहित करने वाली है।

इस अवसर पर भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं केन्द्रीय मंत्री जे.पी. नड्डा, केन्द्रीय रक्षामंत्री राजनाथ सिंह, केन्द्रीय गृहमंत्री अमित शाह, भाजपा के राष्ट्रीय संगठन महामंत्री बी.एल. संतोष सहित विभिन्न राज्यों के मुख्यमंत्री एवं उपमुख्यमंत्री उपस्थित रहे।

प्र.मंत्री मोदी ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

मैं कामना करती हूं कि वह भविष्य में उपलब्धियों की नई ऊंचाइयों को छूएं। पीएम मोदी ने एक्स पर लिखा, ऐतिहासिक पदक।

राष्ट्रदूत (एच.यू.एफ.) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, सुधर्मा, एम.आई.रोड़, जयपुर एवं सुधर्मा-II, लालकोठी शॉपिंग सेंटर, टोंक रोड़, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादकः- राजेश शर्मा । आर.एन.आई. नं. 3641/57, ई-मेल-rastrdut@gmail.com कोटा कार्यालयः-पलायथा हाउस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन:2386031, 2386032, फैक्स:0744-2386033 बीकानेर कार्यालयः-कुंम्भाना हाउस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन:2200660, फैक्सः 0151-2527371 उदयपुर कार्यालयः-आयड, मेन रोड आयड, उदयपुर। फोनः 2413092, 2418945, फैक्सः 0294-2410146 अजमेर कार्यालयः-घूघरा घाटी, जयपुर रोड,अजमेर। फोनः 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोनः 226422, 226423, फैक्सः 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोनः 230200, 230400, फैक्सः 07469-230600 चूरू कार्यालयः एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोनः 256906, 256907, फैक्स:01562-256908